श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिब जी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

❖ किरंतन ❖

राग श्री मारू

पेहेले आप पेहेचानो रे साधो, पेहेले आप पेहेचानो ।
बिना आप चीन्हें पारब्रह्म को, कौन कहे मैं जानो ।।१।।
पीछे ढूंढ़ो घर आपनों, कौन ठौर ठेहेरानो ।
जब लग घर पावत नहीं अपनों, सो भटकत फिरत भरमानो ।।२।।
पांच तत्व मिल मोहोल रच्यो है, सो अंत्रीख[1] क्यों अटकानो ।
याके आस पास अटकाव नहीं, तुम जाग के संसे भानो ।।३।।
नींद उड़ाए जब चीन्होंगे आपको, तब जानोगे मोहोल यों रचानो ।
तब आपै घर पाओगे अपनों, देखोगे अलख लखानो ।।४।।
बोले चाले पर कोई न पेहेचाने, परखत नहीं परखानों ।
महामत कहे माहें पार खोजोगे, तब जाए आप ओलखानो ।।५।।

।।प्रकरण।।१।।चौपाई ।।५।।

१. अधर में ।

राग श्री मारू

बिंद में सिंध समाया रे साधो, बिंद में सिंध समाया ।
त्रिगुन सरूप खोजत भए विस्मय, पर अलख न जाए लखाया ।।१।।

वेद अगम केहे उलटे पीछे, नेत नेत कर गाया ।
खबर न परी बिंद उपज्या कहां थें, ताथें नाम निगम धराया ।।२।।

असत मंडल में सब कोई भूल्या, पर अखंड किने न बताया ।
नींद का खेल खेलत सब नींद में, जाग के किने न देखाया ।।३।।

सुपन की सृष्ट वैराट सुपन का, झूठे साँच ढँपाया ।
असत आपे सो क्यों सत को पेखे, इन पर पेड़ न पाया ।।४।।

खोजी खोजे बाहेर भीतर, ओ अंतर बैठा आप ।
सत सुपने को पारथीं पेखे, पर सुपना न देखे साख्यात ।।५।।

भरम की बाजी रची विस्तारी, भरमसों भरम भरमाना ।
साध सोई तुम खोजो रे साधो, जिनका पार पयाना ।।६।।

मृगजलसों जो त्रिखा भाजे, तो गुर बिना जीव पार पावे ।
अनेक उपाय करे जो कोई, तो बिंद का बिंद में समावे ।।७।।

देत देखाई बाहेर भीतर, ना भीतर बाहेर भी नाहीं ।
गुर प्रसादें अंतर पेख्या, सो सोभा बरनी न जाई ।।८।।

सतगुर सोई मिले जब सांचा, तब सिंध बिंद परचावे ।
प्रगट प्रकास करे पार ब्रह्म सों, तब बिंद अनेक उड़ावे ।।९।।

महामत कहे बिंद बैठे ही उड़या, पाया सागर सुख सिंध ।
अछरातीत अखण्ड घर पाया, ए निध पूरब सनमंध ॥१०॥

।।प्रकरण।।२।।चौपाई।।१५।।

राग केदारो

साधो भाई चीन्हो सब्द कोई चीन्हो

ऐसो उत्तम आकार तोकों दीन्हों, जिन प्रगट प्रकास जो कीन्हों ।।१।।

मानखें देह अखण्ड फल पाइए, सो क्यों पाए के वृथा गमाइए ।
ए तो अधखिन को अवसर, सो गमावत मांझ नींदर ।।२।।

सब्दा कहे प्रगट प्रवान, सब्दा सतगुरसों करावे पेहेचान ।
सतगुर सोई जो अलख लखावे, अलख लखे बिन आग न जावे ।।३।।

सास्त्र ले चले सतगुर सोई, बानी सकल को एक अर्थ होई ।
सब स्यानों की एक मत पाई, पर अजान देखे रे जुदाई ।।४।।

सास्त्रों में सबे सुध पाइए, पर सतगुर बिना क्यों लखाइए ।
सब सास्त्र सब्द सीधा कहे, पर ज्यों मेर[1] तिनके आड़े रहे ।।५।।

सो तिनका मिटे सतगुर के संग, तब पारब्रह्म प्रकासे अखंड ।
सतगुरजी के चरन पसाए, सब्दों बड़ी मत समझाए ।।६।।

तब खोज सब्द को लीजे तत्व, तौल देखिए बड़ी केही मत ।
जासों पाइए प्रान को आधार, सो क्यों सोए गमावे रे गमार ।।७।।

यामें बड़ी मत को लीजे सार, सतगुर याहीं देखावें पार ।
इतहीं बैकुंठ इतहीं सुन्य, इतहीं प्रगट पूरन पारब्रह्म ।।८।।

ए बानी गरजत मांझ संसार, खोजी खोज मिटावे अंधार ।
मूढ़मती न जाने विचार, महामत कहें पुकार पुकार ।।९।।

।।प्रकरण।।३।।चौपाई।।२४।।

राग श्री गौड़ी

साधो हम देख्या बड़ा तमासा

विश्व देख भया मैं विस्मय, देख देख आवत मोहे हासा ।।१।।

मेरी मेरी करते दुनी जात है, बोझ ब्रह्मांड सिर लेवे ।
पाउ पलक का नहीं भरोसा, तो भी सिर सरजन को न देवे ।।२।।

सिर ले काम करे माया को, निसंक पछाड़े आप अंग ।
न करे भजन दोष देवें सांई को, कहे दया बिना न होवे साध संग ।।३।।

१. मेरू पर्वत ।

बांधत बंध आपको आपे, न समझे माया को मरम ।
अपनों कियो न देखे अंधे, पीछे रोवें दोष दे दे करम ।।४।।

समझे साध कहावें दुनी में, बाहेर देखावें आनंद ।
भीतर आग जले भरम की, कोई छूट न सके या फंद ।।५।।

परत नहीं पेहेचान पिंड की, सुध न अपनों घर ।
मुखथें कहे मोहे संसे मिट्या, मैं देखे साध केते या पर ।।६।।

साध सुने मैं देखे केते, अगम कर कर गावें ।
नेहेचे जाए करें निराकार, या ठौर चित ठेहेरावें ।।७।।

जो न कछू गाम नाम न ठाम, सो सत सांई निराकार ।
भरम के पिंड असत जो आपे, सो आप होत आकार ।।८।।

जिन मंडल ए मांडे मंडप, थोभ न थंभ न बंध ।
वाको नाहीं केहेत क्यों साधो, ए रच्यो किन कौन सनंध ।।९।।

जिन सायर[1] खनाए पहाड़ चुनाए, रवि ससि नखत्र फिराए ।
फिरत अहनिस रंग रूत फिरती, ऐसे अनेक वैराट बनाए ॥१०॥

जिन खिनमें तत्व पाँच समारे, नास करे खिन मांहीं ।
ए कहाँ से उपाय कहाँ ले समाए, ए विचारत क्यों नांहीं ॥११॥

सतगुर साधो वाको कहिए, जो अगम की देवे गम ।
हद बेहद सबे समझावे, भाने मनको भरम ॥१२॥

महामत कहे गुर सोई कीजे, जो अलख की देवे लख ।
इन उलटी से उलटाए के, पिया प्रेमें करे सनमुख ॥१३॥

।।प्रकरण।।४।।चौपाई।।३७।।

राग श्री केदारो

सुनो रे सतके बनजारे, एक बात कहूं समझाई ।
या फंद बाजी रची माया की, तामें सब कोई रह्या उरझाई ।।१।।

१. सागर, समुद्र ।

आंटी आन के फांसी लगाई, वे भी उलटीऐं दई उलटाई ।
बंध पर बंध दिए बिध बिध के, सो खोली किनहूं न जाई ।।२।।

चौदे भवन लग एही अंधेरी, झूठे को खेल झुठाई ।
प्रगट नास व्यास पुकारे, सुकदेव साख पुराई ।।३।।

लोक लाज मरजादा छोड़ी, तब ग्यान पदवी पाई ।
एक आग ज्यों छोटी बुझाई, त्यों दूजी मोटी लगाई ।।४।।

कोट सेवक करो नाम निकालो, इष्ट चलाओ बड़ाई ।
सेवा कराओ सतगुर केहेलाओ, पर अलख न देवे लखाई ।।५।।

अब छोड़ो रे मान गुमान ग्यान को, एही खाड़ बड़ी भाई ।
एक डारी त्यों दूजी भी डारो, जलाए देओ चतुराई ।।६।।

सास्त्र पुरान भेख पंथ खोजो, इन पैडों में पाइए नाहीं ।
सतगुर न्यारा रहत सकल थें, कोई एक कुली में कांही ।।७।।

सत चाहो सो सब्दा चीन्हो, सो आप न देवे देखाई ।
जिन पाया तिन मांहें समाया, राखत जोर छिपाई ।।८।।

सुध सबे पाइए सब्दों से, जो होवे मूल सगाई ।
खिन एक बिलम न कीजे तब तो, लीजे जीव जगाई ।।९।।

पर मनुआ दिए बिन हाथ न आवे, सत की बड़ी ठकुराई ।
और उपाय याको कोई नाहीं, जिन देवे आप बड़ाई ॥१०॥

महामत कहें सावचेत होइयो, मिल्या है अंकूरों आई ।
झूठी छूटे साँची पाइए, सतगुर लीजे रिझाई ॥११॥

।।प्रकरण।।५।।चौपाई।।४८।।

राग गौड़ी

भाई रे बेहद के बनजारे, तुम देखो रे मनुए का खेल ।
ए सब आग बिना दीया जले, याको रूई न बाती तेल ।।१।।

चारों तरफों चौदे लोकों, बैकुंठ लग पाताल ।
फूल पात फल नहीं या द्रखत को, काष्ट त्वचा मूल न डाल ।।२।।
देत देखाई तत्व पाँचों, मिल रचियो ब्रह्मांड ।
जिन से उपजे सो कछुए नाहीं, आप न पोते पिंड ।।३।।
नहीं पिंड पोते हाथ पांउ भी नाहीं, नाटक नाच देखावे ।
मुख न जुबाँ कछू नहीं याको, और बानी विविध पेरे गावे ।।४।।
आतम नारायन नाचत बुध ब्रह्मा, निस दिन फिरे नारद मन ।
वैराट नटवा नाचत विध विध सों, नचवत व्यास करम ।।५।।
ए मनुए की बाजी बाजी में मनुआ, जुदे जुदे खेल खेलावे ।
बरना बरन खेलत सब ऐसे, नए नए स्वांग बनावे ।।६।।
पारब्रह्म तो पूरन एक है, ए तो अनेक परमेस्वर कहावें ।
अनेक पंथ सब्द सब जुदे जुदे, और सब कोई सास्त्र बोलावे ।।७।।
रब्द करे औरन को निंदे, आपको आप बढ़ावे ।
ग्यान कथे गुन गाए आपके, होहोकार मचावे ।।८।।
दुबधा दिल में अवगुन ढूंढ़े, गुन चितसों न लगावें ।
भटकत फिरे भरम में भूले, अंग में आग धखावें ।।९।।
केते आप कहावें परमेश्वर, केते करत हैं पूजा ।
साध सेवक होए आगे बैठे, कहें या बिन कोई नहीं दूजा ॥१०॥
सास्त्र सब्द को अर्थ न सूझे, मत लिए चलत अहंकार ।
आप न चीन्हें घर न सूझे, यों खेलत मांझ अंधार ॥११॥
बाजी एक देखाऊं दूजी, जो खेलत हैं उजियारे ।
भेख बनाए के नाचत सनमुख, एक ठाट लिए चारे ॥१२॥
आतम विष्णु नाचत बुध सनतजी[1], गोकुल ग्रह्यो सिव मन ।
करम सुकदेव नाचत नचवत, गावत प्रगट वचन ॥१३॥

१. ब्रह्माजी के मानसिक पुत्र।

ए सब खेल करत है मनुआ, भाँत भाँत रिझावे ।
ब्रह्मवासना कोई पारथीं पेखे, सो भी दृष्ट मुरछावे ॥१४॥
इस मनुए को कोई न पेहेचाने, जो तुम सकल मिलो संसार ।
सब कोई देखे यामें मनुआ, या मनुआ में सब विस्तार ॥१५॥
बोहोत पुकार करूं किस खातिर, ए सब सुपन सरूप ।
बेहद बनज[1] का होएगा साथी, सो एक लवे होसी टूक टूक ॥१६॥
महामत ए सनमंधे पाइए, ऐसा अखण्ड सुख अपार ।
गुर प्रसादें नाटक पेख्या, पाया मन मन का प्रकार ॥१७॥

॥प्रकरण॥६॥चौपाई॥६५॥

राग मारू

हो मेरी वासना, तुम चलो अगम के पार ।

अगम पार अपार पार, तहां है तेरा करार ।
तूं देख निज दरबार अपनों, सुरत एही संभार ॥१॥
तूं कहा देखे इन खेल में, ए तो पड़्यो सब प्रतिबिंब ।
प्रपंच पांचो तत्व मिल, सब खेलत सुरत के संग ॥२॥
यामें गुनी ग्यानी मुनी महंत, अगम कर कर गावें ।
सुनें सीखें पढ़ें पंडित, पार कोई न पावें ॥३॥
तूं देख दरसन पंथ पैंडे, करें किव सिध साध ।
चढ़ी चौदे सुन्य समावें, तहां आड़ी अगम अगाध ॥४॥
ए भरम बाजी रची रामत, बहु विधें संसार ।
ए जो नैन देखे श्रवन सुने, सब मूल बिना विस्तार ॥५॥
वैराट सब हम देखिया, वैकुंठ विष्णु सेखसांई ।
सुन्यथें जैसे जल बतासा, सो सुन्य मांझ समाई ॥६॥

१. व्यापार करने वाला ।

ए तूं देख नाटक निमख को, अब करे कहा विचार ।
पाउ पल में उलंघ ले, ब्रह्मांड सुन्य निराकार ।।७।।
तेरे बीच बाट घाट न तत्व कोई, तूं करे पांउं बिना पंथ ।
निरंजन के परे न्यारा, तहां है हमारा कंथ ।।८।।
अब पार सुख क्यों प्रकासिए, ए है अपनों विलास ।
महामत मनसा मिट गई, सब सुपन केरी आस ।।९।।

।।प्रकरण।।७।।चौपाई।।७४।।

राग विलावर

हो भाई मेरे वैष्णव कहिए वाको, निरमल जाकी आतम ।
नीच करम के निकट न जावे, जाए पेहेचान भई पारब्रह्म ।।१।।
इस्क लगाए पिया सों पूरा, खेले अबला होए अहनिस ।
ओ अंधे अग्यानी भरम में भूले, पर या ठौर प्रेम को रस ।।२।।
जब आतम दृष्ट जुड़ी परआतम, तब भयो आतम निवेद[1] ।
या विध लोक लखे नहीं कोई, कोई भागवंती जाने ए भेद ।।३।।
जब वैष्णव अंग किये री अपरस, और कैसी अपरसाई ।
परस भयो जाको परसोतम सों, सो बाहेर न देवे देखाई ।।४।।
अहनिस आवेस हुअडा अंग में, जैसे मद चढ़्यो महामत ।
वाकों आसा और न उपजे तृष्णा, वह एकै सों एक चित ।।५।।
उतपंन प्रेम पारब्रह्म संग, वाको सुपन हो गयो संसार ।
प्रेम बिना सुख पार को नाहीं, जो तुम अनेक करो आचार ।।६।।
साँचा री साहेब साँचसों पाइए, साँच को साँच है प्यारा ।
या वैष्णव की गत देखो रे वैष्णवो, महामत इनसे भी न्यारा ।।७।।

।।प्रकरण।।८।।चौपाई।।८१।।

१. निवेदन, समर्पण ।

राग विलावर

कहा भयो जो मुखथें कह्यो, जब लग चोट न निकसी फूट ।
प्रेम बान तो ऐसे लगत हैं, अंग होत हैं टूक टूक ।।१।।

मुख के सब्द मैं बोहोत सुने, इन भी कोई दिन किया पुकार ।
पर घायल भई सो तो कोईक कुली में, सो रहत भवसागर पार ।।२।।

वाको आग खाग बाघ नाग न डरावें, गुन अंग इंद्री से होत रहित ।
डर सकल सांमी इनसे डरपत, या विध पाइए प्रेम परतीत ।।३।।

लगी वाली और कछू न देखे, पिंड ब्रह्मांड वाको है री नाहीं ।
ओ खेलत प्रेमे पार पियासों, देखन को तन सागर माहीं ।।४।।

जो कोई ऐसे मगन होए खेले प्रेम में, तो या बिध हमको है री सेहेल ।
पर पीवना प्रेम और मगन न होना, ए सुख औरों है मुस्किल ।।५।।

ए जिन कारन किया है कारज, सो ढूंढ़ों सैयां जो पिया ने कही ।
न तो अब हीं मगन होए खेलों प्रेम में, तब तो देखन कहन सुनन तें रही ।।६।।

देखन को हम आए री दुनियाँ, हमहीं कारन कियो ए संच[1] ।
पार हमारे न्यारा नहीं, हम पार में बैठे देखे प्रपंच ।।७।।

जिन बांधे हैं भवन चौदे, सो नार[2] हमसे रहत है न्यारी ।
दुख में बैठी सुख लेवे महामति, पार के पार पिया की प्यारी ।।८।।

।।प्रकरण।।९।।चौपाई।।८९।।

राग श्री केदारो

सुनो भाई संतो कहूं रे महंतो, तुम अखंड मंडल जान पाया ।
वैष्णव बानी पूछों गुर ग्यानी, ऐसा अंधेर धंधा क्यों ल्याया ।।१।।

जिन गोकुल को तुम अखंड कहत हो, सो तुमारी दृष्टें न आया ।
सुकजी के वचन में प्रगट लिख्या है, पर तुमको किने न बताया ।।२।।

१. संचार, लीला का विस्तार । २. माया ।

जाको तुम सतगुर कर सेवो, ताको इतनी पूछो खबर ।
ए संसार छोड़ चलेंगे आपन, तब कहां है अपनों घर ।।३।।
सब्द की वस्त सो तो महाप्रले लीनी, और ठौर बताओ मोही ।
जाको सुध न आप और घर की, क्यों पार पावेगा सोई ।।४।।
कोई आप बड़ाई अपने मुख थें, करो सो लाख हजार ।
परमेश्वर होए के आप पुजाओ, पर पाओ नहीं भव पार ।।५।।
कोई सुध न पावे याकी, ऐसी माया सपरानी[1] ।
आपे प्रभु आपे सेवक, मांझे-मांझ उरझानी ।।६।।
बाहेर भेख देख भुलाने, तुम भीतर खोज न कींनी ।
भागवत वचन वल्लभी टीका, तुम याकी सुध न लींनी ।।७।।
ए तो हाथ में वस्त कहूं दूर न देखाऊं, तुम देखो खोज विचारी ।
सांच झूठ को प्रगट पारखो, कोई निकसो इन अंधारी ।।८।।
भवसागर और भागवत, याकी कुंजी एक समारी ।
ए दोऊ ताले दोऊ दरवाजे, कोई खोल न सके संसारी ।।९।।
ए संसार बड़ा है कोहेड़ा, और कोहेड़ा भागवत ।
ए दोऊ एक कुंजी से खोलूं, जो कोई देखूं आगे संत ॥१०॥
जो कोई खप[2] करे या निध की, सो नाखे आप[3] निघात ।
महामत कहे ताए अखण्ड सुख दीजे, टालिए संसारी ताप ॥११॥

।।प्रकरण।।१०।।चौपाई।।१००।।

राग श्री नट

रे हूँ नाहीं रे हूँ नाहीं सिध साध संत री भगत, नाहूं वैष्णव अपरस आचार ।
जात कुटम कुल नीच ना ऊंच, ना हूँ बरन अठार ।।१।।
रे हूँ नाहीं व्रत दया संझा अगिन कुंड, ना हूँ जीव जगन ।
तंत्र न मंत्र भेख न पंथ, ना हूँ तीरथ तरपन ।।२।।

१. विलक्षण, वल-फेरवाली । २. खोज करना, प्राप्ति की इच्छा । ३. अपने अहम् (अहंकार) का त्याग ।

रे हूँ नाहीं करामात मत अगम निगम, धरम न करम उनमान ।
सुपन सुषुप्त जाग्रत न तुरिया, तप न जप न ध्यान ।।३।।
रे हूँ नाहीं अंग इंद्री ग्यान ब्रह्मचारी, ब्रह्मांड न लगत वचन ।
रूप रंग रस धात में नाहीं, गुन पख दिवस ना रैन ।।४।।
रे हूँ नाहीं सब्द सोहं जो तत्व पांचमें, ना खट चक्र सिर पवन ।
त्रिकुटी त्रिवेनी तीनों ही काल में, ना अनहद अजपा आसन ।।५।।
रे हूँ नाहीं नवधा में मुक्त में भी नाहीं, न हूँ आवा गवन ।
वेद कतेब हिसाब में नाहीं, न मांहें बाहेर न सुंन ।।६।।
रे हूँ नाहीं न्यारा जहां हूँ तहां नजीक में, ना हूँ उनमुनी[1] आकार ।
ना हूँ दृष्टें किन सुनिया री सृष्टें, न हूँ निराकार ।।७।।
तुम सांचे सिध साध भगवत तुमको वैष्णवो, सांच सकल संसार ।
भनत महामत तुम अमर होउ याही में, मैं न कछू यामें निरधार ।।८।।

।।प्रकरण।।११।।चौपाई।।१०८।।

राग श्री गौड़ी

वचन विचारो रे मीठड़ी, वल्लभाचारज बानी ।
अर्थ लिए बिना ए रे अंधेरी, करत सबों को फानी ।।१।।
बानी गाऊँ श्री वल्लभाचारज, ज्यों वैष्णव को सुख होए ।
सत वचन बोहोत तो न कहूं, जानों दुख पावे दुष्ट कोए ।।२।।
ए बानी को टेढ़ा कहावो, ए कौन तुमारा धरम ।
वैष्णव कहाए के उलटे चलिए, ए नहीं तिनके करम ।।३।।
देखीते वैष्णव अति सुंदर, नीके बनावत भेख ।
माला तिलक धोए धोती पेहेरे, एक दूजे के देख ।।४।।
कौन तुम और कहां तें आए, और कहां तुमारा घर ।
ए कौन भोम और कहां श्री कृष्णजी, पाओगे कौन तर ।।५।।

१. ऊपर (आकाश) की ओर दृष्टि लगाकर ध्यान करने वाले ।

उत्तम भेख धरो वैष्णव के, और वैष्णव आप कहावो ।
जो वैष्णव बस करे नव अंग, सो वैष्णव क्यों न जगावो ।।६।।

तुम पांच के बांधे पांच देखत हो, पांच के चौदे भवन ।
ए पांचों प्रले हो जासी, पीछे कब ढूंढ़ोगे अपना वतन ।।७।।

ए बानी तो अपरस करे आतम, तुम अपरस करो बाहेर अंग ।
आकार अपरस किए कहा होए, इने आतम सों कैसो सनमंध ।।८।।

तुम झूठ को साजो समारो, जो झूठा होए जासी ।
सांचे सुख देवे जो सांचा, सो कबे ओलखासी ।।९।।

मांहें अंधेर और वैष्णव कहावो, ए तो बातें सब फोक ।
ज्यों धूरत नाम धरावे धनवंत, पासे नहीं दमड़ी रोक ॥१०॥

बिध न लहो विवाद करो, ना देखो वचन विचारी ।
वल्लभ बानी समझे बिना, खोवत निध तुमारी ॥११॥

अहंकारें कई जुलम करो, ना त्रास सील संतोख[1] ।
गुन अंग इंद्री के बस परे, ना देखो नजरों दोख[2] ॥१२॥

धूरत करके ल्याओ धन, खरचो मुख करो उनमाद ।
मेले मेलो मुख भाखो उछव, पातलिऐं डालो प्रसाद ॥१३॥

एक सीत जूठ को ब्रह्मा जैसा, जल में मीन होए आया ।
ए जूठ को महामत बानी देखावे, ग्वालों को चल्लू न कराया ॥१४॥

ओ हांसी ठठोली करे हरामी, ताए ले बैठो मंडली मुख ।
ए नीच करम डबोवे नरक में, पीछे छूट पाओगे कब सुख ॥१५॥

ए बानी उत्तम चढ़ावे ऊंचे, ए उलटे अधम स्वादे ।
कठिन पंथ चढ़ाए नहीं ऊंचे, पीछे नीचे दौड़े नीच वादे ॥१६॥

कुकरम करो कुटिल गत चालो, आगे पीछे चींटी हार ।
वल्लभ कुंअर कितने[3] को बरजे, कई उलटे सेवक संसार ॥१७॥

१. संतोष । २. दोष । ३. किस किस को ।

दोष नहीं इन बानी केरो, ए तो दुष्ट दासी की कमाई ।
अधम शिष्य गुर को बुरा कहावे, पर सोने न लगत स्याही ॥१८॥

ए बानी तुम नाहीं पेहेचानी, यामें बिध बिध के प्रकास ।
इन प्रकास में खेलें श्रीकृष्णजी, रमें अखंड लीला रास ॥१९॥

तुम पनधारी आतम निवेदी, बानी न देखो विचारी ।
अजूं ना मानो तो इत आओ, मैं देखाऊं लीला तुमारी ॥२०॥

वैष्णव होए सो वचन मानसी, और जो वल्लभ बानी से टलिया ।
महामत कहे सो काहे को जनम्या, गर्भ मांहें क्यों न गलिया ॥२१॥

॥प्रकरण॥१२॥चौपाई॥१२९॥

राग श्री

आज सांच केहेना सो तो काहू ना रूचे, तो भी कछुक प्रकासूं सत ।
सत के साथी को सत के बान चूभसी, दुष्ट दुखासी दुरमत[1] ।
अखंड सुख लागियो ॥१॥

वेद ने पुरान सास्त्र सब उपजे, पीछे भारथ पर्व अठार ।
दाझ न मिटी तिन व्यास की, पीछे उदयो भागवत सार ॥२॥

ए सुख की सागर सत बानी प्रगटी, सो लई साधों विचार ।
अधिक अमृत सुकें सींचिया, तिन देखाए दरवाजे पार ॥३॥

भले या जुग में आचारज प्रगटे, जिन चरची सुकजी की बान ।
धंन धंन टीका श्री वल्लभी, इन प्रेम प्रकास्यो परमान ॥४॥

आए मिलो रे वैष्णव पारखी, तुम देखियो विचारी सब अंग ।
टीका वल्लभी बानी सुकदेव की, ताके एक अखर को न कीजे भंग ॥५॥

इत वृन्दावन रासलीला रातडी अखंड, खेलें पिउ गोपी जन ।
तो ऊधव संदेसे किन पर लाइया, कहो किनने किए रूदन ॥६॥

१. कुबुद्धि, दुर्बुद्धि ।

इत रात अखण्ड सो तो टाली न टले, भी कह्या आगे ऊग्या रे दिन ।
सखियां पिउ उठे सब घर से, ए घर कौन रे उतपन ।।७।।

बृज अखंड ब्रह्मांड में हुआ, विचार देखो रे बुधवंत ।
एक रंचक न राखी चौदे लोक की, महाप्रले कह्यो ऐसो अंत ।।८।।

बृज ने रास अखण्ड कहे प्रगट, सो तो नित नित नवले रंग ।
एक रंचक रहे जो ब्रह्मांड की, तो टीका को होवे रे भंग ।।९।।

रात दिन अखण्ड कहे बृज में, दिन नाहीं वृन्दाबन रास ।
रात अखण्ड लीला खेलहीं, दोऊ कैसे अखण्ड विलास ॥१०॥

बृज रास लीला दोऊ नित कही, खेलें दोऊ लीला बाल किसोर ।
तो मथुरा आए कंस किनने मारया, ए कौन भई तीसरी लीला और ॥११॥

कहो के भूल्या टीका करता, के भूले तुम अर्थ ।
सो जुबां काटिए जो टीका को टेड़ा कहे, तुम भूले करत अनर्थ ॥१२॥

तुम आंकड़ी न पाई इत अखण्ड कह्या, तोए न खुले रे द्वार ।
तुम समझे नहीं बानी सुकदेव की, तो हिरदे रह्यो रे अंधकार ॥१३॥

अर्थ टीका का जो तुम पाया होता, तो अंधेर को होत नास ।
अनेक ब्रह्मांड जाके पलथें उपजे, ताको देखत इत उजास ॥१४॥

तुमको बल[1] जो खुल्या होता इन बानी का, तो भटकत नहीं रे भरम ।
इतथें देखो अखंड लीला प्रगट, तब समझत माया को मरम ॥१५॥

तुम सब मिल दौड़े अखंड सुखको, सुन प्रेम टीका के वचन ।
अर्थ पाए बिना प्रेमें ले पटके, कहूं उलटाए दिए रे अगिन ॥१६॥

इन बृज रैन को ब्रह्मा बोहोत तलफया, पर पाई नहीं रे निरवान ।
सो सुखें तुम कैसे पाओगे, देखो अपनी चाल के निसान ॥१७॥

ए झूठा भवजल अथाह कह्या, ताको पार न पायो किन क्यांहें ।
याको गौपद बच्छ गोपी कर निकसी, सो पार जाए मिलियां अखंड मांहें ॥१८॥

१. भेद ।

अब केता कहूं तुमकों जाहेर, ए अर्थ प्रगट कह्यो न जाए ।
निघात डारे छोड़ लज्या अहंकार, नेहेचल सुख दीजे रे ताए ॥१९॥

ए प्रकास विचार तुम देख्या नाहीं, तुम वैभवें लगे रे विलास ।
अब महामत कहे जोत उद्दोत भई, ताको इत आए देखो रे उजास ॥२०॥

॥प्रकरण॥१३॥चौपाई॥१४९॥

राग सोरठ

धनी न जाए किनको धूत्यो, जो कीजे अनेक धुतार ।
तुम चैन[1] ऊपर के कई करो, पर छूटे न क्यों ए विकार ॥१॥

कोई बढ़ाओ कोई मुड़ाओ, कोई खैंच काढ़ो केस ।
जोलों आतम न ओलखी, कहा होए धरे बहु भेस ॥२॥

चार बेर चौका देओ, लकड़ी जलाओ धोए जल ।
अपरस करो बाहेर अंग को, पर मन ना होए निरमल ॥३॥

सात बेर अस्नान करो, पेहेनो ऊंन उत्तम कामल ।
उपजो उत्तम जात में, पर जीवड़ा न छोड़े बल ॥४॥

सौ माला वाओ गले में, द्वादस करो दस बेर ।
जोलों प्रेम न उपजे पिउ सों, तोलों मन न छोड़े फेर ॥५॥

तान मान कई रंग करो, अलापी करो किरंतन ।
आप रीझो औरों रिझाओ, पर बस न होए क्यों ए मन ॥६॥

उच्छव करो अंनकूट का, विविध करो प्रसाद ।
पर निकट न आवें नाथ जी, पीछे सब मिल करो स्वाद ॥७॥

सीखो सबे संस्कृत, और पढ़ो सो वेद पुरान ।
अर्थ करो द्वादस के, पर आप न होए पेहेचान ॥८॥

साधो सबे जोगारंभ, अनहद अजपा आसन ।
उड़ो गड़ो चढ़ो पांच में, आखिर सुन्य न छोड़ी किन ॥९॥

१. चरित्र, दिखावा ।

आगम भाखो मन की परखो, सूझे चौदे भवन ।
मृतक को जीवत करो, पर घर की न होवे गम ॥१०॥
सतगुर सोई जो आप चिन्हावे, माया धनी और घर ।
सब चीन्ह परे आखिर की, ज्यों भूलिए नहीं अवसर ॥११॥
ए पेहेचाने सुख उपजे, सनमंध धनी अंकूर ।
महामत सो गुर कीजिए, जो यों बरसावे नूर ॥१२॥
॥प्रकरण॥१४॥चौपाई॥१६१॥

राग श्री

पतित सिरोमन यों कहे ।
जो मैं किए हैं बज्रलेप[1], मेरे साहेब सों द्वेष ॥टेक ॥१॥
पतित मेरे आगे कौन कहावे, मैं कोई न देख्या रे पतीत ।
ए सब कोई साध चलत हैं सीधे, जो देखिए अपनी रीत ॥२॥
दुनियां सकल चलत है पैंडे, जो साध बड़ों ने बताया ।
उलटा कोई नहीं रे यामें, पतित किने न केहेलाया ॥३॥
उलटा एक चलत हों यामें, मैं छोड़ी दुनियां की राह ।
तोड़ी मरजाद बिगड़या विश्व थें, मैं तो पतितन को पातसाह ॥४॥
सूर जैसे पतित कहावे, और की सोभा आप देवे ।
ओ अंधा राँक गरीब साध जो, सो क्या रे पतीती लेवे ॥५॥
नामधारी पतित जो हुते, जिन जुध जगपति सों किए ।
जगपति जग में बड़ा जोरावर, तिन मार चरन तले लिए ॥६॥
या जग में ए क्या रे पतीती, कोई न पोहोंच्या पार ।
बोहोत दौड़े सो सुन्य तोड़ी, आड़ी पड़ी निराकार ॥७॥
मैं उलटाए आतम जुगतें जगाई, पार की तरफ फिराई ।
सुन्य निराकार पार परआतम, मैं ता पर दृष्ट चढ़ाई ॥८॥

१. अमिट गुनाह ।

अगम के पार जो अलख कहावे, मैं तिनसों जाए जुध लिया ।
इहाँ लग और सब्द नहीं सीधा, सो प्रगट पकड़ के किया ।।९।।
इन आतम को घर एही अछर है, ए तो पारब्रह्म परखाया ।
ए जुध जीत्या मैं सेहेजे, सतगुर जी की दया ॥१०॥
अब अछर के पार मैं जुध बनाऊँ, सकल आउध अंग साजुं ।
प्रेम की सैन्या प्रगट चलाऊँ, कंठ अछरातीत मिलाऊँ ॥११॥
पतित ऐसी पुकार न कीजे, पर मोको इन चोटें अगिन लगाई ।
बोहोत बरस मैं राखी अंदर, अब तो ढाँपी न जाई ॥१२॥
पार के पार पार जाए पोहोंच्या, जीवत अखण्ड सुख पाया ।
पतितन के सिर महामत मुकुट मनि, जिन ए जुध जग में लखाया ॥१३॥

।।प्रकरण।।१५।।चौपाई।।१७४।।

राग श्री

दुख रे प्यारो मेरे प्रान को ।
सो मैं छोड़यो क्यों कर जाए, जो मैं लियो है बुलाए ।। टेक ।।१।।
इन अवसर दुख पाइए, और कहा चाहियत है तोहे ।
दुख बिना चरन कमल को, सखी कबहूं न मिलिया कोए ।।२।।
जिन सुख पिउजी ना मिले, सो सुख देऊं रे जलाए ।
जिन दुख मेरा पिउ मिले, मैं सो दुख लेऊं बुलाए ।।३।।
दुख तो हमारो आहार है, औरन को दुख खाए ।
दुख के भागे सब फिरें, कोई विरला साध निबाहे[1] ।।४।।
दुख को निबाहू ना मिले, और सुख को तो सब ब्रह्मांड ।
इन झूठे दुख थें भाग के, खोवत सुख अखण्ड ।।५।।
दुख की प्यारी प्यारी पिउ की, तुम पूछो वेद पुरान ।
ए दुख मोही को भला, जो देत हैं अपनी जान ।।६।।

१. निभाने वाला ।

ता कारन दुख देत हैं, दुख बिना नींद न जाए ।
जिन अवसर मेरा पिउ मिले, सो अवसर नींद गमाए ।।७।।

नींद बुरी या भरम की, भरम तो भई आड़ी पाल ।
वह दुख देत जलाए के, जो आड़ी भई अपने लाल ।।८।।

नींद निगोड़ी ना उड़ी, जो गई जीव को खाए ।
रात दिन अगनी जले, तब जाए नींद उड़ाए ।।९।।

इन सुपने के दुख से जिन डरो, दुख बदले सत सुख ।
अपने मासूक सों नेहड़ा, तोको देयगो बनाए के दुख ।।१०।।

ता सुख को कहा कीजिए, जो देखलावे धरम राए ।
मैं वह दुख मांगो पिउपें, पिउ सों पल पल रंग चढ़ाए ।।११।।

दुख सब सुपनों हो गयो, अखण्ड सुख भोर भयो ।
महामत खेले अपने लाल सों, जो अछरातीत कह्यो ।।१२।।

।।प्रकरण।।१६।।चौपाई।।१८६।।

राग श्री

सखी री आतम रोग बुरो लग्यो, याको दारू[1] ना मिले तबीब[2] ।
चौदे भवन में न पाइए, सो हुआ हाथ हबीब[3] ।।१।।

आतम रोग कासों कहिए, जिन पीठ दई परआतम ।
ए रोग क्यों ए ना मिटे, जो लों देखे ना मुख ब्रह्म ।।२।।

सो हबीब क्यों पाइए, कई कर कर थके उपाए ।
सास्त्र देखे सब सब्द, तिन दुख दिया बताए ।।३।।

सखी ताथें दुख प्यारो लग्यो, अंदर देखो विचार ।
सो दुख कैसे छोड़िए, जासों पाइए पिउ मनुहार ।।४।।

दुनी के सुख दिए मैं तिनको, जो कोई चाहे सुख ।
जिनसे मेरा पिउ मिले, मैं चाहूं सोई दुख ।।५।।

१. दवाई । २. वैद्य, हकीम । ३. प्यारा (प्रियतम धाम धनी) ।

दुख प्यारो है मुझ को, जासों होए पिउ मिलन ।
कहा करूं मैं तिन सुख को, आखिर जित जलन ।।६।।

बड़ी मत के जो धनी कहे, होए गए जो आगे ।
तिन भी धनी मिलन को, दुख धनी पें माँगे ।।७।।

जब बिछोहा धनी का, तब दुख में धनी विलास ।
उन दुख के विलास में, पोहोंचाए देत धनी आस ।।८।।

कहा करूं तिन सुख को, जिन से होइए निरास ।
ए झूठा सुख है छल का, सो देत माया की फांस ।।९।।

दुख से पिउजी मिलसी, सुखें न मिलिया कोए ।
अपने धनी का मिलना, सो दुखै से होए ॥१०॥

दुख बड़ो पदारथ, जो कोई जाने ए ।
ताथें सुख को छोड़ के, दुख ले सके सो ले ॥११॥

रात दिन दुख लीजिए, खाते पीते दुख ।
उठते बैठते दुख चाहिए, यों पिउ सों होइए सनमुख ॥१२॥

इन दुख से कोई जिन डरो, इन दुख में पिउ को सुख ।
जो चाहत हैं सुख को, आखिर तिन में दुख ॥१३॥

दुख बिना न होवे जागनी, जो करे कोट उपाए ।
धनी जगाए जागहीं, ना तो दुख बिना क्यों ए न जगाए ॥१४॥

दुख खाना दुख पीवना, दुखै हमारो आहार ।
दुनियां को दुख खात है, तो दुख थें भागत संसार ॥१५॥

दुखतें विरहा उपजे, विरहे प्रेम इस्क ।
इस्क प्रेम जब आइया, तब नेहेचे मिलिए हक ॥१६॥

दुख सोभा दुख सिनगार, दुखै को सब साज ।
दुख ले जाए धनी पे, इन सुख तें होत अकाज ॥१७॥

तो दुख सारों ने मांगया, बड़ी मत वालों ने जाग ।
दुख तें अपने पिउ का, आवत विरह वैराग ॥१८॥

दुख बस्तर दुख भूखन, दुख थें निरमल देह ।
जो दुख प्यारो जीव को लगे, तो उपजे सत सनेह ॥१९॥

दुख दावानल काटत, और काटत सकल विकार ।
दुख काटत मूल माया को, बढ़े नहीं विस्तार ॥२०॥

दुख दसो द्वार भेदया, और दुख भेदयो रोम रोम ।
यों नख सिख दुख प्यारो लगे, तो कहा करे छल भोम ॥२१॥

सुख माया को मूल है, सो चाहे बढ़यो विस्तार ।
तिन साधो सुख तजिया, वास्ते अपने करतार ॥२२॥

बारीक बातें दुख की, जो कदी लगे मिठास ।
तो टूट जात है ए सुख, होत माया को नास ॥२३॥

ए दुख बातें सोई जानहीं, जाको आई वतन खुसबोए ।
ए दुख जानें अर्स अंकूरी, माया जीव न जाने कोए ॥२४॥

जो माया मोह थें उपजे, सो क्या जाने दुख के सुख ।
जो माया को सुख जानहीं, ताथें हुए बेमुख ॥२५॥

कुरान पुरान मैं देखिया, कही दुख की बड़ाई ।
साध बड़ों बड़ाई दुख की, लड़ाए[1] लड़ाए के गाई ॥२६॥

मोल तोल ना दुख को, कोई नाहीं इन बराबर ।
जिन दुखथें धनी पाइए, ताको मोल होवे क्योंकर ॥२७॥

दुख तो मोहोंगे[2] मोल को, मैं देख्या दिल ल्याए ।
दुनियां सब भागी फिरे, कोई न सके उचाए ॥२८॥

मैं तो चाह्या सुख को, पर धनी की मुझ पर मेहेर ।
ताथे दुख फेर फेर लिया, अब सुख लागत है जेहेर ॥२९॥

१. लाड़ से, प्यार से । २. मेहेंगी, कीमती ।

जो साहेब सनकूल होवहीं, तो दुख आवे तिन ।
इन दुनियां में चाह कर, दुख ना लिया किन ॥३०॥

दुख देवे दिवानगी, स्यानप देवे उड़ाए ।
ताथें दुख कोई ना लेवहीं, सब सुख स्यानप चाहें ॥३१॥

चाहन वाले दुख के, दुनियां में ढूंढ़ देख ।
ब्रह्मांड यार है सुख का, दुख दोस्त हुआ कोई एक ॥३२॥

जाको स्वाद लग्यो कछू दुख को, सो सुख कबूं न चाहे ।
वाको सो दुख फेर फेर, हिरदे चढ़ चढ़ आए ॥३३॥

महामत कहे इन दुख को, मोल ना कियो जाए ।
लाख बेर सिर दीजिए, तो भी सर भर न आवे ताए ॥३४॥

॥प्रकरण॥१७॥चौपाई॥२२०॥

राग श्री

मैं तो बिगड़या विश्व थें बिछुरया, बाबा मेरे ढिग आओ मत कोई ।
बेर बेर बरजत हों रे बाबा, न तो हम ज्यों बिगड़ेगा सोई ॥१॥

मैं लाज मत पत दई रे दुनी को, निलज होए भया न्यारा ।
जो राखे कुल वेद मरजादा, सो जिन संग करो हमारा ॥२॥

लोक सकल दौड़त दुनियां को, सो मैं जान के खोई ।
मैं डारया घर जारया हँसते, सो लोक राखत घर रोई ॥३॥

देत दिखाई सो मैं चाहत नाहीं, जा रंग राची लोकाई ।
मैं सब देखत हूं ए भरमना, सो इनों सत कर पाई ॥४॥

मैं कहूं दुनियां भई बावरी, ओ कहे बावरा मोही ।
अब एक मेरे कहे कौन पतीजे, ए बोहोत झूठे क्यों होई ॥५॥

चित में चेतन अंतरगत आपे, सकल में रह्या समाई ।
अलख को घर याको कोई न लखे, जो ए बोहोत करे चतुराई ॥६॥

सतगुर संगे मैं ए घर पाया, दिया पारब्रह्म देखाई ।
महामत कहे मैं या विध बिगड़्या, तुम जिन बिगड़ो भाई ।।७।।

।।प्रकरण।।१८।।चौपाई।।२२७।।

राग श्री

तुम समझ के संगत कीजो रे बाबा, मुझ जैसा दिवाना न कोई ।
जाही सों लोक लज्या पावे, सो तो मोहे बड़ाई ।।१।।

मैं तो बात करूं रे दिवानी, दुनियां तो स्यानी सुजान ।
स्याने दिवाने संग क्योंकर होवे, तुम मिलियो मोहे पेहेचान ।।२।।

मैं त्रिलोकी अगिन कर देखी, दुनियां को सो सुख ।
दुनियां को अमृत होए लागी, मोहे लागत है विख ।।३।।

जब मैं मरम पायो मोहजल को, तब मैं भाग्या रोई ।
डर के उबट[1] चल्या उबाटे[2], बाट बड़ी मैं खोई ।।४।।

अहनिस डर आया मेरे अंग में, फिरया दिलडा भया दिवाना ।
भली बुरी कहे सो मैं कछू न देखूं, भागवे को मैं स्याना ।।५।।

मैं छोड़े कुटम सगे सब छोड़े, छोड़ी मत स्वांत सरम ।
लोक वेद मरजादा छोड़ी, भाग्या छोड़ सब धरम ।।६।।

ए सूरे पांऊं धरें क्यों पीछे, इनको तो लज्या लागे ।
देवें सीस सकल सुख खोवें, पर भाइयों को छोड़ न भागे ।।७।।

ए मिलके मरद चलें ज्यों महीपत[3], जांनो पड़ता अंबर पकड़सी ।
मोंहे अचंभा ए डरें नहीं किनसो, पर ए खेल केते दिन रेहसी ।।८।।

देखत काल पछाड़त पल में, तो भी आंख न खोलें ।
आप जैसा और कोई न देखें, मद छाके मुख बोलें ।।९।।

इनमें से नाठ्या मैं निसंक कायर होए, फेर न देख्या ब्रह्मांड ।
सुन्य निरंजन छोड़ मैं न्यारा, जाए पड़्या पार अखण्ड ॥१०॥

१. उलटे पाँव । २. बिन राह । ३. राजा ।

अब तो कछुए न देखत मद में, पर ए मद है पल मात्र ।
महामत दिवाने को कह्यो न माने, सो पीछे करसी पछताप ॥११॥

॥प्रकरण॥१९॥चौपाई॥२३८॥

राग श्री आसावरी

साधो या जुग की ए बुध ।
दुनियां मोह मद की छाकी, चली जात बेसुध ॥१॥
दुनी दुनी पें चाहे दुनियां, ताथें करामात ढूंढ़े ।
पीछे दोऊ बराबर संगी, तब दे सिच्छा और मूंडे ॥२॥
साधो केहेर कही करामात, ऐ दुनियां तित रांचे ।
झूठी दृष्ट जो बांधी झूठ सों, ताथें दिल ना लगत क्यों ए सांचे ॥३॥
कौन मैं कहां को कहां थें बिछुरयो, कौन भोम ए छल ।
गुर सिष्य ग्यान कथें पंथ पैंडे, पर एती न काहू अकल ॥४॥
या घर में या बन में रहे, पर कहा करे बिना सतगुर ।
तो लों मकसूद[1] क्यों कर होवे, जो लों पाइए ना अखंड घर ॥५॥
सतगुर सोई जो वतन बतावे, मोह माया और आप ।
पार पुरूख जो परखावे, महामत तासों कीजे मिलाप ॥६॥

॥प्रकरण॥२०॥चौपाई॥२४४॥

राग श्री सारंग

चल्यो जुग जाए री सुध बिना ।
सुध बिना सुध बिना सुध बिना, चल्यो जुग जाए री सुध बिना ॥१॥
मूल प्रकृती मोह अहं थें, उपजे तीनों गुन ।
सो पांचों में पसरे, हुई अंधेरी चौदे भवन ॥२॥
प्रले प्रकृती जब भई, तब पांचों चौदे पतन ।
मोह अहं सबे उड़े, रहे सरगुन ना निरगुन ॥३॥

१. उद्देश्य की प्राप्ति ।

तब जीव को घर कहां रह्यो, कहां खसम वतन ।
गुर सिष्य नाम बोहोतों धरे, पर ए सुध परी न किन ।।४।।

ऊपर तले मांहें बाहेर, खोज्या कैयों जन ।
नेहेचल न्यारा सबन से, ए ठौर न पाई किन ।।५।।

निराकार कासों कहिए, कासों कहिए निरंजन ।
क्यों व्यापक क्यों होसी फना, एता न कह्या किन ।।६।।

क्यों सरूप है प्राकृत को, क्यों मोह क्यों सुंन ।
क्यों सरूप जो काल को, ए नेहेचे करी न किन ।।७।।

पंथ पैंडे सब चलहीं, कई दीन दरसन ।
ना सुध आप ना पार की, ए सुध परी न किन ।।८।।

कौन सरूप है आतमा, परआतम कह्या क्यों भिन ।
सुध ठौर ना सरूप की, ए संसे भान्यो न किन ।।९।।

महामत सो गुर पाइया, जो करसी साफ सबन ।
देसी सुख नेहेचल, ऐसी कबहूं ना करी किन ॥१०॥

।।प्रकरण।।२१।।चौपाई।।२५४।।

राग श्री

रे हो दुनियां बावरी, खोवत जनम गमार[1] ।
मदमाती माया की छाकी, सुनत नाहीं पुकार ।।१।।

अपनी छायासों आप बिगूती[2], बल खोए चली हार ।
आग बिना जलत अंग में, जल बल होत अंगार ।।२।।

सत सब्द को कोई न चीन्हे, सूने हिरदे नहीं संभार ।
समझे साध जो आपको देखें, तामें बड़ी अंधार ।।३।।

रे यामें केते आप कहावें स्याने, पर छूटत नहीं विकार ।
स्यानप लेके कंठ बंधाए, या छल रच्यो है नार ।।४।।

१. गंवार, मूर्ख । २. फँस गई ।

रे मूढ़मती या फंद में उरझे, उपजत नहीं विचार ।
आप न चीन्हें घर ना सूझे, न लखें रचनहार ।।५।।
अपनी मत ले ले साधू बोले, सब्द भए अपार ।
बोहोत सबद को अर्थ न उपजे, या बल सुपन धुतार ।।६।।
यामें सतगुर मिले तो संसे भानें, पैंडा देखावे पार ।
तब सकल सबद को अर्थ उपजे, सब गम पड़े संसार ।।७।।
तब बल ना चले इन नारी को, लोप न सके लगार ।
महामत यामें खेलत पिया संग, नेहेचल सुख निरधार ।।८।।

।।प्रकरण।।२२।।चौपाई।।२६२।।

राग गौड़ी

रे हो दुनियां को तूं कहा पुकारे, ए सब कोई है स्याना ।
ए मदमाती अपने रंग राती, करत मन का मान्या ।।१।।
रे हो याही फंद में साध संतरी, पुकार पुकार पछताना ।
कोई कहे दुनियां बुरी करत है, कोई भली कहे भुलाना ।।२।।
रे हो बोहोत दिन बिगूती यामें, कर कर ग्यान गुमाना ।
चुप कर चतुराई लिए जात है, तूं न कर निंदा न बखाना ।।३।।
रे हो तूं कर तेरी होत अबेरी, आप न देखे उरझाना ।
अब तूं छोड़ सकल बिध, जात अवसर तेरा जान्या ।।४।।
एही शब्द एक उठे अवनी[1] में, नहीं कोई नेह समाना ।
पेहेचान पिउ तूं अछरातीत, ताही से रहो लपटाना ।।५।।
अहनिस आवेस हुअड़ा अंग में, फिर्‌या दिलड़ा हुआ दिवाना ।
महामत प्रेमें खेले पिया सों, ए मद है मस्ताना ।।६।।

।।प्रकरण।।२३।।चौपाई।।२६८।।

१. पृथ्वी ।

राग श्री केदारो

रे मन भूल ना महामत, दुनियां देख तूं आप संभार ।
ए नाहीं दुनियां बावरी, ए रच्यो माया ख्याल ।।१।।
रे मन त्रिखा न बूझे तेरी झांझुए[1], प्रतिबिंब पकरयो न जाए ।
ज्यों जलचर जल बिना ना रहे, जो तूं करे अनेक उपाए ।।२।।
रे मन सृष्ट सकल सुपन की, तूं करे तामें पुकार ।
असत सत को ना मिले, तूं छोड़ आप विकार ।।३।।
रे मन सुपन का घर नींद में, सो रहे न नींद बिगर ।
याको कोट बेर परबोधिए[2], तो भी गले नहीं पत्थर ।।४।।
वासना होएगी बेहद की, सो क्यों छोड़े अपनी पर ।
ओ सुपन में एक सब्द सुनते, उड़ जासी नींदर ।।५।।
सत सब्द को सोई चीन्हे, जो होए वासना ब्रह्म ।
ए तो असत उलटिए खेल रच्यो है, देत देखाई सब भ्रम ।।६।।
असत तिन को भरम कहिए, होत है जिनको नास ।
ए तो चौदे चुटकी में चल जासी, यों कहत सुकजी व्यास ।।७।।
तूं उलट याको पीठ दे, प्रेमें खेल पियासों रंग ।
ओ आए मिलेंगे आपहीं, जासों तेरा है सनमंध ।।८।।
तेरे संगी तोहे अबहीं मिलेंगे, तूं करे क्यों न करार ।
महामत मन को दृढ़ कर, समरथ स्याम भरतार ।।९।।

।।प्रकरण।।२४।।चौपाई।।२७७।।

राग श्री गौड़ी

रस मगन भई सो क्या गावे ।
बिचली[3] बुध मन चित मनुआ, ताए सबद सीधा मुख क्यों आवे ।।१।।

१. मृगजल । २. यथार्थ ज्ञान सुनाइये । ३. फिर जाना, डिग जाना ।

बिचले नैन श्रवन मुख रसना, बिचले गुन पख इंद्री अंग ।
बिचली भांत गई गत प्रकृत, बिचल्यो संग भई और रंग ।।२।।
बिचली दिसा अवस्था चारों, बिचली सुध न रही सरीर ।
बिचल्यो मोह अहंकार मूलथें, नैनों नींद न आवे नीर ।।३।।
बिचल गई गम वार पार की, और अंग न कछु ए सान ।
पिया रस में यों भई महामत, प्रेम मगन क्यों करसी गान ।।४।।

।।प्रकरण।।२५।।चौपाई।।२८१।।

राग मारू

खोज बड़ी संसार रे तुम खोजो साधो, खोज बड़ी संसार ।
खोजत खोजत सतगुर पाइए, सतगुर संग करतार ।।१।।
भगत होत भगवान की, किव कर कहावें सिध साध ।
गुन अंग इंद्री के बस परे, ताथें बांधत बंध अगाध ।।२।।
सतगुर क्यों पाइए कुली में, भेखें बिगारयो वैराग ।
डिंभकाइए[1] दुनियां ले डबोई, बाहेर सीतल मांहें आग ।।३।।
गोविंद के गुन गाए के, तापर मांगत दान ।
धिक धिक पड़ो ते मानवी, जो बेचत हैं भगवान ।।४।।
उदर कारन बेचें हरी, मूढ़ों एही पायो रोजगार ।
मारते मुख ऊपर, वाको ले जासी जम द्वार ।।५।।
बैठत सतगुर होए के, आस करें सिष्य केरी ।
सो डूबे आप सिष्यन सहित, जाए पड़े कूप अंधेरी ।।६।।
जो मांहें निरमल बाहेर दे न देखाई, वाको पारब्रह्म सों पेहेचान ।
महामत कहे संगत कर वाकी, कर वाही सों गोष्ट[2] ग्यान ।।७।।

।।प्रकरण।।२६।।चौपाई।।२८८।।

१. पाखंड । २. गुप्त, गुझ ।

राग श्री जेतसी
किरंतन वेदांत के

कहो कहोजी ठौर नेहेचल, वतन कहां ब्रह्म को ।। टेक ।।
तुम तीन सरीर तज भए ब्रह्म, पायो है पूरन ग्यान ।
जो लों संसे ना मिटे, साधो तो लों होत हैरान ।।१।।
वेदांती संतो महंतो, तुम पायो अनुभव सार ।
निज वतन जो आपनों, तुम सोई करो निरधार ।।२।।
पेहेले पेड़ देखो माया को, जाको न पाइए पार ।
जगत जनेता जोगनी, सो कहावत बाल कुमार ।।३।।
मात पिता बिन जनमी, आपे बंझा पिंड ।
पुरूख अंग छूयो नहीं, और जायो सब ब्रह्मांड ।।४।।
आद अंत याको नहीं, नहीं रूप रंग रेख ।
अंग न इंद्री तेज न जोत, ऐसी आप अलेख ।।५।।
जल जिमी न तेज वाए, न सोहं सब्द आकास ।
तब ए आद अनाद की, जब नहीं चेतन प्रकास ।।६।।
पढ़ पढ़ थाके पंडित, करी न निरने किन ।
त्रिगुन त्रिलोकी होए के, खेले तीनों काल मगन ।।७।।
विष्णु ब्रह्मा रूद्र जनमें, हुई तीनों की नार ।
निरलेप काहू न लेपहीं, नारी है पर नाहीं आकार ।।८।।
गगन पाताल मेर सिखरों, अष्टकुली बनाए ।
पचास कोट जोजन जिमी, सागर सात समाए ।।९।।
तेज तिमर यामें फिरें, रवि ससि तारे ना थिर ।
सेस नाग कर ब्रह्मांड, ले धरयो वाके सिर ॥१०॥

देव दानव रिखि मुनि, ब्रह्मग्यानी बड़ी मत ।
सास्त्र बानी सबद मात्र, ए बोली सबे सरस्वत ॥११॥
बरन चारों विद्या चौदे, ए पढ़ाए भली पर ।
कर आवरण मोह नींद को, खेलावे नारी नर ॥१२॥
लाख चौरासी जीव जंत, ए बांधे सबे निरवान ।
थिर चर आद अनाद लों, ए भरी सो चारों खान ॥१३॥
पांच तत्व चौदे लोक, पाउ पल में उपजाए ।
खेल ऐसे अनेक रचे, नार निरंजन राए ॥१४॥
ए काली किन पाई नहीं, सब छाया में रहे उरझाए ।
उपजे मोह अहंकार थें, सो मोहै में भरमाए ॥१५॥
बुध तुरिया[1] दृष्ट श्रवना, जेती गम वचन ।
उतपन सब होसी फना, जो लों पोहोंचे मन ॥१६॥
ऊपर तले मांहें बाहेर, दसो दिसा सब एह ।
सो सब्द काहूं न पाइए, कह्या ठौर अखण्ड घर जेह ॥१७॥
तो कह्यो न जाए मन वचन, ना कछू पोंहोंचे चित ।
बुधें सुनी न निसानी श्रवनों, तो क्यों कर जाइए तित ॥१८॥
वेदांती माया को यों कहें, काल तीनों जरा भी नाहें ।
चेतन व्यापी जो देखिए, सो भी उड़ावें तिन मांहें ॥१९॥
ना कछु ना कुछ ए कहें, ओ सत - चिद - आनंद ।
असत सत को ना मिले, ए क्यों कर होए सनमंध ॥२०॥
ए जो व्यापक आतमा, परआतम के संग ।
क्यों ब्रह्म नेहेचल पाइए, इत बीच नार को फंद ॥२१॥
निबेरा खीर नीर का, महामत करे कौन और ।
माया ब्रह्म चिन्हाए के, सतगुर बतावें ठौर ॥२२॥

॥प्रकरण॥२७॥चौपाई॥३१०॥

१. चित ।

राग श्री आसावरी

मैं पूछों पांड़े तुम को, तुम कहो करके विचार ।
सास्त्र अर्थ सब लेवहीं, पर किने न कियो निरधार ।।१।।

माया मोह अहंकार थें, ए सबे उतपन ।
अहंकार मोह माया उड़ी, तब कहां है ब्रह्म वतन ।।२।।

कोई कहे ब्रह्म आतमा, कोई कहे पर आतम ।
कोई कहे सोहं सब्द ब्रह्म, या बिध सब को अगम ।।३।।

कोई कहे ए सबे ब्रह्म, रहत सबन में व्याप ।
कोई कहे ए सबे छाया, नांही यामें आप ।।४।।

कोई कहे ओ निरगुन न्यारा, रहत सबन से असंग ।
कोई कहे ब्रह्म जीव ना दोए, ए सब एकै अंग ।।५।।

कोई कहे ए तेज पुंज, याकी किरना सबे संसार ।
कोई कहे याको अंग न इंद्री, निरंजन निराकार ।।६।।

कोई कहे ओ पुरूख उत्तम, और ए सबे सुपन ।
कोई कहे ए अलख[१] अलहा[२], कोई कहे सब सुन्न ।।७।।

कोई कहे ओ सदा सिव, और न कोई देव ।
कोई कहे आद नारायन, करत कमला जाकी सेव ।।८।।

कोई कहे आदे आद माता, और न कोई क्यांहें ।
सिव नारायन सबे यार्थें, या बिन कछुए नाहें ।।९।।

कोई कहे याको करम करता, सब बंधे आवें जाए ।
तीनों गुन भी करमें बांधे, सो फेर फेर फेरे खाए ॥१०॥

कोई कहे ए सबे काल, करम सक्त[३] उपाए ।
खेलावे अपने मुख में, आखिर दोऊ को खाए ॥११॥

१. न दिखाई देने वाला । २. प्राप्त न होने वाला (अलभ्य) । ३. शक्ति ।

कोई करे काल को संजम, कोई दिन काया बचाए ।
कोई राते करामतें, यों सब निगम नचाए ॥१२॥

पढ़े गुनें विकार न छूटे, आग न अंगथें जाए ।
आप वतन चीन्हे बिना, तो लों जल बिन गोते खाए ॥१३॥

ए संसे सब समझाए के, कोई अंग करे उजास ।
सो गुर मेरा मैं सेवों ताए, सुध चित होए दास ॥१४॥

मैं तो खोजों सुध पार की, कोई न देवे बताए ।
मोह अहंकार के बीच में, सब इतहीं रहे उरझाए ॥१५॥

समझे बिना सुख पार को नाहीं, जो उदम करो कई लाख ।
तोलों प्रेम न उपजे पूरा, जो लों अंदर न देवे साख ॥१६॥

ए धोखे गुर सर्वग्यन[1] भानें, जिन पाया सब विवेक ।
बाहेर उजाला करके, आखिर देखावें एक ॥१७॥

महामत सो गुर कीजिए, जो बतावे मूल अंकूर ।
आतम अर्थ लगावहीं, तब पिया वतन हजूर ॥१८॥

॥प्रकरण॥२८॥चौपाई॥३२८॥

राग रामकली

संत जी सुनियो रे, जो कोई हंस परम ।
मैं पूछत हों परआतमा, मेरा भानो एही भरम ॥१॥

जिन जानो विवादे पूछे, मैं जग्यासू करों खोज ।
जो लों धोखा न मिटे, साधो तो लों न छूटे बोझ ॥२॥

कोई कहे ए भरम की बाजी, ज्यों खेलत कबूतर ।
तो कबूतर जो खेल के, सो क्यों पावें बाजीगर ॥३॥

कोई कहे ए ब्रह्मकी आभा, आभा तो आपसी भासे ।
तो ए आभा क्यों कहिए ब्रह्मकी, जो होत हैं झूठे तमासे ॥४॥

१. सर्वज्ञ, पूर्णज्ञानी ।

कोई कहे ए कछुए नाहीं, तो ए भी क्यों बनिआवे[1] ।
जो यामें ब्रह्म सत्ता न होती, तो अधखिन रहने न पावे ।।५।।

कोई कहे ए सबे ब्रह्म, तब तो अग्यान कछुए नाहीं ।
तो खट सास्त्र हुए काहे को, मोहे ऐसी आवत मन माहीं ।।६।।

कोई कहे ए पुरूख प्रकृती, मिल रचियो खेल एह ।
तो सूरज दृष्टे क्यों रहे अंधेरी, ए भी बड़ा संदेह ।।७।।

कोई कहे ए सबे सुपना, न्यारा खावंद है और ।
तो ए सुपना जब उड़ गया, तब खावंद है किस ठौर ।।८।।

ऊपर तले मांहें बाहेर, दसों दिसा सब माया ।
खट प्रमानथें ब्रह्म रहित है, सो क्यों कर दृढ़ाया ।।९।।

बुध तुरिया दृष्ट श्रवना, जो लों पोहोंचे मन ।
उतपन सारी आवटे[2], जो कछू कहिए वचन ॥१०॥

कोई कहे अद्वैत के कारन, द्वैत खोजी पर पर ।
अद्वैत सब्द जो बोलिए, तो सिर पड़े उतर ॥११॥

कोई कहे अद्वैत के आड़े, सब द्वैतै को विस्तार ।
छोड़ द्वैत आगे वचन, किने न कियो निरधार ॥१२॥

भोमका सात कही वसिष्टें, तामें पांचमी केवल विदेही ।
छठी को सब्द ना निकसे, तो सातमी दृढ़ क्यों होई ॥१३॥

पार वचन कहे कौन दूजा, सर्वग्यन को सब सूझे ।
ए संसे भानो आतम के, ज्यों परआतम बूझे ॥१४॥

परमहंस बिन कौन कहे, जिन तजे हैं तीन सरीर ।
कहे महामत महादिसा[3] धनी की, कोई कर द्यो जुदे खीर नीर ॥१५॥

।।प्रकरण।।२९।।चौपाई।।३४३।।

१. हों सके । २. नाशवंत । ३. परम मार्ग (मुख्य दिशा) ।

राग श्री

चीन्हे क्यों कर ब्रह्म को, ए तो गुन ही के अंग को विकार ।
बाजीगरें बाजी रची, मूल माया तें मोह अहंकार ।।१।।

जाको पेड़ प्रतिबिंब प्रकृती, पांच तत्व ही को आकार ।
मांहें खेले निरगुन व्यापक, लिए माया मोह अहंकार ।।२।।

लोक चौदे दसो दिस, सब नाटक स्वांग संसार ।
आवे नैन श्रवन मन वचन, ए सब माया मोह अहंकार ।।३।।

क्या दानव क्या देवता, क्या तिर्थंकर अवतार ।
ब्रह्मा विष्णु महेस लों, सो भी पैदा माया मोह अहंकार ।।४।।

अब औरन की मैं क्या कहूं, जो बड़कों का ए हाल ।
जल जैसे तरंग तैसे, उठे माया मोह अहंकार ।।५।।

जो बंध बांधे बाप ने, बेटे चले जाए तिन लार ।
जीव उरझे जाली छल की, ए सब माया मोह अहंकार ।।६।।

द्योहरे मसीत अपासरे, सब लगे माहें रोजगार ।
बाहेर देखावें बंदगी, मांहें माया मोह अहंकार ।।७।।

जुदे जुदे भेख दरसनी, अनेक इष्ट आचार ।
धरे नाम धनी के जुदे जुदे, पैंडे चलें माया मोह अहंकार ।।८।।

खोज खोज खट सास्त्र हुए, अनेक वचन विस्तार ।
करम उपासना ग्यान की, बानी थकी मांहें माया मोह अहंकार ।।९।।

सब्द सुनें एक दूजे के, फेर फेर करें विचार ।
किव कर नाम धरें अपने, सब मगन माया मोह अहंकार ॥१०॥

ए बानी कथें सब अगम, मांहें गुझ सब्द हैं पार ।
सो ए कैसे कर समझहीं, मोहोरे माया मोह अहंकार ॥११॥

यामें जीव दोए भाँत के, एक खेल दूजे देखनहार ।
पेहेचान न होवे काहू को, आड़ी पड़ी माया मोह अहंकार ॥१२॥

ए खेल किया जिन खातिर, सो तो कोई हैं सिरदार ।
जो लों न होवें जाहेर, तो लो उड़े न माया मोह अहंकार ॥१३॥

ऐसे खेल अनेक एक खिन में, करे अग्याएँ करतार ।
सो करतार ठौर क्यों पाइए, जो लों उड़े न माया मोह अहंकार ॥१४॥

महामत होसी सब जाहेर, मिले अछरातीत भरतार ।
वैराट होसी नेहेचल, उड़्यो माया मोह अहंकार ॥१५॥

॥प्रकरण॥३०॥चौपाई॥३५८॥

राग श्री सोरठ

कलि में देख्या ग्यान अचंभा ।

बातन मोहोल रचें अति सुंदर, चेजा[1] जिमी न थंभा[2] ॥१॥

अंग न इंद्री अंतस्करन वाचा, ब्रह्म न पोहोंचे कोए ।
यों कहें साख पुरावें श्रुती, फेर कहें अनुभव होए ॥२॥

अहंब्रह्म अस्मी होए के बैठें, तत्वमसी और कहावें ।
स्वामी सिष्य न क्रिया करनी, यों महा वाक्य दृढ़ावें ॥३॥

खट प्रमान से ब्रह्म है न्यारा, सो कहें अद्वैत हम आप ।
माया ईश्वर त्रिगुन हमथें, हमहीं रहे सबमें व्याप ॥४॥

ईश्वर फिरे न रहें त्रिगुन, त्रिगुन चलें जीव भेले ।
ए कहावें ब्रह्म सब पैदास याथें, और जात हैं आप अकेले ॥५॥

कूवत[3] कछुए न पाइए मांहें, खेलें मोह में परे परवस मन ।
भोमका एक न चढ़ सकें, कहावें ईश्वर को महाकारन ॥६॥

तीन सरीर उड़ावें मुख थें, आप होत हैं ब्रह्म ।
पूछे तें कहें हम भोगवे, प्रालब्ध[4] जो करम ॥७॥

१. छज्जा २. स्थंभ (आधार) । ३. ताकत, शक्ति । ४. भाग्य ।

माया ईश्वर तें होत हैं न्यारे, न्यारे होत तीन देह ।
अद्वैत को प्रालब्ध लगावें, देख्या ग्यान बड़ा ब्रह्म एह ।।८।।

ऐसे कोट ब्रह्मांड होवें पल में, अद्वैत के हुकम ।
ए कहावें ब्रह्म सुध नहीं ब्रह्म घर की, द्वैत अद्वैत नहीं गम ।।९।।

सुकमुनी बानी बोल्या वेदांत, सो इनों क्यों समझी जाए ।
होसी प्रगट प्रकास निज बुध का, सो महामत देसी बताए ॥१०॥

।।प्रकरण।।३१।।चौपाई।।३६८।।

राग श्री गौड़ी

भाई रे ब्रह्मग्यानी ब्रह्म देखलाओ, तुम सकल में सांई देख्या ।
ए संसार सकल है सुपना, तो तुम पारब्रह्म क्यों पेख्या ।।१।।

सत सुपने में क्योंकर आवे, सत सांई है न्यारा ।
तुम पारब्रह्म सों परच्या[1] नाहीं, तो क्यों उतरोगे पारा ।।२।।

तुम बैकुंठ जमपुरी एक कर देखी, तब तो सास्त्र पुरान सब भान्या ।
सुकदेव व्यास के वचन बिना, कौन कहे मैं जान्या ।।३।।

यामें बड़भागी भए वल्लभाचारज, जाको सुकदेव का गुन भाया ।
उत्तम टीका कीन्ही दसम की, तो इन ए फल पाया ।।४।।

बिना पुरान प्रकास न होई, सास्त्र बिना कौन माने ।
एक अखर को अर्थ न आवे, तो ब्रह्म भरम में आने ।।५।।

काल आवत कबूं ब्रह्म भवन में, तुम क्यों न विचारो सोई ।
अखंड सांई जो यामें होता, तो भंग ब्रह्मांड को न होई ।।६।।

तुम केवल काल तत्व ग्यानी, ब्रह्म ग्यानी भए ।
सब दरवाजे खोजे साधो, पर सुन्य छोड़ कोई ना गए ।।७।।

इन सुपने में सब कोई भूल्या, किनहूं न देख्या पार ।
बिध बिध सों भवसागर थाह्या[2], सुकदेव व्यास पुकार ।।८।।

१. परिचय । २. खोजा ।

यामें प्रेम लछन एक पारब्रह्म सों, एक गोपियों ए रस पाया ।
तब भवसागर भया गौपद बछ, विहंगम पैंडा बताया ।।९।।
कई दरवाजे खोजे कबीरें, बैकुंठ सुन्य सब देख्या ।
आखिर जाए के प्रेम पुकार्‌या, तब जाए पाया अलेखा ॥१०॥
भाई रे ब्रह्मग्यानी ब्रह्म सुपने में, महामत कहे यों पाइए ।
पार निकस के पूरन होइए, तब फेर सब दृष्टें देखाइए ॥११॥

।।प्रकरण।३२।।चौपाई।।३७९।।

राग श्री गौड़ी

रे जीव जी जिन करो यासों नेहड़ा ।
जाको सनमुख नाहीं सरम, तासों नाहीं मिलवे को धरम ।
ए तो भुलवनी कोई भरम, कोहेड़ा सों लाग्यो करम ।।१।।
नामै जाको प्रपंच, तिन सबको मूल सरीर ।
या बन थें बाग विस्तर्‌यो, जानो भरिया मृगजल नीर ।।२।।
रे जीव सरीर मंदिर सोहामनों, चौदे खूने रे अवास ।
इनके भरोसे जे रहे, ते निकस चले निरास ।।३।।
खास छज्जे गोख जालियां, यामें केती मिलाई धात ।
संधो संध समारिया, मिने हिकमत कई हिकात ।।४।।
मेहेनत करी केती या पर, बिध बिध बांधे बंध ।
जानिए सदा नेहेचल, ए रच्यो ऐसी सनंध ।।५।।
गुन पख अंग इंद्रियां, सबके जुदे जुदे स्वाद ।
तरफ अपनी खैंचहीं, खेलत मिने विवाद ।।६।।
या बन थें बाग रंग फूलिया, जानें लेसी सुख अपार ।
अधबीच उछेदिया[1], सो करता गया पुकार ।।७।।

१. उजाड़ देना (बिगाड देना) ।

मोहे बाग रंग मंदिरों, सेजड़िएँ सोए करार ।
सो काढ़े कंठ पकड़ के, गए कल कलते नर नार ।।८।।

ए अनमिलती सों न मिलिए, जाको सांचो नाहीं संग ।
नाहीं भरोसो खिन को, ज्यों रैनी को पतंग ।।९।।

क्यों रे नेहड़ा यासों कीजिए, जो मिलके करे भंग ।
एक रस होइए क्यों तिनसे, नेहेचल नहीं जाको रंग ॥१०॥

ऐसे कई उजाड़े मंदिर, ए सब को देवे छेह ।
मिलापै में रंग बदले, अधबीच तोड़े नेह ॥११॥

रे जीव सरीर रची सेजड़ी, इत आवे नींद अपार ।
ए सूतेही पटकावहीं, पुकार न पीछे बहार[1] ॥१२॥

यासों तो मनड़ो माने नहीं, जो छोड़े ए अंत्रीयाल[2] ।
उरझाए आप न्यारी रहे, जीव को बाँध देवे मुख काल ॥१३॥

रे जीव नीके जानिए ए भुलवनी, इत भूले सब कोए ।
या रंग रसें जे भूलहीं, तिन करड़ी कसौटी होए ॥१४॥

कांटे चुभे दुख पाइए, सेहे न सके लगार ।
पर होत है मोहे अचंभा, ए क्यों सेहेसी जम मार ॥१५॥

इन गफलत के घर में, पड़ेगी बड़ी अगिन ।
पीछे लाख चौरासी देह में, जलसी रात और दिन ॥१६॥

ए देखी अजाड़ी आँखां खोल के, याकी तो उलटी सनंध ।
ए मोहड़ा लगावे मीठड़ा, पीछे पड़िए बड़े फंद ॥१७॥

ए अंधेरी है विकट, जाहेर रची जम जाल ।
ए पेहेले देखावे सुख सीतल, पीछे जाले अगिन की झाल ॥१८॥

ए धुतारी को न धीरिए[3], जो पलटे रंग परवान ।
ए विश्व बधे वैराट को, सो भी निगलसी निरवान ॥१९॥

१. खबर, सम्भाल । २. अधर, अधबीच । ३. विश्वास करना ।

ए सब मोहे इन मोहनी रे, पर इन बांध्यो न कासों मन ।
जीव को यातें बिछड़ते, बड़ी लागी दाझ अगिन ॥२०॥

॥प्रकरण॥३३॥चौपाई॥३९९॥

अब देह की तरफ का जवाब

रे जीव जी तुमें लागी दाझ मुझ बिछड़ते, पर मैं खाक हुई तुम बिन ।
तुम मोही सों न्यारे भए, मोहे राखी नहीं किन खिन ॥१॥

मेरी सेवा जो करते साथीड़े, फूलड़े बिछावते सेज ।
सीतल वाए मोहे ढोलते, तिन जारी रेजा रेज ॥२॥

एक बाल टूटे दुख पावते, तिन जारी ले खोरने[1] हाथ ।
मनुऐं उतारे या बिध, मेरे सोई संगी साथ ॥३॥

मैं पाले प्यार करके, सो वैरीड़े भए तिन ताल ।
मोसों तो राख्यो ए सनमंध, तुमें डारे ले जम जाल ॥४॥

तुम बंध पड़े जिन कारने, किया आप सों ज्यों ।
मुझ जैसे होए मोहे छेतरी, तुमको दई अगिन त्यों ॥५॥

मैं तो आई तुम खातिर, तुम जानी नहीं सुपन ।
मैं तो सुपना हो गई, अब दुखड़े देखो चेतन ॥६॥

पेहेले क्यों न संभारिए, काहे को पड़िए जम फांस ।
लाख चौरासी अगनी, तित जलिए न कीजे बास ॥७॥

मोसों पेहेचान ना कर सके, मेरा मेला तो अधखिन होए ।
मेरी तो पेहेचान जाहेर, मुझे जाती देखे सब कोए ॥८॥

तुम जान बूझ मोहे मोहीसों, छोड़ के नेहेचल सुख ।
मैं तो आई भले अवसर, पर भूले सो पावे दुख ॥९॥

ए अवसर क्यों भूलिए, जित पाइए सुख अखंड ।
या घर बिना सो ना मिले, जो ढूंढ़ फिरो ब्रह्मांड ॥१०॥

१. मरने पर, चिता में जलाते समय हाथ में बांस ले कर खोपड़ी फोड़ते है ।

इन पिंड में ब्रह्म दृढ़ किया, नेहेचल सुख परवान ।
अब खिन में घर देखिए, ऐसा समे न दीजे जान ॥११॥

और उपाय कई करो, पर पाइए न या घर बिन ।
अंदर जागके चेतिए, ए अवसर अधखिन ॥१२॥

कैसे कर याको खोजिए, ए तो कोहेड़ा आकार ।
ए ढूंढ़्या बोहोतों कई बिध, पर किनहूँ न पाया पार ॥१३॥

बाहेर निकसो तो आप नहीं, और मांहें तो नरक के कुंड ।
ब्रह्म तो यामें न पाइए, ए क्यों कहिए ब्रह्म घर पिंड ॥१४॥

पवन जोत सब्दा उठे, नाड़ी चक्र कमल ।
इत कैयों कई बिध खोजिया, यामें ब्रह्म नहीं नेहेचल ॥१५॥

पारब्रह्म क्यों पाइए, ततखिन कीजे उपाए ।
कई ढूंढ़े मांहें बाहेर, बिना सतगुर न लखाए ॥१६॥

अब संग कीजे तिन गुर की, खोज के पुरूख पूरन ।
सेवा कीजे सब अंगसों, मन कर करम वचन ॥१७॥

सो संग कैसे छोड़िए, जो सांचे हैं सतगुर ।
उड़ाए सबे अंतर, बताए दियो निज घर ॥१८॥

पाइए सुध पूरन से, पैंडा बतावें पार ।
सब्द जो सारे सूझहीं, सब गम पड़े संसार ॥१९॥

पांच तत्व पिंड में हुए, सोई तत्व पांच बाहेर ।
पांचो आए प्रले मिने, सब हो गयो निराकार ॥२०॥

ए पांचो देखे विध विध, ए तो नहीं थिर ठाम ।
यामें सो कैसे रहे, नेहेचल जाको नाम ॥२१॥

पारब्रह्म जित रेहेत हैं, तित आवे नाहीं काल ।
उतपन सब होसी फना, ए तो पांचों ही पंपाल ॥२२॥

यामें अंतर वासा ब्रह्म का, सो सतगुर दिया बताए ।
बिन समझे या ब्रह्म को, और न कोई उपाए ॥२३॥

आंकड़ी अंतरजामी की, कबहूँ न खोली किन ।
आद करके अब लों, खोज थके सब जन ॥२४॥

ए पूरन के प्रकास थें, खुल गया अंतर सब ।
सो क्यों रेहेवे ढांपिया, प्रगट होसी अब ॥२५॥

जिनको सब कोई खोजहीं, ए खोली आंकड़ी तिन ।
तो इत हुई जाहेर, जो कारज है कारन ॥२६॥

घर ही में न्यारे रहिए, कीजे अंतरमें बास ।
तब गुन बस आपे होवहीं, गयो तिमर सब नास ॥२७॥

या बिध मेला पिउ का, पीछे न्यारे नहीं रैन दिन ।
जल में न्हाइए कोरे रहिए, जागिए मांहें सुपन ॥२८॥

या सुपन तें सुख उपज्यो, जो जाग के कीजे विचार ।
आतम भेली परआतमा, सुपन भेलो संसार ॥२९॥

इन बिध लाहा लीजिए, अनमिलती का रे यों ।
सुखड़ा दिया धुतारिए, याको बुरी कहिए क्यों ॥३०॥

जो सुख याथें उपज्यो, सो कह्यो न किनहूँ जाए ।
पात्र होए पूरा प्रेम का, तिन का रस ताही में समाए ॥३१॥

ए वतनी सों गुझ कीजिए, जो खैंचे तरफ वतन ।
प्रेमै में भीगे रहिए, पिउ सों आनंद घन ॥३२॥

महामत पिया संग विलसहीं, सुख अखंड इन पर ।
धंन धंन प्रपंच ए हुआ, धंन धंन सो या मंदिर ॥३३॥

॥प्रकरण॥३४॥चौपाई॥४३२॥

राग सिंधुड़ा

वालो विरह रस भीनों रंग विरहमां रमाड़तो, वासना रूदन करे जल धार ।
आप ओलखावी अलगो थयो अमथी, जे कोई हुती तामसियों सिरदार ।।१।।
कलकली कामनी वदन विलखाविया, विश्वमां वरतियो हा हा कार ।
उदमाद[१] अटपटा अंग थी टालीने, माननी सहुए मनावियो हार ।।२।।
पतिव्रता पल अंग थाए नहीं अलगियो, न कांई जारवंतियो विना जार[२] ।
पात्रियो पिउ थकी अमें जे अभागणियों, रहियो अंग दाग लगावन हार ।।३।।
स्या रे एवा करम करया हता कामनी, धाम मांहें धणी आगल आधार ।
हवे काढ़ो मोह जल थी बूडती[३] कर ग्रही, कहे महामती मारा भरतार ।।४।।

।।प्रकरण।।३५।।चौपाई।।४३६।।

हांरे वाला रल झलावियो रामतें रोवरावियो, जुजवे पर्वतों पाड़्या रे पुकार ।
रणवगडा मांहें रोई कहे कामनी, धणी विना धिक धिक आ रे आकार ।।१।।
वेदना विखम रस लीधां अमें विरहतणां, हवे दीन थई कहूं वारंवार ।
सुपनमां दुख सह्या घणां राममां, जागतां दुख न सेहेवाए लगार ।।२।।
दंत तरणां लई तारूणी तलफियो, तमें बाहो दाहो दीन दातार ।
खमाए नहीं कठण एवी कसनी, राखो चरण तले सरण साधार ।।३।।
हवे हारया हारया हूं कहूं वार केटली, राखो रोतियो करो निरमल नार ।
कहे महामती मेहेबूब मारा धणी, आ रे अर्ज रखे हाँसीमां उतार ।।४।।

।।प्रकरण।।३६।।चौपाई।।४४०।।

हांरे वाला बंध पड़्या बल हरया तारे फंदड़े, बंध विना जाए बांधियो हार ।
हंसिए रोइए पड़िए पछताइए, पण छूटे नहीं जे लागी लार कतार ।।१।।
जेहेर चढ़्यो हाथ पांउं झटकतियो, सरवा अंग साले कोई सके न उतार ।
समरथ सुखथाय साथने ततखिण, गुणवंता गारूडी[४] जेहेर तेहेने तेणी विधें झार ।।२।।

१. प्रेम, उन्माद । २. यार । ३. डूबती । ४. झाड़ने फूंकनेवाला, ओझा ।

मांहें धखे दावानल दसो दिसा, हवे बलण[1] वासनाओं थी निवार[2] ।
हुकम मोहथी नजर करो निरमल, मूल मुखदाखी विरह अंग थी विसार ।।३।।
छल मोटे अमने अति छेतरया, थया हैया झांझरा[3] न सेहेवाए मार ।
कहे महामती मारा धणी धामना, राखो रोतियों सुख देयो ने करार ।।४।।

।।प्रकरण।।३७।।चौपाई।।४४४।।

केम रे झंपाए अंग ए रे झालाओ, वली वली वाध्यो विख विस्तार ।
जीव सिर जुलम कीधो फरी-फरी, हठियो हरामी अंग इंद्री विकार ।।१।।
झांप झालाओ हवे उठतियो अंगथी, सुख सीतल अंग अंगना ने ठार ।
बाल्या वली वली ए मन ए कबुधें, कमसील काम कां कराव्या करतार ।।२।।
गुण पख इंद्री वस करी अबलीस ने, अंगना अंग थाप्यो दई धिकार ।
अर्थ उपले एम केहेवाइयो वासना, फरी एणे वचने दीधी फिटकार ।।३।।
मांहेले माएने जोपे ज्यारे जोइए, त्यारे दीधी तारूणी तन तछकार ।
कलकली महामती कहे हो कंथजी, एवा स्या रे दोष अंगनाओं ना आधार ।।४।।

।।प्रकरण।।३८।।चौपाई।।४४८।।

हांरे वाला कांरे आप्या दुख अमने अनघटतां, ब्राधलगाडी विध विध ना विकार ।
विमुख कीधां रस दई विरह अवला[4], साथ सनमुख मांहें थया रे धिकार ।।१।।
अनेक रामत बीजी हती अति घणी, सुपने अग्राह[5] ठेले संसार ।
उघड़ी आंख दिन उगते एणे छले, जागतां जनम रूडा खोया आवार ।।२।।
सनमुख तमसूं विरह रस तम तणो, कां न कीधां जाली बाली अंगार ।
त्राहि त्राहि ए वातों थासे घेर साथमां, सेहेसूं केम दाग जे लाग्या आकार ।।३।।
विरह थी विछोडी दुख दीधां विसमां, अहनिस निस्वासा अंग उठे कटकार ।
दुख भंजन सहु विध पिउ जी समरथ, कहे महामती सुख देंण सिणगार ।।४।।

।।प्रकरण।।३९।।चौपाई।।४५२।।

१. जलन । २. मुक्त करो । ३. छलनी जैसा । ४. उलटा । ५. ना ग्रहण करने योग्य ।

हांरे वाला अगिन उठे अंग ए रे अमारड़े, विमुख विप्रीत कमर कसी हथियार ।
स्वाद चढ्या स्वाम द्रोही संग्रामें, विकट बंका कीधा अमें आसाधार ।।१।।

कुकरम कसाब[1] जुध कई करावियां, पलीत अबलीस अम मांहें बेसार ।
जागतां दिन कई देखतां अमने छेतरया, खरा ने खराब ए खलक खुआर ।।२।।

ओलखी तमने अमें जुध कीधां तमसूं, मन चित बुध मोह ग्रही अहंकार ।
ए विमुख वातों मोटे मेले वंचासे, मलसे जुथ जहां बारे हजार ।।३।।

कहे महामती हूं गांऊं मोहोरे थई, पण विमुख विधो वीती सहु मांहें नर नार ।
धाम मांहें धणी अमें ऊंचूं केम जोईसूं, पोहोंचसे पवाड़ा[2] परआतम मोंझार ।।४।।

।।प्रकरण।।४०।।चौपाई।।४५६।।

राग श्री

करनी तुमारी मेरी मैं तौली, जैसे सत असत ।
हो धनी मेरे, एती है तफावत ।।१।।

पिया ऐसी निपट मैं क्यों भई, कठिन कठोर अति ढीठ ।
श्री धाम धनी पेहेचान के, फेर फेर देत मैं पीठ ।।२।।

अंदर परदा उड़ाइया, तो भी न बदल्या हाल ।
नकस न मिट्यो मोह मूल को, ताथें नजरों न नूरजमाल ।।३।।

इन इंद्रियन की मैं क्या कहूं, ए तो अवगुन हीं की काया ।
इन से देखूं क्यों साहेब, एही भई आड़ी माया ।।४।।

निरमल नजरों न आवहीं, ले बैठी संग चंडाल ।
उपजत ऐसी अंगथें, उतारूं उलटी खाल ।।५।।

सब अंग काट चीरा करूं, मांहें भरों मिरच और लून ।
कई कोट बेर ऐसी करूं, तो भी न छूटे ए खून ।।६।।

हैड़े में ऐसी उठत, सब अंग करूं टूक टूक ।
हड्डियां सब जुदी करूं, भान करूं भूक भूक ।।७।।

१. कसाई । २. व्यथित (लज्जित) होना ।

मैं होत सरमिंदी साथ में, ए क्यों ए न जावे दुख ।
जब जाग बैठूं आगे धनी, तब क्यों देखूं सनमुख ।।८।।

आंखां क्यों उठाऊंगी, मुझे मारेगी बड़ी सरम ।
ऐसी कबूं किन न करी, सो मैं किए चंडाल करम ।।९।।

रोम रोम कई कोट अवगुन, ऐसी मैं गुन्हेगार ।
ए तो कही मैं गिनती, पर गुन्हे को नाहीं सुमार ॥१०॥

जेते कहे मैं अवगुन, तेते हर रोम दाग ।
सो हर दम आतम को लगे, तब मैं बैठूं जाग ॥११॥

जाको गिनती मैं अपने, सोई देखे दुस्मन ।
देखे देखाए तो भी ना छूटे, कोई ऐसी अग्यां बल कुंन ॥१२॥

रोम रोम सूली चढूं, सब अंग निकसे फूट ।
ऐसी करूं जो आप से, तो भी अवगुन एक ना छूट ॥१३॥

ए नाहीं अवगुन और ज्यों, मेरे तो लेप बजर ।
ए बिध सोई जानहीं, जिनकी अंतर खुली नजर ॥१४॥

ए लेप बज्र की मैं क्या कहूं, ए अवगुन सब्दातीत ।
धनी आप दे करी आपसी, एही पिया की रीत ॥१५॥

धनी जी के गुन मैं क्या कहूं, इन अवगुन पर एते गुन ।
महामत कहे इन दुलहे पर, मैं वारी वारी दुलहिन ॥१६॥

।।प्रकरण।।४१।।चौपाई।।४७२।।

राग श्री काफी

मीठडा मीठा रे, मूने वचनिएं का वाहो[1] ।
मीठा ते मुखना लऊं मीठडा, कां प्रीतडी करीने परा थाओ ।।१।।

सनेह सनमंधडो समझावीने, अंतराय आडी टाली ।
हवे अधखिण विरह सही न सकूं, मारे न आवे अवसरियो वाली ।।२।।

१. बहलाना ।

हवे विलखूं छूं वाला विना, हूँ तो प्रेम नी बांधी पिड़ाऊं ।
कां अलगा आप ग्रहीने ऊभा, हूँ निस दिवस फड़कला खांऊं ।।३।।
हवे कहोने वालाजी केम करूं, केणी पेरे रेहेवाय ।
एम करता इन्द्रावती ने मंदिर पधारया, मारे आनंद अंग न माय ।।४।।

।।प्रकरण।।४२।।चौपाई।।४७६।।

विनता विनवे रे, पिउजी रसिया तमें केहेवाओ ।
तो एकलड़ा अमने मूकी, अलगा केम करी थाओ ।।१।।
जो अलवेला एवा तमें, तो मंदिरिऐं न आवो केम म्हारे ।
हूं माननी मान मूकी केम कहूं, पण बोलड़े बंधाणी छूं तारे ।।२।।
तूं तो मूने जाणे छे जोपे, में तो घणी खीदड़ी खुदावी ।
अनेक विनवणी कीधी तें, तो हूं तारे वस आवी ।।३।।
हवे तो सर्वे में सोंप्यूं तुझने, मूल सनमंध सुध जोई ।
कहे इंद्रावती मुझ विना, तूंने एम वस न करे बीजो कोई ।।४।।

।।प्रकरण।।४३।।चौपाई।।४८०।।

म्हारा वस कीधल वाला रे, अमथी अलगा केम करी थासो ।
हूं तो एवी नहीं रे सोहाली[1], जे वचनिऐं वहासो[2] ।।१।।
ए तो नहीं अटकलनी ओलखांण, जे ततखिण रंग पलटाओ ।
सनमंधीनों रंग नेहेचल साचो, जिहां हूं तिहां तमें आवो ।।२।।
हवे अधखिण एक न मूकूं अलगा, प्रीत पेहेलानी ओलखाणी ।
साची सगाई कीधी प्रगट, सचराचर संभलाणी ।।३।।
प्रेम विनोद विलास माया मांहें, सुफल फेरो एम कीजे ।
अखण्ड आनंद सदा इंद्रावती घरे, पूरण सुख लाहो लीजे ।।४।।

।।प्रकरण।।४४।।चौपाई।।४८४।।

१. सीधी । २. ठगे जाना, बातों में आना ।

राग श्री काफी

आवोजी वाला म्हारे घेर, आवो जी वाला ।
एकलडी परदेसमां, मूने मूकीने कां चाल्या ।।१।।
मूने हती नींदरडी, तमे सूती मूकी कां राते ।
जागी जोऊं तां पिउजी न पासे, पछे तो थासे प्रभाते ।।२।।
कलकली[1] ने कहूं छूं तमनें, आवजो आणे खिणे ।
म्हारा मनना मनोरथ पूरजो, इंद्रावती लागे चरणें ।।३।।

।।प्रकरण।।४५।।चौपाई।।४८७।।

प्रीत प्रगट केम कीजिए, कीजिए तो छानी[2] छिपाए, मेरे पिउजी ।
तूं तो निलज नंदनो कुमार, मेरे पिउ जी ।।१।।
तूं देख भयो मोहे बावरो, मैं कुलवधुआ नार ।
तूं रोक रह्यो मोहे राह में, घड़ी भई दोए चार ।।२।।
गलियन में दुरजन देखे, तोमें नहीं विचार ।
तूं कामी कछू ना देखही, पर सासुड़ी दे मोहे गार ।।३।।
कर जोरे कुच मरोरे, अंगिया नखन विडार ।
अधुर न छोड़े दंत सों, करेगो कहा अब रार ।।४।।
तूं बालक नेह न बूझहीं, मैं बरज्यो केतीक वार ।
मैं मेरो कियो पाइयो, अब कासों करों पुकार ।।५।।
सारी फारी कंठसर टोरी, टोरयो नवसर हार ।
अब घर कैसे जाइए, उलटाए दियो सिनगार ।।६।।
अब मिल रही महामती, पिउ सों अंगों अंग ।
अछरातीत घर अपने, ले चले हैं संग ।।७।।

।।प्रकरण।।४६।।चौपाई।।४९४।।

१. बिलख बिलख कर । २. छिपा कर, एकान्त में ।

राग श्री गौरी

खोज थके सब खेल खसमरी ।
मन ही में मन उरझाना, होत न काहू गमरी ।।टेक ।।१।।
मन ही बांधे मन ही खोले, मन तम मन उजास ।
ए खेल सकल है मन का, मन नेहेचल मन ही को नास ।।२।।
मन उपजावे मन ही पाले, मन को मन ही करे संघार ।
पांच तत्व इंद्री गुन तीनों, मन निरगुन निराकार ।।३।।
मन ही नीला मन ही पीला, स्याम सेत सब मन ।
छोटा बड़ा मन भारी हलका, मन ही जड़ मन ही चेतन ।।४।।
मन ही मैला मन ही निरमल, मन खारा तीखा मन मीठा ।
एही मन सबन को देखे, मन को किनहूं न दीठा ।।५।।
सब मन में ना कछू मन में, खाली मन मनही में ब्रह्म ।
महामत मन को सोई देखे, जिन दृष्टे खुद खसम ।।६।।

।।प्रकरण।।४७।।चौपाई।।५००।।

राग केदारो

खिन एक लेहु लटक भंजाए ।
जनमत ही तेरो अंग झूठो, देखतहीं मिट जाए ।।१।।
हे जीव निमख के नाटक में, तूं रह्यो क्यों बिलमाए ।
देखतहीं चली जात बाजी, भूलत क्यों प्रभू पाए ।।२।।
आपको पृथीपति कहावे, ऐसे केते गए बजाए[१] ।
अमरपुर[२] सिरदार[३] कहिए, काल न छोड़त ताए ।।३।।
जीव रे चतुरमुख[४] को छोड़त नाहीं, जो करता सृष्ट केहेलाए ।
चारों तरफों चौदे लोकों, काल पोहोंच्यो आए ।।४।।
पवन पानी आकास जिमी, ज्यों अगिन जोत बुझाए ।
अवसर ऐसो जान के, तूं प्राणपति लौ लाए ।।५।।

१. बाजे - गाजे (वाद्य यन्त्र) के साथ । २. इन्द्रपुरी । ३. स्वर्ग का राजा इन्द्र । ४. ब्रह्माजी ।

देखन को ए खेल खिन को, लिए जात लपटाए ।
महामत रूदे रमे तांसों, उपजत जाकी इछाए ।।६।।

।।प्रकरण।।४८।।चौपाई।।५०६।।

राग देसाख

बाई रे वात अमारी हवे कोण सुणें, अमें गेहेलाने मलया ।
एहनो नेहडो सुणीने हूं तो घणुऐं नाठी, पणसूं कीजे जे पांणें[1] पड्या ।।१।।

हूं मां हुती चतुराई त्यारे पांचमां पुछाती, ते चितडा अमारा चलया ।
मान मोहोत[2] लज्या गई रे लोपाई, अमें माणस मांहें थी टलया ।।२।।

माणस होए ते तो अमने मां मलजो, जो तमे गेहेलाइए हलया ।
ओल्या वारसे वढसे खीजसे तमने, तोहे आवसो ते आंही पलया ।।३।।

गेहेले वालें अमने कीधां गेहेलड़ा, मलीने गेहेलाइए छलया ।
जात कुटमथी जूआ थया, हद छोडी वेहदमां भलया ।।४।।

देखीतां सुखड़ा में तो नाख्या उडाडी, दुस्तर दुखें न बलया ।
एहेनी गेहेलाइए अमने एवा कीधां, जईने अछरातीतमां गलया ।।५।।

बाई रे गिनान सब्द गम नहीं नवधाने, वेद पुराणें नव कलया ।
ए वात गेहेलड़ी करे रे महामती, मारे अखंड सुख फूले फलया ।।६।।

।।प्रकरण।।४९।।चौपाई।।५१२।।

बाई रे गेहेलो वालो गेहेली वात करे रे, एहने कोई तमें वारो[3] ।
दुरजन देखतां अमने बोलावे, निलज ने धुतारो ।।१।।

नित उठी आंगनडे ऊभो, आलज[4] करे अमारी ।
लोक मांहें अमें लज्या पामूं, हूं कुलवधुआ नारी ।।२।।

नासंती क्यांहें न छूटूं ए थी, आड़ज[5] बांधे आवी[6] ।
हूं जांणूं रखे सासुडी सांभले, थाकी कही केहेवरावी ।।३।।

१. पीछे । २. मरयादा । ३. रोको, समझाओ । ४. छेड़ छाड । ५. रुकावट । ६. मिलना (खड़ा रहना) ।

वारतां वलगतां वाले, जोरे सांईड़ा लीधां ।
कहे महामती सुणो रे सखियो, वाले एणी पेरे गेहेलडा कीधां ।।४।।

।।प्रकरण।।५०।।चौपाई।।५१६।।

राग धनाश्री

आज वधाई वृज घर घर, प्रगट्या श्री नंद कुमार ।
दूध दधी ऊमर[1] धोए, तोरण बांधे वृजनार ।।१।।
एक बीजीने छांटे नांचे, उमंग अंग न माय ।
अनेक विधना बाजा रस बाजे, गृह गृह उछव थाय ।।२।।
लईने वधावा सांचरी, भवन भवन थी नार ।
गाए ते गीत सोहामणां, साजे छे सकल सिणगार ।।३।।
अबीर गुलाल उछालती आवे, छाया ना सूझे सूर ।
चाल चरण छवे नहीं भोमें, जाणे उमडयो सागर पूर ।।४।।
जुथ जुजवे जुवंतियों, उछरंगतियो अपार ।
उछव करती आवियो, बाबा नंदतणें दरबार ।।५।।
धसमसियो[2] मंदिरमां पेसे[3], माननी सर्वे धाए ।
नंद ने वधावो दई वल्या, मांडवे मंगल गाए ।।६।।
ब्राह्मण भाट गुणीजन चारण, मलया ते मांगण हार ।
निरत नटवा गंधर्व, राग सांगीत थेई थेई कार ।।७।।
नाद दुन्द पडछंदा पर्वतें, वरत्यो जय जय कार ।
नंद गोप सहु गेहेला हरखे, खोलावे भंडार ।।८।।
गाए गोधा अंन वस्तर पेहेराव्या, गोप सकल दातार ।
केहेने धन केहेने भूखन, नवनिध दे दे कार ।।९।।
ए लीला रे अखंड थई, एहनो आगल थासे विस्तार ।
ए प्रगट्या पूरण पार ब्रह्म, महामती तणों आधार ॥१०॥

।।प्रकरण।।५१।।चौपाई।।५२६।।

१. दहलीज, चौखट । २. भीड़ भड़ाका । ३. पैठे, घुसना ।

राग श्री

सतगुर मेरा स्याम जी, मैं अहनिस चरणें रहूं ।
सनमंध मेरा याही सों, मैं ताथें सदा सुख लहूं ।।१।।

ए जो माया लोक चौदे, सब त्रिगुन को विस्तार ।
ए मोह अहंतें उपजें, ताथें छूटत नहीं विकार ।।२।।

इत सास्त्र सब्द कई पसरे, ताको खोज करे संसार ।
वाचा निवृत्ति[1] मोह में, आड़ी भई निराकार ।।३।।

सुन्य निराकार पार को, खोज खोज रहे कई हार ।
बोहोतों बहुबिध ढूंढ़्या, पर किया न किने निरधार ।।४।।

सो बुधजीऐं सास्त्र ले, सबहीं को काढ़्यो सार ।
जो कोई सब्द संसार में, ताको भलो कियो निरवार[2] ।।५।।

जा कारन माया रची, सास्त्र भी ता कारन ।
खेल भी एही देखहीं, और अर्थ भी लिए इन ।।६।।

ए माया जाकी सोई जाने, क्यों कर समझे और ।
बुधजी के रोसन थें, प्रकास होसी सब ठौर ।।७।।

किल्ली ल्याए वतन थें, सब खोल दिए दरबार ।
माया से न्यारा घर नेहेचल, देखाया मोहजल पार ।।८।।

ब्रह्मसृष्ट जाहेर करी, बुधजीए इत आए ।
अछरातीत को आनन्द, सत सुख दियो बताए ।।९।।

सब्द सुनाए सुक व्यास के, मोहे खिन में कियो उजास ।
उपनिषद अर्थ वेद के, ए गुझ कियो प्रकास ॥१०॥

इनसें सुध मोहे सब भई, संसे रह्यो न कोए ।
बुधजी बिना इन मोह में, प्रकास जो कैसे होए ॥११॥

१. छुटकारा पाना । २. फैंसला ।

संगी जो अपने सनमंधी, सो भी गए मांहें भूल ।
तो क्यों समझें जीव मोह के, जाको निद्रा मूल ॥१२॥

पिया मोहे अपनी जान के, अन्तर दई समझाए ।
ना तो आद के संसे अब लों, सो क्योंकर मेट्यो जाए ॥१३॥

ए बीतक कहूं सैयन को, जाहेर देऊं बताए ।
मोहे जगाई पिया ने, मैं देऊं सबे जगाए ॥१४॥

ए खेल हुआ सैयों खातिर, और खातिर अछर ।
सबके मनोरथ पूरने, देखाए तीनों अवसर ॥१५॥

जब माया मोह न अहंकार, ना विस्तरे त्रिगुन ।
ए दिल दे के समझियो, कहूंगी मूल वचन ॥१६॥

तब खेल हम मांगया, सो देखाया दो बेर ।
तामें बृज में खेले पिया संग, बीच मोह के अंधेर ॥१७॥

काल माया देखी नींद में, आधी नींद माया जोग ।
ताथें देखाई जगाए के, इत लेसी सबको भोग ॥१८॥

इन लीला की जो आतमा, सो करसी सबे पेहेचान ।
आवत दौड़े अंकूरी, ए ताए मिलसी निसान ॥१९॥

अखंड सुख जाहेर कियो, मूल बुध प्रकासी ।
देत देखाई जैसे दुनियां, पर अछरातीत के वासी ॥२०॥

खेल किया पेहेले बृज में, खेल दूजा वृन्दाबन ।
उमेद रही तो भी नेक सी, ताथें एह उतपन ॥२१॥

बृज रास ए सोई लीला, सोई पिया सोई दिन ।
सोई घड़ी ने सोई पल, वैराट होसी धंन धंन ॥२२॥

सखी एक दूजी को ढूंढहीं, आई जुदी जुदी इन बेर ।
प्रेम प्यासी पिया की, लई जो विरहा घेर ॥२३॥

अब ए लीला क्यों छानी[1] रहे, सखियां मिली सब टोले ।
पल पल प्रकास पसरे, आगम ही आगम बोले ॥२४॥

ब्रह्मलीला ढांपी हती, अवतारों दरम्यान ।
सो फेर आए अपनी, प्रगट करी पेहेचान ॥२५॥

सो पेहेचान सबों पसराए के, देसी सुख वैराट ।
लौकिक नाम दोऊ मेट के, करसी नयो ठाट ॥२६॥

ए नित लीला बुध जी, करसी बड़ो विलास ।
दया भई दुनियां पर, होसी सबे अविनास ॥२७॥

सुर असुर ब्रह्मांड में, मिल कर गावसी ए सुख ।
इन लीला को जो आनंद, वरन्यो न जाए या मुख ॥२८॥

सब पर हुआ कलस, प्रेम आनंद भरपूर ।
महामत मोह अहं उड़यो, ऊग्यो अखंड वतनी सूर ॥२९॥

॥प्रकरण॥५२॥चौपाई॥५५५॥

राग श्री

धनी जी ध्यान तुमारे रे ।

धनी मेरे ध्यान तुमारे, बैठे बुधजी बरस सहस्त्र[2] चार ।
छे सै साठ बीता समे, दुनियां को भयो आचार ॥१॥

हिन्दू मुसलमान रे फिरंगी कई जातें, होदी बोदी जैन अपार ।
वादे सो ब्रोध बधारिया, करी अगनी उदेकार ॥२॥

कहावें धरम पंथ रे लड़ें मांहें वैरें, अंग असुराई को अधिकार ।
पसु पंखी साधू न छूटे काहूं, पुकार न काहूं बहार[3] ॥३॥

भाजे भजन रे बाजे उछव अटके, ढाहे[4] मंदिर हरिद्वार ।
सत छोड़ सूरों नीचा देखिया, कमर बांधी रही तरवार ॥४॥

१. छिपी । २. हजार । ३. खबर, सुध । ४. गिराना, ध्वंस करना ।

कसे साधू रे काहू भजन ना रह्या, कुली बरस्या जलते अंगार ।
धखयो दावानल दसो दिसा, ऐसा भवड़ा[1] हुआ भयंकर ।।५।।
मांस आहारी रे न दया डरे किनसे, ऐसा हुआ हाहाकार ।
बुधजी बिना वैराट में, ऐसो बरत्यो वेहेवार ।।६।।
आवसी धनी धनी रे सब कोई केहेते, आगमी करते पुकार ।
सो सत बानी सबों की करी, अब आए करो दीदार ।।७।।
कुरान पुरान रे वेद कतेबों, किए अर्थ सबे निरधार ।
टाली उरझन लोक चौदे की, मूल काढ़्यो मोह अहंकार ।।८।।
सुन्य निरगुन निरंजन, देखे वैकुंठ निराकार ।
अछर पार अछरातीत, प्रेम प्रकास्यो पार के पार ।।९।।
पेहेरयो बागो रे बांधी कमर, अश्व उजले भए अस्वार ।
होसी बड़ा मेला बरस एके, साथ होत सबे तैयार ॥१०॥

।।प्रकरण।।५३।।चौपाई।।५६५।।

राग श्री

हो साथ जी वेगे ने वेगे, वेगे ने मिलो रे सैयों समें रास को ।।टेक।।
कारज कारन की बात अति बड़ी, याको क्यों कहिए अवतार ।
रे साथ जी हुई अखंड निध पांचों भेली, कियो सो बड़ो विस्तार ।।१।।
धनी मैं अरधांग अछर मुझ माहीं, बुधजी बोले सो कई प्रकार ।
हुकम महंमद नूर ईसा भेला, कजा इमाम मेंहेंदी सिर मुद्दार ।।२।।
अंग समागम धनी के, हिरदे लियो सो सब विचार ।
साके सोले तोड़ी गुझ रहे, या दिन से कियो सो प्रगट पसार ।।३।।
आई नूरबुध वैराट माहीं, विश्व करी सो निरविकार ।
छोटे बड़े नर नार सबे मिल, रंगे गाऐं सो मंगल चार ।।४।।

१. बवंडर ।

काटे सो आउध असुरों के, पाड़ी पापीड़ा के सिर पर प्रहार ।
इने दुख दिए साध संत को, तो सेहेता है सिर पर मार ।।५।।

रूधी रूदे त्रिगुन त्रैलोकी, बैठा था करके अंधार ।
अब प्रगटी जोत तलेलागी आकासों, उड़ाए दियो जो थो धुसार[1] ।।६।।

जुद्ध दारूण अति जोर हुआ, तिमर[2] घोर झुंझार[3] ।
प्रकासवान खांडा धार बुधें, निरमल कियो संसार ।।७।।

पड़्या पड़छंदा पाताल आकासें, धरती धम धमकार ।
खल भल हुआ लोक चौदे, करत कालिंगा को संघार ।।८।।

घर घर उछव बाजे रस बाजे, चोहोटे चौवटे थेई थेईकार ।
पसु पंखी साधू कोई न दुखी, सुखे खेलें चरें चुगें करार ।।९।।

सत बरत्यो त्रिगुन त्रैलोकी, असत न रही लगार ।
काटी करम फांसी दुनियां की, पीछे निरमल किए सिरदार ॥१०॥

राई गौरी सावित्री जो कोई सती, सब धवल गावें नर नार ।
पुरूख दूजा कोई काहूं न कहावे, सबों भजिया कर भरतार ॥११॥

एक सृष्ट धनी भजन एकै, एक गान एक आहार ।
छोड़ के वैर मिले सब प्यार सों, भया सकल में जय जयकार ॥१२॥

मिलके साथ आवे दौड़ता, मिने सकुंडल सकुमार ।
निजधाम सें आई सखियां, जुथ चालीस सहस्त्र बार ॥१३॥

खेलें मिलके रास जागनी, भेलें इहां से चौबीस हजार ।
करसी लीला बरस दस तोड़ी, हाँस विलास आनन्द अपार ॥१४॥

बृजलीला लीला रास मांहें, हम खेले जान के जार ।
जागनी लीला जाग पेहेचान, पिउसों जान विलसे करतार ॥१५॥

सब्दातीत निध ल्याए सब्द में, मेट्यो सबन को अंधकार ।
तीसें सृष्ट विष्णु सौ बरसें, प्रेमें पीवेगा सब्दों का सार ॥१६॥

१. अग्यानता । २. कुहीड़ (घोर अंधकार) । ३. छा जाना ।

विष्णु को पोहोंचाए ठौर अछर हिरदे, बुधजी देएंगे खोल के द्वार ।
अखंड ब्रह्मांड बरस पचास पीछे, रहेसी हिरदे में खुमार ॥१७॥

किया जमा सब सब्दों का, धोए हाथ और हथियार ।
होसी नेहेचल सुख चौदे लोकों, हम देखे खेल कारन इन बार ॥१८॥

महामत जागसी साथ जी भेले, जहां बैठे मिने दरबार ।
हम उठ के आनंद करसी झीलना, हंस हंस करसी सिनगार ॥१९॥

तीन ब्रह्मांड लीला तीन अवस्था, खिनमें देखे खेले संग आधार ।
धनी मैं अरधांग साथ अंग मेरा, इन घर सदा हम नित विहार ॥२०॥

॥प्रकरण॥५४॥चौपाई॥५८५॥

राग श्री धवल

आए आगम बानी इत मिली, विश्व मुख करत बखान ।
कौल सबन के पूरन भए, आए सो पोहोंचे निसान ॥१॥

चेतो सबे सत वादियो, सुनियो सो सतगुर मुख बान ।
धनी मेरा प्रभु विश्व का, प्रगटिया परवान ॥२॥

आगमी सब खड़े हुए, दिन बोहोत रहे थे गोप ।
आए धनी मेले मिने, प्रगटी है सत जोत ॥३॥

पेहेले मंडल में मांगी मुझे, सो आए ब्याही इत ।
कौल किया लिख्या सास्त्रों में, सो आए पोहोंची सरत ॥४॥

मैं जो आई ब्याहन दुलहे को, दुलहा आए मुझ कारन ।
बांधे पालवसों पालव, पाट बैठे दुलहा दुलहिन ॥५॥

सत पर सत दोऊ पर्वत, तोरन बांधे हैं बंध ।
बिन थलिऐ विवाह हुआ, हाथों हाथ जोड़े मूल सनमंध ॥६॥

मंडल अखंड में मांडवो, चौरी थंभ रोपे हैं चार ।
सो थंभ थापे थिर कर, कहूं सो तिन को प्रकार ॥७॥

एक बृज दूजो रास को, दूजे दोए इन वैराट ।
चारों थंभों चौरी रची, रच्यो सो नेहेचल ठाट ।।८।।

एक बेर एक मांडवे, मौर बांधियो सीस ।
ब्याही बारे हजार को, और हजार चौबीस ।।९।।

तीन फेरे दुलहे पीछे फिरी, चौथे फेरे आगल भई ।
अब ए लीला सब गावसी, सब मिल करि है सही ॥१०॥

और कागद सब उड़ गए, उड़्यो सबों को अग्यान ।
पसरयो प्रकास जो पिउ को, ब्रह्म सृष्ट प्रगट भई पेहेचान ॥११॥

ठौर ठौर थाने दिए, मेला हुआ है मध देस ।
छत्रपति नमे नेहसों, राए राने पृथी के नरेस ॥१२॥

बैठे सिंघासन सिर छत्र, वैराट बरती है आन ।
मुकट मनी ढोलें चंवर, नवखंड घुरे[1] हैं निसान ॥१३॥

जोत जाग्रत बुध जोर हुई, सत बानी कियो है विस्तार ।
कालिंगा कुली मारिया, सत सुख बरत्यो संसार ॥१४॥

प्रहलाद युधिष्ठिर वसुदेव, बलि रूकमांगद हरिचंद ।
सगाल दधीच मोरध्वज, कसनी कर छूटे या फंद ॥१५॥

सतवादी नाम केते लेऊं, कई हुए तरन तारन ।
सत न छोड़या कई दुख सहे, सो या दिन के कारन ॥१६॥

जोगारंभ कर देह रखी, नवनाथ जाए बसे बन ।
सिध चौरासी और कई जोगी, सो भी कारन या दिन ॥१७॥

असुर केते कहूं पीर कई, केते कहूं पैगंमर ।
आए मिले इत सब कोई, जेता कोई भेख धर ॥१८॥

बरना बरन वादे लड़ते, ब्रोध न छोड़ता कोए ।
चाल असत की चलते, हिंदू मुसलमान दोए ॥१९॥

१. बजे है ।

बाघ बकरी एक संग चरें, कोई न करे किसी सों वैर ।
पसु पंखी सुखे चरें चुगें, छूट गयो सब को जेहेर ॥२०॥

सनमुख सब एक रस भए, भाग्यो सो विश्व को ब्रोध ।
घर घर आनंद उछव, कुली पोहोरो काढ़्यो सबको क्रोध ॥२१॥

धनी आए मेरे लाड़ पालने, वतन पार के पार ।
कारज कारन महाकारन से, न्यारी हों इन पिउकी नार ॥२२॥

ए बात पोहोंची जाए वैकुंठ, बुधजीऐं उड़ायो उनमान ।
सुक सिव सन ब्रह्मा नमे, नमे विष्णु लखमी नारायन ॥२३॥

मुक्त दई सब जीवों को, पावें पसु पंखी नर नार ।
होसी वैराट ए धंन धंन, सुख आनंद अखण्ड अपार ॥२४॥

ए नेक करी मैं इसारत, याको आगे होसी बड़ो विस्तार ।
थोड़े से दिन में देखोगे, वरतसी जय जयकार ॥२५॥

साथ सुनो एक वचन, आवे बाई सकुंडल सकुमार ।
रास खेल घर चलसी, भेले इन भरतार ॥२६॥

कहे महामत ए सो खेल, जो तुम मांग्या था चित दे ।
देख खेल हंस चलसी, घर बातां करसी ए ॥२७॥

॥प्रकरण॥५५॥चौपाई॥६१२॥

राग श्री बसंत

आरती

भई नई रे नवों खंडों आरती, श्री विजिया अभिनंद की आरती ।
प्रेम मगन होए उतारती, सखी आप पिया पर वारती ॥१॥

दुष्टाई सबों की संघारती, सुख अखंड आनंद विस्तारती ।
जन सचराचर तारती, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥२॥

सैयां सब सिनगार साजती, मिने सूरत पिया की विराजती ।
ए सोभा इतहीं छाजती, भई नई रे नवों खंडों आरती ।।३।।

झालर अगनित बाजे ले बाजती, ब्रह्मांड में नौबत गाजती ।
कलिजुग सैन्या सुन भाजती[१], भई नई रे नवों खंडों आरती ।।४।।

सप्तधात सुन्य मण्डल थाल, निरंजन जोत भई उजाल ।
झलहलिया[२] इत नूरजमाल, भई नई रे नवों खंडों आरती ।।५।।

पसरी दया प्रगटे दयाल, काटे दुनी के करम जाल ।
चेतन व्यापी भए निहाल, भई नई रे नवों खंडों आरती ।।६।।

सैन्या सहित आए त्रिपुरार, आए ब्रह्मा पढ़त मुख वेद चार ।
विष्णु बोलत बानी जय जय कार, भई नई रे नवों खंडों आरती ।।७।।

आए धरमराए और इंद्र वरून, नारद मुन गंधर्व चौदे भवन ।
सुर असूरों सबों लई सरन, भई नई रे नवों खंडों आरती ।।८।।

आए सनकादिक चारों थंभ, लिए खड़े संग विष्णु ब्रह्मांड ।
जो ब्रह्म अनभवी भए अखंड, भई नई रे नवों खंडों आरती ।।९।।

जिन हद कर दई नवधा भगत, जुदी कर गाई पाई प्रेम जुगत ।
यों आए सुक व्यास बड़ी मत, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥१०॥

आए नवनाथ चौरासी सिध, बरस्या नूर सकल या बिध ।
इत आए बुधजी ऐसी किध, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥११॥

आए चारों संप्रदा के साधूजन, चार आश्रम और चार वरन ।
चारों खूटों के आए गावते गुन, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥१२॥

आए गछ चौरासी जो अरहंती, दत्तजी दसनामी जो महंती ।
आए करम उपासनी वेदांती, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥१३॥

आए खट दरसन खट सास्त्र भेदी, बहत्तर फिरके आए अथर वेदी ।
आए सकल कैदी और बे कैदी, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥१४॥

१. भाग जाना । २. शोभायमान ।

बुधजी की जोतें कियो प्रकास, त्रैलोकी को तिमर कियो नास ।
लीला खेलें अखंड रास विलास, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥१५॥

पिया हुकमें गावें महामत, उड़ाए असत थाप्यो सत ।
सब पर कलस हुओ आखिरत, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥१६॥

॥प्रकरण॥५६॥चौपाई॥६२८॥

भोग

राग श्री काफी

कृपा निध सुंदरवर स्यामा, भले भले सुंदरवर स्याम ।
उपज्यो सुख संसार में, आए धनी श्री धाम ॥१॥

प्रगटे पूरन ब्रह्म सकल में, ब्रह्म सृष्ट सिरदार ।
ईश्वरी सृष्ट और जीव की, सब आए करो दीदार ॥२॥

नित नए उछव आनंद, होत किरंतन सार ।
वैष्णव जो कोई खट दरसन, आए इष्ट आचार ॥३॥

भोजन सर्वे भोग लगावत, पांच सात अंन पाक ।
मेवा मिठाई अनेक अथाने, बिध बिध के बहु साक ॥४॥

अठारे बरन नर नारी आए, साजे सकल सिनगार ।
प्रेम मगन होए गावें पिया जी के, धवल मंगल चार ॥५॥

कई गंधर्व गुन गावें बजावें, कई नट नाचन हार ।
कई रिखि मुनी वेद पढ़त हैं, बरतत जय जयकार ॥६॥

जब की माया ए भई पैदा, ए लीला न जाहेर कब ।
बृज रास और जागनी लीला, ए जो प्रगटी अब ॥७॥

चारों तरफों चौदे लोकों, ए सुध हुई सबों पार ।
बाजे दुन्दुभि[1] भई जीत सकल में, नेहेचल सुख बे सुमार ॥८॥

१. नगारा, डंका ।

जोत उद्योत कियो त्रिलोकी, उड़यो मोह तत्व अंधेर ।
बरस्यो नूर वतन को, जिन भान्यो उलटो फेर ।।९।।
प्रगटे ब्रह्म और ब्रह्मसृष्टी, और ब्रह्म वतन ।
महामत इन प्रकास थें, अखंड किए सब जन ॥१०॥

।।प्रकरण।।५७।।चौपाई।।६३८।।

राग श्री कटको

राजाने मलोरे राणें राए तणों, धरम जाता रे कोई दौड़ो ।
जागो ने जोधा रे उठ खड़े रहो, नींद निगोड़ी रे छोड़ो ।।१।।
छूटत है रे खरग[1] छत्रियों से, धरम जात हिंदुआन ।
सत न छोड़ो रे सत वादियो, जोर बढ़यो तुरकान ।।२।।
कुलिए छकाए रे दिलड़े जुदे किए, मोह अहं के मद माते ।
असुर माते रे असुराई करें, तो भी न मिले रे धरम जाते ।।३।।
त्रैलोकी में रे उत्तम खंड भरथ को, तामें उत्तम हिंदू धरम ।
ताकी छत्रपतियों के सिर, आए रही इत सरम ।।४।।
पन ने धारी रे पन इत ले चढ़या, कोई उपज्यो असुर घर अंस ।
जुध ने करनें उठया धरमसों, सब देखें खड़े राज बंस ।।५।।
भरथ खण्ड रे हिंदू धरम जान के, मांगे विष्णु संग्राम अरथ ।
फिरत आप रे ढिंढोरा पुकारता, है कोई देव रे समरथ ।।६।।
असुर सत रे धरम जुध मांगहीं, सुर केहेलाए जो न दीजे ।
पूछो ने पंडितो रे जुध दिए बिना, धरम राज कैसे कहीजे ।।७।।
राज कुली रे रखन रजवट, जो न आया इन अवसर ।
धरम जाते जो न दौड़िया, ताए सुर कहिए क्यों कर ।।८।।
वेद ने व्याकरणी रे पंडित पढ़वैयो, गछ दीन इष्ट आचार ।
पीछे रे बल कब करोगे, होत है एकाकार ।।९।।

१. तलवार ।

सिध ने साधो रे संतो महंतो, वैष्णव भेख दरसन ।
धरम उछेदे रे असुरें सबन के, पीछे परचा देओगे किस दिन ॥१०॥
सुनियो पुकार रे स्यांने संत जनों, जो न दौड़या जाते सत ।
गए ने अवसर पीछे कहा करोगे, कहां गई करामत ॥११॥
लसकर असुरों का चहुं दिस फैलया, बाढ़यो अति विस्तार ।
बन ने जंगल रे हिंदू रहे पर्वतों, और कर लिए सब धुन्धुकार ॥१२॥
हरिद्वार ढहाए रे उठाए तपसी तीर्थ, गौवध कैयों विघन ।
ऐसा जुलम हुआ जग में जाहेर, पर कमर न बांधी रे किन ॥१३॥
सुर ने केहेलाए रे सेवा करे असुर की, जो दारूवाए[1] उड़ावे द्योहर ।
हिंदू नाम रे सैन्या तिनकी होए खड़ी, ऐसा कुलिऐं किया रे केहेर ॥१४॥
प्रभु प्रतिमां रे गज पांउ बांध के, घसीट के खंडित कराए ।
फरस बंदी ताकी करके, तापर खलक चलाए ॥१५॥
असुरें लगाया रे हिंदुओं पर जजिया[2], वाको मिले नहीं खान पान ।
जो गरीब न दे सके जजिया, ताए मार करे मुसलमान ॥१६॥
सास्त्रें आवरदा कही कलजुग की, चार लाख बत्तीस हजार ।
काटे दिन पापें लिख्या मांहें सास्त्रों, सो पाइए अर्थ अंदर के विचार ॥१७॥
सोले सै लगे रे साका सालवाहन का, संवत सत्रह सै पैंतीस ।
बैठाने साका विजिया अभिनन्द का, यों कहे सास्त्र और जोतीस ॥१८॥
कलिजुगें चेहेन रे अंत के सब किए, लोक बतावें अजूं दूर अंत ।
अर्थ अन्दर का कोई न पावे, बारे अर्थ बाहेर के ले डूबत ॥१९॥
बातने सुनी रे बून्देले छत्रसाल ने, आगे आए खड़ा ले तरवार ।
सेवाने लई रे सारी सिर खैंच के, सांइए किया सैन्यापति सिरदार ॥२०॥
प्रगटे निसान रे धूमरकेतु खय मास, पर सुध न करे अजूं कोई इत ।
बेगेने पधारो रे बुध जी या समे, पुकार कहे महामत ॥२१॥

॥प्रकरण॥५८॥चौपाई॥६५९॥

१. गोला बारूद । २. कर, टैक्स ।

राग श्री

ऐसा समे जान आए बुध जी, कर कोट सूर समसेर ।
सुनते सोर सब्द बानन को, होए गए सब जेर[1] ।।१।।

काटे विकार सब असुरों के, उड़ायो हिरदे को अंधेर ।
काढ़यो अहंकार मूल मोह मन को, भान्यो सो उलटो फेर ।।२।।

वेद कतेब के जो अर्थ, ढांपे हुते सबों पास ।
विष्णु संग्राम मांगे जो असुर, ताको कियो कोट प्रकास ।।३।।

तब पेहेचान भई सकल, हुए जब सर्वग्यन ।
नेहेचल सूर ऊग्यो निज वतनी, हुओ मन को भायो सबन ।।४।।

बाल लीला भई बृज में, लीला किसोर वृन्दावन ।
जगंनाथ बुध जी जागनी, भई भोर लीला बुढ़ापन ।।५।।

राजा प्रजा बाला बूढ़ा, नर नारी ए सुमरन ।
गाए सुने ताए होवहीं, लीला तीनों का दरसन ।।६।।

सुर असुर सबों को ए पति, सब पर एकै दया ।
देत दीदार सबन को सांई, जिनहूं जैसा चाह्या ।।७।।

साहेब के हुकमें ए बानी, गावत हैं महामत ।
निज बुध नूर जोस को दरसन, सबमें ए पसरत ।।८।।

।।प्रकरण।।५९।।चौपाई।।६६७।।

राग श्री गौड़ी

कुली बल देखो रे, ए जो देखन आइयां तुम ।
खेल किया तुमारी खातिर, सुनियो हो सृष्ट ब्रह्म ।।१।।

अथाह थाह नहीं ऊंचा नीचा, गेहेरा गिरदवाए मोह जल ।
लोक चौदे खेलें जीव याके, याकी सूझे न याकी कल[2] ।।२।।

१. आधीन । २. कला - कौशल (तरीका)

सत ढांप्या पीठ देवाई पिया को, झूठ ल्याया नजर ।
नेहेचल राज सोहाग धनी को, सो भुलाए दियो घर ।।३।।

नेहेचल घर थें आइयां खेल देखने, सत सरूप परवान ।
सो अंकूरी भूले क्यों यामें, जाए दई पिउ पेहेचान ।।४।।

बिन वाए चढ़्या बगरूला[१], सबको देखे बिन आंखें ।
खिनमें फिरवले सब लोकों, पाँऊ बिना बिन पांखें ।।५।।

कुली दज्जाल अंधेर सरूपे, त्रिगुन को पाड़े त्रास ।
सूर सिरोमन साध संग्रामें, पीछे पटक किए निरास ।।६।।

मोह फांस बंध दिए दुनी को, सब अंगो बस आने ।
राज करे सिर सबन के, चलावत ज्यों जित जाने ।।७।।

प्रथम मूल से बुध फिराई, अहंमेव दियो अंधेर ।
या बिध इंड रच्यो त्रैलोकी, मूल तें दियो मन फेर ।।८।।

उदयो लोभ विखे रस विखया[२], सैन्या पति सैतान ।
दसो दिस आग लगाई दुनियां, सुध बुध खोई सान ।।९।।

बाढ़ी व्याध स्वाद गुन इंद्री, मद चढ़यो मोह अंध ।
माता बेहेन पुत्री गोरांनी[३], कासों नहीं सनमंध ॥१०॥

खिन सज्जन खिन दुस्मन, दिवाना दाना प्रवीन ।
बिध बिध के बंध फंद डार के, सब सूर किए आधीन ॥११॥

ना कछू चोर न कोई साधू, कई डिंभके धरे ध्यान ।
तान मान सब विद्या व्याकरण, बहुरंगी बहु ग्यान ॥१२॥

वेद कतेब सास्त्र सबे मुख, जुगें लिए सब जीत ।
मंत्र धात करामात माहीं, पाक उत्तम पलीत ॥१३॥

जिन अंगों मिलिए पिउसों, सो ए दिए उलटाए ।
फेरी दुहाई वैराट चौखूंटों, कोई सिर न सके उठाए ॥१४॥

१. गुबारा । २. जेहर फैल गया । ३. गुरू पत्नि ।

चौदे लोक अग्याकारी, सिर सबन के हुकम ।
या छलने ऐसे उरझाए, आप भूली सुध घर खसम ॥१५॥

केती बिध कहुं कलजुग की, अलेखे अप्रमान ।
बरना बरन कर मिने व्याप्या, काहुं न किसी की पेहेचान ॥१६॥

छूटी छोले लेहेरें पड़ियां बाहेर, छूट गई मरजाद ।
भाने भेख पंथ पैंडे दरसन, ढाहे तीरथ प्रासाद[1] ॥१७॥

ग्रास किए त्रिगुन त्रैलोकी, ऐसो मोह अंध अहंकार ।
सुध न होवे काहूं धाम धनी की, पोहोंचने न देवे पुकार ॥१८॥

पोहोंचे नहीं कल बल कुली को, कोई मिने चौदे भवन ।
ऐसो महाबली ताए उड़ावें, बुधजी एकै खिन ॥१९॥

चलता पूर लिए दोऊ किनारे, डर धरता बुधजी का ।
मद चढ़्यो करी एकल छत्री, ले बैठा सिर टीका ॥२०॥

बुध जी धनी हुकम मांहें, फरिस्ता असराफील ।
तिन कान दिए सुनने अग्या को, अब हुकम को नाहीं ढील ॥२१॥

पोहोंची पुकार सुनी धनी श्रवनों, कही कुली की सब गम ।
कलपे जुथ जान ब्रह्मसृष्ट के, मिले नूर बुध हुकम ॥२२॥

उड़ाए अंधेर किया मिलावा, प्रकास कियो सब अंग ।
काढ़्यो मोह अहंकार मूल थें, जो करता सबन सों जंग ॥२३॥

उदयो अखण्ड सूर निज वतनी, भई जोत कोटान कोट ।
कहे महामत रात टली सबन को, आए सब धनी की ओट[2] ॥२४॥

॥प्रकरण॥६०॥चोपाई॥६९१॥

१. महल, मंदिर । २. शरण, आसरा ।

राग श्री नट

साहेब तेरी साहेबी भारी ।
कौन उठावे तुझ बिन तेरी, सो दई मेरे सिर सारी ।।१।।
त्रिगुन तिर्थंकर अवतार, कई फरिस्ते पैगंमर ।
तिन सबकी सोभा ले स्याम, आया महंमद पर ।।२।।
नूर नामे में पैगंमर, एक लाख बीस हजार ।
सो सिफत सब महंमद की, सो महंमद स्याम सिरदार ।।३।।
सो महंमद कासिद होए के, ले आया फुरमान ।
वास्ते हमारे हम में, पोहोंचाय हैं निसान ।।४।।
रूह अल्ला किल्ली अल्लाह थें, ले उतरे चौथे आसमान ।
सो हम मांहें बैठ के, खोले कुलफ कुरान ।।५।।
सो फुरमान आप खोल के, करी जाहेर हकीकत ।
खोले वेद कतेब के गुझ, आई सबों की सरत ।।६।।
कलीम[1] अल्ला कह्या मूसे को, फुरमाया सब कहे ।
सो कलाम अल्ला की रोसनी, ताबे हादी के रहे ।।७।।
खलील[2] अल्ला दोस्त खुदाए का, जाकी पोहोंची दुआ हजूर ।
सो भी रहत इमाम में, कलाम अल्ला का जहूर ।।८।।
अली वली सेर दरगाह का, जो दरगाह बड़ी खुदाए ।
अवल सें किन पाई नहीं, सो आखिर प्रगटी आए ।।९।।
नूह नबी को वारसी, आदम दई पोहोंचाए ।
आए ईसा नूह नबी इमाम, सो आदम सफी[3] अल्लाह ॥१०॥
असराफील ले उतर्‍या, जागृत बुध नूर ।
सो बैठ बजाए इमाम में, मगज मुसाफी सूर ॥११॥

१. खुदा से कलाम (बातें) करने वाला । २. मित्र, दोस्त । ३. पाक (पवित्र) मिट्टी से बनाया हुआ ।

जबराईल जोस धनी का, सो आया गिरो जित ।
करे वकीली उमत की, कहूं पैठ न सके कुमत ॥१२॥

औलिए अंबिए गोस कुतब, सब आए बीच उमत ।
रूहें पैगंमर फरिस्ते, सब मिले आखिरत ॥१३॥

बनी असराईल जिकरिया, एहिया यूसफ इस्माईल ।
बखत बदल्या दाऊद आए, हुए जाहेर नूर जमाल ॥१४॥

इसहाक एलिया इद्रीस, आए बोहोना सलेमान ।
मुलक हुआ नबियन का, मार दिया सैतान ॥१५॥

कई किताबें कई कलमें, कई जो नामें और ।
जो कोई कहावे बुजरक, सब आए मिले इन ठौर ॥१६॥

दई बड़ी बड़ाई आपसी, दियो सो अपनों नाम ।
करनी अपनी दे थापी, दे साहेदी अल्ला कलाम ॥१७॥

मोहे अपनों सब दियो, रही न कोई सक ।
सही नाम दियो मोहोर अपनी, कर रोसन थापी हक ॥१८॥

खुदा काजी होय के, कजा करसी सबन ।
सो हिसाब जरे जरे को, लियो चौदे भवन ॥१९॥

त्रैलोकी तिमर नसाइयो[1], कर रोसन अति जहूर ।
चौदे लोक चारों तरफों, बरस्या खुदा का नूर ॥२०॥

भई सोभा संसार में, अति बड़ी खूबी अपार ।
दुनियां उठाई पाक कर, ना जरा रह्या विकार ॥२१॥

पेहेले प्रले करके, उठाए लिए ततखिन ।
मेरे हाथ कराए के, दई सोभा चौदे भवन ॥२२॥

काटे करम सबन के, काल मार किया दुख दूर ।
हिरदे मांहें नूर के, लिए नजर तले हजूर ॥२३॥

१. नाश किया ।

रोसनी पार के पार की, दई साहेब नाम धराए ।
भई दुनियां साफ मुसाफ से, मुझसे कजा कराए ॥२४॥

नूर अछर की नजरों, कई कोट ऐसे इंड ।
त्रिगुन त्रैलोकी पल में, कई उपज फना ब्रह्मांड ॥२५॥

सो नूर सरूप आवें नित, नूर तजल्ला के दीदार ।
आस पुराई इन की, मेरे ऐसे इन आकार ॥२६॥

ऐसी बड़ाई कई सिर मेरे, दे दे लई जो दाब ।
सब दुनियां के दिल में आनी, दे साहेदी[1] सब किताब ॥२७॥

॥प्रकरण॥६१॥चौपाई॥७१८॥

राग श्री

मांगत हों मेरे दुलहा, मन कर करम वचन ।
ए जिन तुम खाली करो, मैं अर्ज करूं दुलहिन ॥१॥

मेरे धनी तुमारी साहेबी, तुम अपनी राखो आप ।
इस्क दीजे मोहे अपनों, मैं, तासों करूं मिलाप ॥२॥

ना चाहों मैं बुजरकी, ना चाहों खिताब खुदाए ।
इस्क दीजे मोहे अपना, मोहे याहीसों मुद्दाए ॥३॥

इलम चातुरी खूबी अंग की, मोहे एही पट लिख्या अंकूर ।
एही न देवे देखने, मेरे दुलहे के मुख का नूर ॥४॥

एही अंकूर साथ कारने, करत मिलाप अंतराए ।
न तो एकै आह इन पिया की, देवे सब उड़ाए ॥५॥

एही खूबी मेरे अंग को, देत नाहीं दरद ।
एही हांसी बुजरकी, करत इस्क को रद ॥६॥

इलम आतम संग बुध के, ए जो आवत जुबांए ।
फेर श्रवना देवें आतम को, एही परदा नाम खुदाए ॥७॥

१. साक्षी ।

ना तो क्यों न उड़े इन आतमा, विचार के एह वचन ।
इस्क जरे आतम को, इत हो जाए सब अगिन ।।८।।

एही बुजरकी साथ जी, भया गले में तौक[1] ।
धनी को न देवे देखने, एही खूबी इन लोक ।।९।।

साथ मोको सुख चाहें, जान धाम की प्रीत ।
मैं परबोधों जान वतनी, मोहे बंधन भयो इन रीत ॥१०॥

वे सेवा करें बहु विध, फेर फेर देवें बड़ाई ।
हेत करें जान के साहेब, मोहे एही होत अंतराई ॥११॥

मैं भी हेत करत हों इनसों, जान के वतन सगाई ।
मोहे प्यारा साथ मेरे धनी का, एही पट आड़े आई ॥१२॥

जिन दयाए परदा उड़ाइया, मैं फेर फेर मांगों सो मेहेर ।
इस्क दीजे मोहे अपना, जासों लगे बुजरकी जेहेर ॥१३॥

मोहे सेवा प्यारी पिउ की, साहेब हो बैठो तुम ।
अति सुख पाऊं इनमें, करों बंदगी खसम ॥१४॥

बोझ अपनों निज वतन को, सो सब मेरे सिर दियो ।
नाम सिनगार सोभा सारी, मैं भेख तुमारो लियो ॥१५॥

अल्ला आसिक मासूक महंमद, इस्क दीजे हम ।
हम आसिक नाम धराए के, मासूक करे हैं तुम ॥१६॥

तुम दुलहा मैं दुलहिनी, और ना जानूं बात ।
इस्क सों सेवा करूं, सब अंगों साख्यात ॥१७॥

अब तो उमत मिली खासी, और उमत दूसरी ।
तीसरी भी कायम हुई, अब काहे को ढील करी ॥१८॥

सकल काम भए पूरन, रही ना किसी की सक ।
महामत चाहे पिउ वतन, आए मिलूं ले इस्क ॥१९॥

१. लानत का फंदा ।

प्रेम दरद इस्क तुमारा, मैं फेर फेर मांगूं फेर ।
प्यारें मिलूं प्यारे पिउसों, प्यारी महामत कहे बेर बेर ॥२०॥

॥प्रकरण॥६२॥चौपाई॥७३८॥

राग श्री

जिन सुध सेवा की नहीं, ना कछू समझे बात ।
सो काहे को गिनावे आप साथ में, जिन सुध ना सुपन साख्यात ॥१॥

कमर बांधे देखा देखी, जाने हम भी लगे तिन लार ।
ले कबीला कांध पर, हंसते चले नर नार ॥२॥

ए लोक राह न पावहीं, क्योंए न सुनें पुकार ।
ए चले चींटी हार ज्यों, बांधे ऊंट कतार ॥३॥

इन लोकों की मैं क्या कहूं, जो जाए पड़े मुख काल ।
जो साथ केहेलाए सामिल भए, सो भी कहूं नेक हाल ॥४॥

दूध तो देख्या नहीं, देख्या ऊपर का फैन ।
दौड़ करें पड़े खैंच में, ए भी लगे दुख देन ॥५॥

लेने को बुजरकियां, सेवें चातुरी चैन ।
सेवा करत सब खैंच की, ए यों लगे दुख देन ॥६॥

देखा देखी न छूटहीं, सेवत हैं दिन रैन ।
खुस बखत होवें खैंच में, ए यों लगे दुख देन ॥७॥

क्यों ए न प्रबोधें समझें, कोई आद अमल ऐसा घेन ।
क्या मूरख क्या समझू, सबे लगे दुख देन ॥८॥

सनमुख होए सेवा करें, मुख बोलत मीठे बैन ।
तित भी खैंच ऐसी भई, ए भी लगे दुख देन ॥९॥

निपट नजीकी सेवहीं, दौड़े एक दूजे पें लेन ।
खैंचा खैंच ऐसी करें, ए भी लगे दुख देन ॥१०॥

मन वाचा कर सेवहीं, गलित गात रोवें नैन ।
तहां भी खैंच छूटी नहीं, ए भी लगे दुख देन ॥११॥

सेवक कई समझावहीं, साखी सबे मुख केहेन ।
इन भी खैंच छुटी नहीं, ए भी लगे दुख देन ॥१२॥

अर्थ अंदर का लेवहीं, समझें इसारत सेन ।
खैंच उनकी भी ना गई, वे भी लगे दुख देन ॥१३॥

अंदर बाहेर उजले, दोष देखें सब ऐन[1] ।
ताए भी खैंच छूटी नहीं, ए भी लगे दुख देन ॥१४॥

तारतम सब समझहीं, धाम सैयां हम बेहेन ।
तित भी ब्रोध छूटा नहीं, ए भी लगे दुख देन ॥१५॥

ए खेल है इन भांत का, क्यों ए न खुले मूल नैन ।
निज नजर खुले बिना, कोई न देवे सुख चैन ॥१६॥

राह निपट बारीक है, तिन बारीक पर बारीक ।
साथें लई लीक[2] जाहेरी, सो उतरी लीक थें लीक ॥१७॥

काहूं न दरवाजा नजीक, कहां कुलफ किल्ली कल गत ।
राह भी नजरों न आवहीं, ए चले जाहेरी ले मत ॥१८॥

अब कहा कहूं मैं इन पर, कोई ऐसी बनी जो आए ।
ए जान बूझ तो भूलहीं, जो इनका कछू न बसाए ॥१९॥

राह जुदी दोऊ पेड़ से, तो कहा सके कोई कर ।
उन आड़ो पट अंतर, इनों बाहेर पड़ी नजर ॥२०॥

न तो सूरे क्यों ना बल करें, कोई बुरा न आपको चाहे ।
दौड़त है निस वासर, किन पट न टाल्यो जाए ॥२१॥

महामत कहेवें यों कर, हम सैयां दौड़ी धाए ।
पर ए पट सुंदरबाई बिना, किनहूं न खोल्यो जाए ॥२२॥

१. भली भांति देखना । २. जाहेरी (देखा देखी) मार्ग अपनाना ।

बात सुंदरबाई और है, और उनकी और रवेस ।
गत मत उनकी और है, हम लिया सब उनका भेस ॥२३॥

मोहे सिखापन उनकी, दे फुरमान करी रोसन ।
इंद्रावती तो केहेवहीं, जो दोऊ बिध करी चेतन ॥२४॥

॥प्रकरण॥६३॥चौपाई॥७६२॥

राग श्री

तमें वाणी विचारी न चाल्या रे वैष्णवो, तमें वाणी विचारी न चाल्यो ।
अखर एकनो अर्थ न लाध्यो[1], मद मस्त थईने हाल्यो[2] ॥१॥

सत वाणी वैष्णव ने समझावूं, जेसूं मूल डाल प्रकासी ।
श्री मुख आचारज जे ओचरया, तेणे जाए भरमना नासी[3] ॥२॥

वैष्णव वाणी जो जो विचारी, ए भोम देखी पामो त्रास ।
चौद भवनथीं ए वाणी न्यारी, तेमां पेर पेरना प्रकास ॥३॥

प्रथम मोह तत्व नी उतपन, ते मांहें थी तत्व पांचे ।
ए पांच तत्व थकी चौद लोक प्रगट्या, एमा वैष्णव होय ते न राचे ॥४॥

एमा प्रेमें पारब्रह्म पांमिए, ए वाणी बोले रे एम ।
अनेक कसोटी आवे जो आड़ी, तो ए निध मूकिए केम ॥५॥

वैष्णवो सत वस्त एक देखाडयूं, बीजो कह्यो सर्वे नास ।
महाप्रले मां तत्व लेवासे, आंहीं मुझ थकी अजवास ॥६॥

वैष्णवो मोह थकी निध न्यारी दीधी, आपण ने अविनास ।
नाम तत्व कह्यूं श्री कृष्ण जी, जे रमे अखंड लीला रास ॥७॥

एहने सरणे सोप्या वैष्णवने, जिहां बिध बिध ना विलास ।
हवे नेहेचल रंग कीजे ते पुरूख सों, दई प्रेमनो पास ॥८॥

पूरूखपणें ए दृष्टें न आवे, ए अबलापणें लीजे अंग ।
पुरूख नथी ए विना कोई बीजो, जे रमे नेहेचल लीला रंग ॥९॥

१. पाया । २. चल रहे हो । ३. भाग जाए ।

ए प्रीछो तो पारब्रह्म चित आवे, समझे सुपन परूं थाय ।
अखंड तणां सुख एणी पेरे लीजे, लाहो मायामां लेवाय ॥१०॥

सत वस्त घणूं स्या ने प्रकासूं, अर्थी[1] बिना नव कहिये ।
एहेना नेहेचल नेहड़ा गोप भला, आ उलटीमां प्रगट न थैये ॥११॥

अर्थी होय ते आवी ने पूछे, मोटी मत तेहेने दाखूं ।
ए निध देवा जोग नहीं, तेथीं अंतर राखूं ॥१२॥

गुण मुख बोली भलूं न मनावूं, अवगुण न राखूं छानो ।
सत वस्त देवाने सत भाखूं, एमा दुख मानो ते मानो ॥१३॥

पतलीने[1] तमें पगला भरिया, लाग्यो स्वाद संसार ।
पुरूखपणे रमया माया मां, तो आड़ी आवी अंधार ॥१४॥

जोयूं नहीं तमें जागीने, अमृत ढोलीने विख पीधूं।
असत मंडल ने सतकरी समझया, अखंड ने वांसो[3] दीधूं ॥१५॥

अंध थके तमें ए निध खोई, जे तमने सत स्वामिऐं दीधी ।
कठण वचन तो कहूं छूं तमने, जो तमें दुष्टाई कीधी ॥१६॥

नहीं तो करूं कटका जे जिभ्या वदे वांकू, पणतमें लछणें आप एम कहावो ।
जे स्वामी अविचल सुख आपे, तेहने तमें कां निंदावो ॥१७॥

ओलख्या नहीं तमें आचारज जी ने, तो भरम मांहें भमया ।
वैष्णव सकलने तमें वांकू कहावो, तो तमें नीचा नमया ॥१८॥

पतिव्रता नारी ते पति ने पूजे, सेवे ते अनेक पेरे ।
पिउ पर वचन सुणे जो वांकू, तो देह त्याग तिहां करे ॥१९॥

तमें वांकू विसमूं कांई नव जोयूं, जेम भामनी भूंडी भंडावे[4] ।
कुकरम करतां कांई न विचारे, पछे नाहो ने नीचू जोवरावे[5] ॥२०॥

एणी पेरे सेव्या तमें स्वामीने, चितसूं जुओ विचारी ।
दुष्टपणें तमें धणी ने दुखवया, हवे केही पेर थासे तमारी ॥२१॥

१. इच्छुक । २. वैश्या । ३. पीठ । ४. बदनाम करे । ५. दिखलावे ।

सत कहे संतोख उपजे, कुली तणे कांधे चढ़या ।
ते वैष्णव नहीं तेथी रहिए वेगला, जे ए निध मूकी पाछा पड़या ॥२२॥

केहेतां सवलूं आंणे चित अवलूं, वस्त विना करे विवाद ।
महामत कहे तेहने केम मलिए, जे करे अवला उदमाद[1] ॥२३॥

॥प्रकरण॥६४॥चौपाई॥७८५॥

राग श्री

ए माया आद अनादकी, चली जात अंधेर ।
निरगुन सरगुन होए के व्यापक, आए फिरत है फेर ॥१॥

ना पेहेचान प्रकृत की, ना पेहेचान हुकम ।
ना सुध ठौर नेहेचल की, और ना सुध सरूप ब्रह्म ॥२॥

सुध नाहीं निराकार की, और सुध नाहीं सुंन ।
सुध ना सरूप काल की, ना सुध भई निरंजन ॥३॥

ना सुध जीव सरूप की, ना सुध जीव वतन ।
ना सुध मोह तत्व की, जिनथें अहं उतपन ॥४॥

सास्त्रों जीव अमर कह्यो, और प्रले चौदे भवन ।
ओर प्रले पांचो तत्व, और प्रले कहे त्रिगुन ॥५॥

और प्रले प्रकृत कही, और प्रले सब उतपन ।
ना सुध ब्रह्म अद्वैत की, ए कबहूं न कही किन ॥६॥

ए त्रिगुन की पैदास जो, सो समझे क्यों कर ।
त्रिगुन उपजे अहं थें, और हिजाब[2] अहं के पर ॥७॥

ए आद के संसे अबलों, किनहूं न खोले कब ।
सो साहेब इत आए के, खोल दिए मोहे सब ॥८॥

रूहअल्ला की मेहेर से, उपज्यो एह इलम ।
और महंमद की मेहेर थें, सुध कहूं माया ब्रह्म ॥९॥

१. पागलपन । २. बुरखा, परदा ।

प्रकृती पैदा करे, ऐसे कई इंड आलम ।
ए ठौर माया ब्रह्म सबलिक, त्रिगुन की परआतम ॥१०॥

कई इंड अछर की नजरों, पल में होय पैदास ।
ऐसे ही उड़ जात हैं, एकै निमख में नास ॥११॥

केवल ब्रह्म अछरातीत, सत-चित-आनन्द ब्रह्म ।
ए कह्यो मोहे नेहेचेकर, इन आनन्द में हम तुम ॥१२॥

कहे कतेब साहेदी साहेब की, दे न सके कोई और ।
खुदाए की खुदाए बिना, किन पाया नाहीं ठौर ॥१३॥

ए कतेब यों कहत है, हादी सोई हक ।
बिना साहेब साहेब वतन की, कोई और न मेटे सक ॥१४॥

संसे मिटाया सतगुरें, साहेब दिया बताए ।
सो नेहेचल वतन सरूप, या मुख बरन्यो न जाए ॥१५॥

साख पुराई वेद ने, और पूरी साख कतेब ।
अनुभव करायो आतमा, जो न आवे मिने हिसेब ॥१६॥

हबीब बताया हादिएँ, मेरा ही मुझ पास ।
कर कुरबांनी अपनी, जाहेर करूं विलास ॥१७॥

तुम देखत मोहे इन इंड में, मैं चौदे तबक से दूर ।
अंतरगत ब्रह्मांड तें, सदा साहेब के हजूर ॥१८॥

ब्रह्मसृष्टि और ब्रह्म की, है सुध कतेब वेद ।
सो आप आखिर आए के, अपनो जाहेर कियो सब भेद ॥१९॥

महामत जो रूहें ब्रह्म सृष्ट की, सो सब साहेब के तन ।
दुनियां करी सब कायम, सही भए महंमद के वचन ॥२०॥

॥प्रकरण॥६५॥चौपाई॥८०५॥

सैयां मेरी सुध लीजियो, जो कोई अहेल[1] किताब ।
तुम ताले लिख्या नूरतजल्ला, सुनके जागो सिताब ।।१।।

ना छूटी सरीयत करम की, ना छूटी तरीकत उपासन ।
मगज न पावे माएना, चले सब बस परे मन ।।२।।

दोऊ दौड़ करत हैं, हिंदू या मुसलमान ।
ए जो उरझे बीच में, इनका सुन्य मकान ।।३।।

जोगारंभी या कसबी, पोहोंचे ला[2] मकान ।
मोह तत्व क्यों ए न छूटहीं, कह्या परदा ऊपर आसमान ।।४।।

एक इलम ले दौड़हीं, और ले दौड़े ग्यान ।
तित बुध न पोहोंचे सब्द, ए भी थके इन मकान ।।५।।

दूजी कुरसी[3] इत तरीकत, जाहेरी ऊपर फुरमान ।
हकीकत मारफत की, ना किन किया बयान ।।६।।

सो खिताब खोलन का, हुकम हादी पर ।
जो औलाद आदम हवा की, सो खोले क्यों कर ।।७।।

पातसाह अबलीस दिल पर, सब पर हुआ हुकम ।
इन दोऊ की अकल सों, कहें खोलें बातून हम ।।८।।

जहां कछुए है नहीं, सब कहें बेचून[4] बेचगून[5] ।
सुन्य निराकार निरंजन, बेसबी बे निमून ।।९।।

इत खावंद तो न पाइए, बीच आप के ऐब ।
पीछे कहें हम पाया बातून, हम हीं हैं साहेब ॥१०॥

आतम रूह न चीन्ह हीं, ले माएने इलम ग्यान ।
आप खुदा हो बैठहीं, ए अबलीसें फूके कान ॥११॥

लोक जिमी आमसान के, तिनके सब्द अकल चित मन ।
सो आगूं ना चल सके, रहे हवा बीच सुंन ॥१२॥

१. वारिस । २. निराकार । ३. दरजा । ४. अनुपम । ५. निर्गुण ।

एह सिपारे दूसरे, या बिध कर लिखे बयान ।
बीच हवा के पलना, चौदे तबक झुलान ॥१३॥

भूले सब जुदे पड़े, माएना सबों का एक ।
ए सतगुर हादी बिना, क्यों कर पावे विवेक ॥१४॥

हवा पार महंमद नूर कह्या, नूर पार तजल्ला नूर ।
अर्ज करी वास्ते उमत, पोहोंच के हक हजूर ॥१५॥

नब्बे हजार हरफ कहे, यों कर किया हुकम ।
तीस हजार जाहेर करो, आखिर बाकी खोलें हम ॥१६॥

सो जाहेरी सब जानत, जो ले खड़े सरीयत ।
और मुदा बिलंदी[1] गुझ रख्या, सो खोलसी बीच आखिरत ॥१७॥

सोई साहेब आखिर आवसी, किया महंमद सों कौल ।
भिस्त दरवाजे कायम[2], सबको देसी खोल ॥१८॥

काजी होए के बैठसी, हिसाब लेसी सबन ।
पल में प्रले करके, उठाए लेसी ततखिन ॥१९॥

ए सब उमत कारने, आखिर करी सरत ।
देसी भिस्त सबन को, सो रूहअल्ला की बरकत ॥२०॥

सो हुकम हादी का छोड़ के, छोड़ साहेब के पाए ।
बीच अंधेरी सुन्य के, जाए जल बिन गोते खाए ॥२१॥

अब पूछो दिल अपना, इत कहां रह्या आकीन ।
मुख से कहें हम महंमद के, कायम खड़े बीच दीन ॥२२॥

ए विचारे क्या करें, सुख ताले लिख्या नाहें ।
ना तो जान बूझ पढ़े आरिफ, क्यों पड़े दोजख मांहें ॥२३॥

तो आंखां मूंदे कहे, और बेहेरे कहे श्रवण ।
पढ़े तो पावें नहीं, कुलफ[3] दिलों पर इन ॥२४॥

१. बड़ा, महान । २. अखंड । ३. ताला ।

सो पोहोंची सरत सबन की, हुए वेद कतेब रोसन ।
ए सदी अग्यारहीं बीच में, होसी दोजख भिस्त सबन ॥२५॥

दिया दोऊ हाथों कर, सिर साहेबें खिताब ।
महामत खोले सो माएने, आगे अहेल किताब ॥२६॥

ए अहमद अल्ला के हुकमें, महंमद कह्या समझाए ।
अब क्या कहिए तिनको, जो ए सुनके फेर उरझाए ॥२७॥

॥प्रकरण॥६६॥चौपाई॥८३२॥

राग सिंधुड़ा

वाटडी विसमी रे साथीडा वेहदतणी, ऊवट[1] कोणे न अगमाय ।
खांडानी धारे रे एणी वाटें चालवूं, भाला अणी केहेने न भराय ॥१॥

आडी ने आडी रे अगनी जोने पर जले, वैराट माहें न समाय ।
ब्रह्मांड फोडीने झालों जोने नीसरी, ओलाडी[2] ते केहेने न जाय ॥२॥

इहां हस्ती थई ने एणी वाटे हींडवूं, पेसवूं सुईना नाका मांहें ।
आल न देवी रे भाई आकार ने, झांप तो भैरव खाए ॥३॥

ओतड[2] दीसे रे अति घणूं दोहेली, हाथ न थोभे रे पाय ।
काम नहीं रे इहां कायर तणूं, सूरे पूरे घायलें लेवाय ॥४॥

सागरना पंथ रे बीजा जोने पाधरा, चाले चाले उतरता उजाए ।
स्वांत लईने सेहेजल सुखमां, प्रघल जाय रे प्रवाहे ॥५॥

ते तो आकार करे रे जोने उजला, मांहें तो अधम अंधार ।
खाय ने पिए रे सेज्या सुख भोगवे, एणी वाटे चालतां करार ॥६॥

भ्रांत माहेली जिहां भाजे नहीं, तिहां लगे जाय नहीं कपट ।
भेख ने बनावो रे अनेक विधना, पण मूके नहीं वेहेवट ॥७॥

वेहद वाटे रे कपट चाले नहीं, राखे नहीं रज मात्र ।
जेने आवो रे ते तो पेहेलूं आगमी, पछे ने करूं प्रेमना पात्र ॥८॥

१. उलंघना । २. अवघट, कठिन ।

भ्रांत मांहेंली रे महामत भाजवी, रदे मांहें करवो प्रकास ।
पछे ने देखाडूं घेर मुख आगल, जेम सोहेलो आवे मारो साथ ।।९।।

।।प्रकरण।।६७।।चौपाई।।८४१।।

राग श्री धौल - धना

अटकलें ए केम पांमिए, ए तो नहीं पंथ प्रपंच मारा संमंधी ।
एणे पगले न पोहोंचाय, जिहां चोकस न कीजे चित मारा संमंधी ।।१।।

जिहां अटकल तिहां भ्रांतडी, अने भ्रांत तो थई आडी पाल ।
पार जवाय पूरण दृष्टे, इहां रज न समाय पंपाल ।।२।।

भ्रांत आडी जिहां भाजे नहीं, तिहां मांहें थी न पूरे साख ।
वचन रूदे प्रकासी ने, जिहां आतमा न देखे साख्यात ।।३।।

इहां सर्व ने साख पुराविए, गुण अंग इंद्री ने पख ।
आाउध सर्वे संभारिए, ए तो अलख नी करवी छे लख ।।४।।

वाट विना इहां चालवूं, अने पग विना करवूं पंथ ।
अंग विना आउध लेवा, जुध ते करवूं निसंक ।।५।।

सुपन मांहें सुख साख्यात लेवूं, ते निद्रामा केम लेवाए ।
जागी अखंड सुख ओलखिए, आ सुपन लगाडिए वली तांहें ।।६।।

एम ने अखंड सुख उदे थयूं, ज्यारे समझया सुपन मरम ।
जागी साख्यात बेठा थैए, त्यारे आगल पूरण पारब्रह्म ।।७।।

वचने कामस[1] धोई काढिए, राखिए नहीं रज मात्र ।
जोगवाई सर्वे जीतिए, त्यारे थैए प्रेमना पात्र ।।८।।

ए पगले एणे पंथडे, प्रेम विना न पोंहोंचाय ।
वैकुण्ठ सुन्य ने मारगे, बीजी अनेक कथनी कथाय ।।९।।

ए तो हद नहीं आ तो वेहद, इहां अनेक अटकलो तणाय ।
अनेक सूरा संग्राम करे, अनेक उथडतां[2] जाय ।।१०।।

१. विकार । २. ओंधे गिरना ।

साध सूरधीर अनेक मलो, अनेक जाओ वैकुंठ पार ।
पण अखंड तणां दरवाजा कोणें, ते तो नव उघडे निरधार ॥११॥

तमने मोटी मतवाला साध देखाडूं, जेणे भरया ब्रह्मांडमां पाय ।
कोई वैकुण्ठ कोई सुन्य मंडलमां, एटला लगे पोहोंचाय ॥१२॥

पारब्रह्म पाम्यां तणां, अनेक उदम करे साध ।
चढी वैकुण्ठ आघा[1] वहे, तिहां तो आडी छे अगम अगाध ॥१३॥

साध आउध सर्वे साचवी, जुध ते करतां जाय ।
लोही मांस न रहे अंग ऊपर, वचमां स्वांस न खाय ॥१४॥

चौदे चढी चाले एणी विधें, आगल निराकार केहेवाय ।
तिहां पंथ न थाय पग थोभ विना, साध इहां जईने समाय ॥१५॥

केटलाक जोर करे जुध करवा, पण पग पंथ सब्द न कोय ।
सूं करे साध सनंध विना, मोटी मत वाला जोय ॥१६॥

आ पांचे तणूं मूल कोय न प्रीछे, अनेक करे छे उपाय ।
साध मोटा पोहोंचे सुन्य लगे, पण सत सुख केणे न लेवाय ॥१७॥

वेदें वैराट जोयूं दसो दिसा, कही आ पांच चौदनी उतपन ।
चौद लोक जोया चारे गमा, चाल्या आघा जोवा मांहें सुंन ॥१८॥

सुन्य जोयूं घणूं श्रम करी, त्यारे नाम धराव्या निगम ।
सनंध न लाधी सुन्य तणी, त्यारे कहीनें वल्या अगम ॥१९॥

वेदे वलतां[2] वाणी जे ओचरी, ते तां चढी वैराट ने मुख ।
कुलिए ते लई मुख विप्रोने[3], करी आपी व्रत भख ॥२०॥

वेद सनमुख चढ़या ज्यारे ऊंचा, त्यारे मूल हता पाताल ।
फरीने वाणी पाछी वली, त्यारे थया मूल ऊंचा ने नीची डाल ॥२१॥

कल्प विरिख तिहां वेद थयो, तेहेनूं फल निपनूं भागवत ।
बन पकव रस ग्रही मुनि थया, एम सुकें परसव्या संत ॥२२॥

१. आगे । २. लौटते समय । ३. ब्राह्मणों के ।

ए रस सनमुख साध लई ने, वैकुण्ठ सुन्य समाय ।
बीजा काष्ट भखी जन जे हेठां उतरया, तेतां जल विना लहेरें पछटाय ॥२३॥

॥प्रकरण॥६८॥चौपाई॥८६४॥

सुन्य मण्डल सुध जो जो मारा संमंधी, आ इंडू जेहेने आधार ।
नेत नेत कही ने निगम वलिया, निगम ने अगम अपार ॥१॥
इहां आद अंत नहीं थावर जंगम, अजवास न कांई अंधार जी ।
निराकार आकार नहीं, नर न केहेवाय कांई नार जी ॥२॥
नाम न ठाम नहीं गुन निरगुन, पख नहीं परवान जी ।
आवन गवन नहीं अंग इंद्री, लख न कांई निरमान जी ॥३॥
इहां रूप न रंग नहीं तेज जोत, दिवस न कांई रात जी ।
भोम न अगिन नहीं जल वाए, न सब्द सोहं आकास जी ॥४॥
इहां रस न धात नहीं कोई तत्व, गिनान नहीं बल गंध जी ।
फूल न फल नहीं मूल बिरिख[1], भंग न कांई अभंग जी ॥५॥
अखंड तणां दरवाजा आडी, सुन्य मंडल विस्तार जी ।
एणें ठेकांणे बेठी अछती[2], बांधी ने हथियार जी ॥६॥
ए बल जोजो बलवंती नूं, एहनो कोई न काढे पार जी ।
अनेक उपाय कीधां घणें, पण कोए न पोहोंता दरबार जी ॥७॥
कोई न पोहोंतो इहां लगे, एहनो बोली[3] मारे प्रताप जी ।
आ पांचो एहनी छाया पड़ी छे, ए सुन्य मंडल विस्तार जी ॥८॥

॥प्रकरण॥६९॥चौपाई॥८७२॥

मूलगी चाल

हवे वासना हसे जे वेहदनी, ते जागीने जोसे निरधार ।
सत असत बंने जुआ करसे, एहनो तेहज उघाडसे बार[4] ॥१॥

१. वृक्ष । २. काल - निरंजन शक्ति । ३. डुबा देती है । ४. दरवाजा ।

एहमां वासना पांचे प्रगट थई, रची रामत देखाडी रूडी पेर ।
कारज करीने अखंडमां भलसे, अछर सरूप एहनूं घेर ।।२।।

रामत जोवा वाला ते जुआ, ते आगल वाणी थासे विस्तार ।
माया देखाडी ने वार उघाडी, जावूं अछर ने पार ।।३।।

सास्त्र साधोनी वाणी सर्वे, आगम भाखी छे अनेक ।
ते सर्वे आंही आवी ने मलसे, तेहना वंचासे ववेक ।।४।।

छर थी तीत अछर थया, अने अछरातीत केहेवाय ।
आपणने जावूं एणें घरें, इहां अटकलें केम पोहोंचाय ।।५।।

पार सुख थयूं एणी पेरे, हजी रमो तमें छाया मांहें ।
तमने फरी फरी आ भोम आडी आवे, तमें कामस न टालो क्यांहें ।।६।।

हूं संमंधी माटे बार उघाडूं, आपवाने सुख सत ।
खीजी वढीने हँसी तमारा, फरी फरी वालूं छूं चित ।।७।।

तमें राखी रदेमां अंधेर, ओलाडवा हींडो छो संसार ।
एणी पेरे उवट[1] चढ़ाय नहीं, जवाय नहीं पेले पार ।।८।।

सतगुर संग करे आप ग्रही, वचने धमावे निसंक ।
रस थई कस पूरे कसोटी, त्यारे आडो न आवे प्रपंच ।।९।।

तमसूं जुध करे घेन घारण, लज्या ने अहंकार ।
कायर ने कंपावे ए बल, बीक[2] ने भ्रांत विचार ॥१०॥

तमें गिनान[3] तणो अजवास लईने, उपलो टालो छो अंधेर ।
पण मांहेंलो सूतो निद्रा मांहें, तो केम जाए मननो फेर ॥११॥

ज्यारे वचने जगवसो वासना, त्यारे आप ओलखसो प्रकास ।
त्यारे पारब्रह्म नों पार थकी, तमें आंहीं देखसो अजवास ॥१२॥

हवे जेणे आपणने ए निध आपी, तेहना चरण ग्रहिए चित मांहें ।
निद्रा उडाडीने सुपन समावे, त्यारे जागी बेठा छैए जांहें ॥१३॥

१. औघट । २. डर । ३. ग्यान ।

हवे एणे चरणें तमें पांमसो, अखंड सुख कहिए जेह ।
सर्वा अंगे चित सुध करी, तमें सेवा ते करजो एह ॥१४॥
महामत कहे संमंधी सांभलो, मारा सब्दातीत सुजाण ।
चरण सों चित पूरो बांधजो, जिहां लगे पिंडमा प्राण ॥१५॥

॥प्रकरण॥७०॥चौपाई॥८८७॥

किरंतन आखिरके - राग श्री आसावरी

लाडलियां लाहूत की, जाकी असल चौथे आसमान ।
बड़ी बड़ाई इन की, जाकी सिफत करें सुभान ॥१॥
सो उतरी अर्स अजीम से, रूहें बारे हजार ।
साथ सेवक मलायक[1], पावे दुनियां सब दीदार ॥२॥
मोती कहे जो इन को, जाको मोल न काहूं होए ।
बारे डाली गिनती, सूरत आदमी सोए ॥३॥
मोमिन बड़े मरातबे, नूर बिलंद से नाजल[2] ।
इनों काम हाल सब नूर के, अंग इस्कै के भीगल ॥४॥
साल नव सै नब्बे मास नव, हुए रसूल को जब ।
रूहअल्ला मिसल गाजियों, मोमिन उतरे तब ॥५॥
औलिया लिल्ला दोस्त, जाके हिरदे हक सूरत ।
बंदगी खुदा और इनकी, बीच नाहीं तफावत[3] ॥६॥
एही गिरो इसलाम की, खड़ियां तले अर्स ।
या दुनियां या दीन में, सब में इनको जस ॥७॥
लोक जिमी आसमान के, साफ जो करसी सब ।
बुजरकी इन गिरोह की, ऐसी देखी न सुनी कब ॥८॥
गिरो उठाई अदल से, वास्ते पैगंमरों ।
देवें ग्वाही आखिर को, ऊपर मुनकरों ॥९॥

१. फिरस्ते, ईश्वरी सृष्ट । २. उतरे । ३. फरक ।

करें इमारत भिस्त की, कोसिस सिफत कामिल[1] ।
देवें खुसखबरी खुदा तिनको, जिनके नेक अमल ॥१०॥
गिरो बनी असराईल, जित महंमद पैगंमर ।
जिन कौल मकसूद सबन के, सो बीच इन आखिर ॥११॥
मुलक हुआ नबियन का, आखिर हिंदुओं के दरम्यान ।
गिरो भेख फकीर में, पातसाह महंमद परवान ॥१२॥
माएने रूजू सब इनसें, तौरेत दई है जित ।
होत पेहेचान खुदाए की, इन गिरो की सोहोबत ॥१३॥
बरसे बयान राह वतनी, कही सूरत मेह[2] इसलाम ।
गिरे भुने मुरग आसमान से, बनी असराईल पर तमाम ॥१४॥
छे हजार बाजू दोए बगल, जबराईल ऊपर रूहन ।
अग्यारैं सदी गिरह[3] खोल के, चले महंमद संग मोमिन ॥१५॥
खुदा देवे साहेदी खुदाए की, और ना किनहूं होए ।
करें बयान फुरमावें हुकम, लायक पूजने के सोए ॥१६॥
अलिफ लाम मीम हरफ ए कहे, ए भेद ना किन समझाए ।
सो छीले गए कुरान से, ए भेद जानें एक खुदाए ॥१७॥
इत हुज्जत न रही काहू की, तुम देखो एह सुकन ।
एह खिताब महंमद मेंहेंदी पें, जिन रोसन किए मोमिन ॥१८॥
कुंन के रोज की साहेदी, देवे एही उमत ।
सो कहे उस बखत की, जो ल्यावे एह हुज्जत ॥१९॥
तौरेत आई नूर बिलंद से, आखिर उमत करी बेसक ।
भई चिन्हार महंमद मुसाफ, जैसे पेहेचानने का हक ॥२०॥
सब सिफतें एक गिरोह की, लिखी जुदी जुदी जंजीर ।
कोई पावे न दूजा माएना, बिना महंमद फकीर ॥२१॥

॥प्रकरण॥७१॥चौपाई॥९०८॥

१. योग्य, पूर्ण कुशल । २. वर्षा । ३. गांठ ।

जंजीरां मुसाफ की, मोतियों में परोइए जब ।
जिनसें जिनस मिलाइए, पाइए मगज माएने तब ।।१।।
देऊं हरफ हरफ की आयतें, जो हादिऐं खोले द्वार ।
सब सिफत खास गिरोह की, लिखी बिध बिध बेसुमार ।।२।।
कलाम अल्ला की इसारतें, खोल दैयां खसम ।
महामत पर मेहेर मेहेबूबें, करी ईसे के इलम ।।३।।
ब्रह्मसृष्ट वेद पुरान में, कही सो ब्रह्म समान ।
कई बिध की बुजरकियां, देखो साहेदी कुरान ।।४।।
कहे छत्ता मगज मुसाफ के, जिनस जंजीरां जोर ।
सब सिफत खास गिरोह की, ए समझें एही मरोर[1] ।।५।।

।।प्रकरण।।७२।।चौपाई।।९१३।।

सास्त्रों की प्रनालिका-राग श्री

जो कोई सास्त्र संसार में, निरने कियो आचार ।
त्रिगुन त्रैलोकी पांच तत्व, ए मोह अहंको विस्तार ।।१।।
निराकार निरंजन सुन्य की, पाई न काल की विध ।
ना प्रकृत पुरूख की, न मोह अहं की सुध ।।२।।
उपज्या याको केहेवही, कहे प्रले होसी ए ।
ब्रह्म बतावें याही में, कहे ए सब माया के ।।३।।
उरझे सब याही में, पार सब्द न काढ़े एक ।
कथ कथ ग्यान जुदे पड़े, द्वैतै में देख देख ।।४।।
किन माया पार न पाइया, किन कह्यो न मूल वतन ।
सरूप न कह्यो काहूं ब्रह्म को, कहे उत चले न मन वचन ।।५।।
जो सास्त्रों की प्रनालिका, कहियत हैं विध इन ।
सो कर देऊं जाहेर, समझो चित चेतन ।।६।।

१. गुझ भेद ।

जो सुख परआतम को, सो आतम न पोहोंचत ।
जो अनुभव होत है आतमा, सो नाहीं जीव को इत ।।७।।

जो कछू सुख जीव को, सो बुध ना अंतस्करन ।
सुख अंतस्करन इंद्रियन को, उतर पोहोंचावे मन ।।८।।

जो सुख मन में आवत, सो आवे ना जुबां मों ।
और जो सुख जुबां से निकसे, सो क्यों पोहोंचे परआतम को ।।९।।

तो कह्या तीत सब्द से, जो कछू इत का पोहोंचे नाहें ।
असत ना मिले सत को, ऐसा लिख्या सास्त्रों मांहें ॥१०॥

जो कछू पिंड ब्रह्मांड की, सब फना कही सास्त्रन ।
अखंड के पार जो अखंड, तहां क्यों पोहोंचे झूठ सुपन ॥११॥

पंडित पढ़े सब इत थके, उत चले ना सब्द बुध मन ।
निरंजन के पार के पार, पोहोंचाऊं याही सास्त्रन ॥१२॥

मेरा अंग पांच तत्व का, इन अंतस्करन विचार ।
केहेनी लीला अछरातीत की, जो परआतम के पार ॥१३॥

ए देह मेरी हद की, इसी देह की अकल ।
धाम धनी सुख बरनन, केहेने चाहे असल ॥१४॥

आतम मेरी हद में, जीव कहे बुधें उतर ।
बुध मन पें कहावे जुबान सों, सो जुबां कहे क्यों कर ॥१५॥

असलें आतम न पाहोंचही, क्यों पोहोंचे जीव ग्यान ।
जो मन देत जुबांन को, सो जुबां करत बयान ॥१६॥

मैं बैठ सुपन की सृष्ट में, बोलूं इन जुबांन ।
जीव सृष्ट क्यों मानहीं, तो भी कर देऊँ नेक पेहेचान ॥१७॥

आतम रोग मिटावने, ए सुख, कहों मांहें सब्द ।
बेहद के पार के पार सुख, सो नेक बताऊं मांहें हद ॥१८॥

मेरे केहेना ब्रह्मसृष्ट को, इन मन जुबां माफक ।
झूठी जिमिएँ याही सास्त्रन सों, जाहेर कर देऊं हक ॥१९॥

साथ मेरा ब्रह्मसृष्ट का, तिन हिरदे साफ करन ।
सो निरमल क्यों होवहीं, धाम अखंड देखाए बिन ॥२०॥

सो हिरदे साफ हुए बिना, क्यों कर पोहोंचे धाम ।
हम भेजे आए धनी के, एही हमारा काम ॥२१॥

सास्त्रों तीनों सृष्ट कही, जीव ईश्वरी ब्रह्म ।
तिनके ठौर जुदे जुदे, ए देखियो अनुकरम ॥२२॥

जीव सृष्ट बैकुंठ लों, सृष्ट ईश्वरी अछर ।
ब्रह्मसृष्ट अछरातीत लों, कहे सास्त्र यों कर ॥२३॥

जो सृष्ट आई जिन ठौर से, घर पोहोंचे आप अपनी ।
पार दरवाजे खोल के, आखिर पोहोंचे कर करनी ॥२४॥

आप अपने वतन पोहोंचते, अटकाव न होवे किन ।
जो जहां से आइया, धनी तहां पोहोंचावे तिन ॥२५॥

जिन जानो सास्त्रों में नहीं, है सास्त्रों में सब कुछ ।
पर जीव सृष्ट क्यों पावहीं, जिनकी अकल है तुच्छ ॥२६॥

लोक जिमी आसमान के, ए सुपन की अकल ।
सो पांच तत्व को छोड़ के, आगे न सकें चल ॥२७॥

जो सुध आचारजों नहीं, सो जीवों नहीं बरतत ।
जाग्रत बुध ब्रह्मसृष्ट में, लिख्या जाहेर होसी आखिरत ॥२८॥

ऐसा सास्त्रों में लिख्या, ब्रह्म ब्रह्मसृष्टी सों ।
इत आए करसी अदल, दे दीदार सब को ॥२९॥

ब्रह्मसृष्टि धाम पोहोंचावसी, और मुक्त देसी सबन ।
कलजुग असुराई मेट के, पार पोहोंचावसी त्रिगुन ॥३०॥

और भी साख नीके देऊँ, कर देखो विचार ।
आखिर अथर्वन वेद पर, सब सृष्टों का मुद्दार ॥३१॥

तीनों वेदों ने यों कह्या, वेद अथर्वन सबको सार ।
ए वेद कुली में आखिर, त्रिगुन को उतारे पार ॥३२॥

ऐसा जाहेर कर लिख्या, पर जिनको नहीं आकीन ।
सो कैसे कर मानहीं, जिनकी मत मलीन ॥३३॥

कहे रसूल खुदा मैं देखिया, और ले आया फुरमान ।
कौल किया आखिर आवने, दीदार होसी सब जहान ॥३४॥

लिख्या है फुरमान में, खुदा काजी होसी आखिर ।
जरे जरे हिसाब लेय के, पोहोंचावे किसमत कर ॥३५॥

मोमिन मुतकी वास्ते, इत आवसी खुदाए ।
भिस्त देसी सबन को, लिख्या है इप्तदाए ॥३६॥

सो समया सरतें सब लिखीं, बीच अथर्वन ।
कहावें पढ़े महंमद के, पर पावें ना आकीन बिन ॥३७॥

रब एक राह चलावसी, देकर अपना इलम ।
करसी कायम सबन को, अपना चलाए हुकम ॥३८॥

सरीयत सो माने नहीं, खुदा बेचून बेचगून ।
कहे खुदाए की सूरत नहीं, बेसबी बेनिमून ॥३९॥

कहे आकीन महंमद पर, ऊपर कयामत और फुरमान ।
और कह्या न माने महंमद का, बड़ा देख्या ए ईमान ॥४०॥

नास्तिक कर बैठे हते, देख वेद कतेब के मांहें ।
पांच तत्व त्रिगुन बिना, कहे और कछुए नाहें ॥४१॥

और कहे नासूत[१] मलकूत[२], और तिन पर ला-मकान[३] ।
पढ़ के वेद कतेब को, करत माएने एह निदान ॥४२॥

१. मृत्युलोक । २. बैकुंठ । ३. निराकार ।

न तो ए सब्द सास्त्रों के, हुती सबों को सुध ।
तो भी पकड़े ला मकान सुन्य को, ऐसी जीवों नास्तिक बुध ॥४३॥

अब जाहेर हुई सृष्ट ब्रह्म की, और जाहेर वतन ब्रह्म ।
अर्स उमत जाहेर हुई, हुई जाहेर सूरत खसम ॥४४॥

खेल देखाया ब्रह्मसृष्ट को, करके हुकम आप ।
ए झूठा खेल कायम किया, करके इत मिलाप ॥४५॥

महामत कहे ब्रह्मसृष्ट को, ऐसा हुआ न होसी कब ।
गुझ सब जाहेर किया, ए जो लीला जाहेर हुई अब ॥४६॥

॥प्रकरण॥७३॥चौपाई॥९५९॥

राग श्री

भवजल चौदे भवन, निराकार पाल चौफेर ।
त्रिगुन लेहेरी निरगुन की, उठें मोह अहं अंधेर ॥१॥

तान तीखे ग्यान इलम के, दुन्द भमरियां अकल ।
बहें पंथ पैंडे आड़े उलटे, झूठ अथाह मोह जल ॥२॥

तामें बड़े जीव मोह जल के, मगर मच्छ विक्राल ।
बड़ा छोटे को निगलत, एक दूजे को काल ॥३॥

घाट ना पाई बाट किने, दिस न काहूं द्वार ।
ऊपर तले मांहें बाहेर, गए कर कर खाली विचार ॥४॥

जीवें आतम अंधी करी, मिल अंतस्करन अंधेर ।
गिरदवाए अंधी इंद्रियां, तिन लई आतम को घेर ॥५॥

पांच तत्व तारा ससि सूर फिरें, फिरें त्रिगुन निरगुन ।
पुरूख प्रकृति यामें फिरें, निराकार निरंजन सुंन ॥६॥

ए चौदे पल में पैदा किए, पांच तत्व गुन निरगुन ।
याही पल में फना हुए, निराकार सुन्य निरंजन ॥७॥

ए चौदे चुटकी में चल जासी, गुन निरगुन सुन्य तत्व ।
निराकार निरंजन सामिल, उड़ जासी ज्यों असत ॥८॥

देत काल परिकरमा इनकी, दोऊ तिमर तेज देखाए ।
गिनती सरत पोहोंचाए के, आखिर सबे उड़ाए ॥९॥

ए इंड जो पैदा किया, ए जो विश्व चौदे भवन ।
इनमें सुध न काहू को, ए उपजाए किन ॥१०॥

हम भी आए इन खेल में, बुध ना कछुए सुध ।
धनी आए अछरातीत, मोहे जगाई कई बिध ॥११॥

कह्या खेल किया तुम कारने, ए जो मांग्या खेल तुम ।
खेल देख के घर चलो, आए बुलावन हम ॥१२॥

निबेरा खीर नीर का, सास्त्र सबों का सार ।
अठोतर सौ पख को, कर दियो निरवार ॥१३॥

कई साखें सास्त्र साधुन[1] की, दे दे कराई पेहेचान ।
मूल सरूप देखाए धाम के, कर सनमंध दियो ईमान ॥१४॥

अंतस्करन में रोसनी, और रोसन करी आतम ।
गुन पख इंद्री रोसन, ऐसा बरस्या नूर खसम ॥१५॥

बोहोत सोर किया मुझ ऊपर, रोए रोए कहे वचन ।
अपनायत अपनी जान के, मोहे खोल दिए द्वार वतन ॥१६॥

क्यों कर कहूं मैं हेत की, जो धनिऐं किए भांत भांत ।
जगाई धाम देखावने, कई विध करी एकांत ॥१७॥

जिन सों सब विध समझिए, ऐसी दई मोहे सुध ।
सास्त्रों आगूं यों कह्या, धनी ले आवसी जाग्रत बुध ॥१८॥

अनेक लिखी निसानियां, करावने हमारी पेहेचान ।
जाने सब कोई सेवें इनको, कई किए साख निसान ॥१९॥

१. साधूओं की, संतों की ।

यों कई बिध समझाई दुनियां, देने हम पर ईमान इस्क ।
धनी नाम खिताब दे अपनों, मुझे बैठाई कर हक ॥२०॥

कई दिन सुनाई मुझ को, श्री मुख की चरचा ।
और सबे विध समझी, पर लग्या न कलेजे घा ॥२१॥

चौदे भवन के जो धनी, विश्व पूजत सब ताए ।
ए सुध नहीं काहू को, कोई और है इप्तदाए ॥२२॥

त्रिगुन इस ब्रह्मांड के, तिनको भी ए सुध नाहें ।
कहां से आए हम कौन हैं, कौन इन जिमी मांहें ॥२३॥

महाविष्णु सुन्य प्रकृती, निराकार निरंजन ।
ए काल द्वैत को कोहै, ए सुध नहीं त्रिगुन ॥२४॥

प्रले पैदा की सुध नहीं, तो ए क्यों जाने अछर ।
लोक जिमी आसमान के, इनकी याही बीच नजर ॥२५॥

अछर सरूप के पल में, ऐसे कई कोट इंड उपजे ।
पल में पैदा करके, फेर वाही पल में खपे ॥२६॥

ए जो न्यारा पारब्रह्म, इनकी भी करी रोसन ।
ए जो अछर अद्वैत, भी कहे तिनके पार वचन ॥२७॥

सो अछर मेरे धनी के, नित आवें दरसन ।
ए लीला इन भांत की, इत होत सदा बरतन[1] ॥२८॥

अछरातीत के मोहोल में, प्रेम इस्क बरतत ।
सो सुध अछर को नहीं, जो किन विध केलि[2] करत ॥२९॥

सो धाम वतन मोहे कर दियो, मेरो अछरातीत धनी ।
ब्रह्म सृष्ट मिनें सिरोमन, मैं भई सोहागिनी ॥३०॥

साख गुन पख इंद्रियां, आतम परआतम साख ।
सास्त्र सब ब्रह्मांड के, देत भाख[3] भाख कई लाख ॥३१॥

१. वर्तना, इस्तेमाल । २. खेल, क्रीड़ा । ३. विभिन्न भाषाओं द्वारा ।

ऐसा सुच्छम सरूप देखाए के, दे धाम करी चेतन ।
इत विलास कई बिध के, मांहें सिरदारी सैयन ॥३२॥

ऐसी साख देवाई कर सनमंध, आतम करी जाग्रत ।
सो आए धनी मेरे धाम से, कही विवेके कयामत ॥३३॥

ऐसे कई सुख परआतम के, अनुभव कराए अंग ।
तो भी इस्क न आइया, नेहेचल धनी सों रंग ॥३४॥

इन धाम की लीला मिने, इन धनी की अरधांग ।
तो भी प्रेम ना उपज्या, कोई आतम भई ऐसी अंध ॥३५॥

तब आप अंतरध्यान होए के, भेज दिया फुरमान ।
हम को इस्क उपजावने, इत कई विध लिखे निसान ॥३६॥

इन बिध देने ईमान, उपजावने इस्क ।
सो इस्क बिना न पाइए, ए जो नूर तजल्ला हक ॥३७॥

॥प्रकरण॥७४॥चौपाई॥९९६॥

राग श्री साखी

मेरे धनी धाम के दुलहा, मैं कर ना सकी पेहेचान ।
सो रोऊं मैं याद कर कर, जो मारे हेत के बान ॥१॥

सोई दरद अब आइया, लग्या कलेजे घाए ।
अब ए अचरज होत है, जो मुरदे रहत अरवाहे ॥२॥

अपनायत केती कहूं, जो करी हमसों तुम ।
नींद उड़ाई बुलावने, पोहोंचाया कौल हुकम ॥३॥

क्या रोई क्या रोऊंगी, उठी आग इस्क ।
थिर चर सारा जलिया, जाए झालां पोहोंची हक ॥४॥

जो साहेब मैं देखिया, सो मिले होए सुख चैन ।
तब लग आतम रोवत, सूके लोहू पानी नैन ॥५॥

जो पट आड़े धाम के, मैं ताए देऊं जार बार ।
कोई बिध करके उड़ाइए, ए जो लाग्यो देह विकार ।।६।।

बन बेली सब रोइया, और जंगल जानवर ।
कई पसु पंखी केते कहूं, जले जो दरदा कर ।।७।।

जंगल रोया जलिया, जल बल हुआ खाक ।
इनमें पंखी क्यों रहे, जो पर जल हुए पाक ।।८।।

पहाड़ रोए टूटे टुकड़े, हुए हैं भूक भूक ।
भवजल रोया सागर, सो गया सारा सूक ।।९।।

भोम रोई भली भांत सों, टूट गई रसातल ।
नाग लोक सब रोइया, सो पड़या जाए पाताल ॥१०॥

रोए पांच तत्व तीन गुन, निरंजन निराकार ।
रोई द्वैत पुरूख प्रकृती, पट उड़यो अंतर आकार ॥११॥

आकास रोया सब अंगों, मोह अहं गल्यो चहुंओर ।
निराकार निरंजन गलया, जाए रहया अंतर ठौर ॥१२॥

इस्कें आग फूंक दई, लाग्यो सब ब्रह्मांड ।
जब पोहोंची झालां अंतर लों, तब क्यों रहे ए पिंड ॥१३॥

आग इस्क ऐसी उठी, लोहू रोया वैराट ।
खाक हुआ जल बल के, उड़ गया सब ठाट ॥१४॥

महामत कहे मेहेबूब जी, खेल देख्या चाहया दिल ।
हांसी करी भली भांत सों, अब उठो सुख लीजे मिल ॥१५॥

।।प्रकरण।।७५।।चौपाई।।१०११।।

राग श्री

निज नाम सोई जाहेर हुआ, जाकी सब दुनी राह देखत ।
मुक्त देसी ब्रह्मांड को, आए ब्रह्म आतम सत ।।१।।

हो मेरी सत आतमा, तुम आओ घर सत खसम ।
नजर छोड़ो री झूठ सुपन, आए देखो सत वतन ।।२।।

तुम निरखो सत सरूप, सत स्यामाजी रूप अनूप[1] ।
साजो री सत सिनगार, विलसो संग सत भरतार ।।३।।

सत धनी सों करो हांस, पीछे करो प्रेम विलास ।
सत बरनन कीजो एह, उपजे सत प्रेम सनेह ।।४।।

सत साथ देत देखाई, सत आनन्द अंग न माई ।
सत साथ सों करो प्रीत, देखो सत घर की ए रीत ।।५।।

सत रेहेस सत रंग, सत साथ को सुख अभंग ।
तुम संग करो सत बातें, सत दिन और सत रातें ।।६।।

सत चांद और सत सूर, हिसाब बिना सत नूर ।
सत सोभा सत मंदिर, सत सुख सेज्या अंदर ।।७।।

सत जिमी सत बन, खुसबोए सत पवन ।
लेहेरी लेवे सत जल, सत आकास निरमल ।।८।।

सत पसु पंखी अलेखें, सत खेल राज साथ देखें ।
सत खेलें बोलें बन माहीं, सत सुख हिसाब काहूं नाहीं ।।९।।

रूत रंग रस नए नए, अलेखे सदा सुख कहे ।
सत जमुना त्रट किनारें, दोऊ तरफ बराबर हारें ॥१०॥

सत डारी झलूबे ऊपर जल, खुसबोए हिंडोले सीतल ।
सत सुख तलाब के त्रट, खोल देखो नैना पट ॥११॥

पसु गाए लगावें रट, गिरदवाए द्योहरी निकट ।
बड़ा अचरज मोहे एह, ए सुन क्यों रहे झूठी देह ॥१२॥

ए खेल झूठा तो छोड़या जाए, जो सत सुख अंग में भराए ।
जब सत सुख देखो केलि, तब झूठा दुख देओगे ठेलि ॥१३॥

१. सुन्दर, अनुपम ।

सत सांई सों करो विलास, तब टूट जाए झूठी आस ।
ज्यों ज्यों लेओगे सत सुख, त्यों त्यों छूटे असत दुख ॥१४॥
ज्यों ज्यों उठें सत सुख के तरंग, त्यों त्यों उड़े सुपन को संग ।
जब याद आवे सुख अपनों, तब छूटेगो झूठो सुपनो ॥१५॥
देखो मन्दिर मोहोल झरोखे, ज्यों छूट जाए दुख धोखे ।
देखो झूठी फेर फेर मारे, सत सुख बिना कोई न उबारे ॥१६॥
छोड़ घर को सुख अलेखे, आतम काहे को दुखड़ा देखे ।
आतम परआतम पेखे, सुख उपजे सत अलेखे ॥१७॥
जब आतम ने दई साख, साथें भी कही बेर लाख ।
सत धनिएं साख आए दई, सो तो सत वतन वालों ने लई ॥१८॥
आतम ने सत परचे पाए, तो भी झूठा दुख छोड़या न जाए ।
जब सत सुख पाया रस, जीवरा तबहीं चल्या निकस ॥१९॥
जब सत सुख लाग्यो रंग, तब क्यों रहे झूठे को संग ।
जब धनीसों उपज्यो सत सनेह, तब क्यों रहे झूठी देह ॥२०॥
जब सत सुख हिरदे में आवे, अरवा तबहीं निकस के जावे ।
जब सत सुख धनी पाया, तब जीवरा क्योंकर पकरे काया ॥२१॥
जब अंतर आंखां खुलाई, तब तो बाहेर की मुंदाई ।
जब अंतर में लीला समानी, तब अंग लोहू रह्या न पानी ॥२२॥
जब देख्या हांस विलास, गल गया हाड मांस स्वांस ।
जब अंतर आया सुमरन, रह्यो अंग ना अंतस्करन ॥२३॥
जब याद आयो सुख अखंड, तब रहे ना पिंड ब्रह्मांड ।
जब चढ़े विकट घाटी प्रेम, तब चैन ना रहे कछू नेम ॥२४॥
महामत कहे सुनो साथ, देखो खोल बानी प्राणनाथ ।
धनी ल्याए धाम से वचन, जिनसे न्यारे न होए चरन ॥२५॥

॥प्रकरण॥७६॥चौपाई॥१०३६॥

राग श्री

वतन बिसारिया रे, छलें किए हैरान ।
धनी आप बुध भूलियां, सुध न रही वृद्धि हान ।।१।।

ब्रह्मसृष्ट सखियां धाम की, आइयां छल देखन ।
जुदे जुदे घर कर बैठियां, खेलें भुलाए दिया वतन ।।२।।

धाम से रब्द करके, हम कब आवें दूजी बेर ।
सब भूले सुध हार जीत की, तो मैं कह्या फेर फेर ।।३।।

माहों मांहें कई प्रीत रीतसों, खेलें हँसें रस रंग ।
पेहेचान जिनों को पेड़ की, धनी को रिझावें सेवा संग ।।४।।

कई मिनो मिने काल क्रोध सों, लड़ाई करते दिन जाए ।
सेवा धनी न प्रीत सैयन सों, सो डारी आसमान से पटकाए ।।५।।

कई सेवें धनीय को, करके प्रेम सनेह ।
हम सैयों को पेहेचान पेड़ की, होसी धाम में धंन धंन एह ।।६।।

कई अवगुन लेवें धनीय का, करें आप भी अवगुन ।
नाहीं सनेह सुख साथ सों, यों वृथा खोवें रात दिन ।।७।।

तुम सूती धनिएं जगाइया, कह्या आगे मौत का दिन ।
कई साख पुराई आपे अपनी, तो भी छूटे न दुख अगिन ।।८।।

सुख देखाए वतन के, सो भी कायम सुख अलेखे ।
तो भी छल छूटे नहीं, जो आपे आंखें अपनी देखे ।।९।।

देख के अवसर भूलहीं, बहोरि[1] न आवे ए अवसर ।
जानत हैं आग लगसी, तो भी छूटे ना छल क्योंए कर ॥१०॥

पीछे पछतावा क्या करे, जब गया समया चल ।
ऐसे क्यों भूलें अंकूरी, जाके सांचे घर नेहेचल ॥११॥

१. दुबारा ।

जो जाग बातें करें उमंगसों, सो हंस हंस ताली दे ।
जिन नींद दई सुख इंद्रियों, सो उठी उंघाती दुख ले ॥१२॥

क्या बल केहेसी कायर माया को, जो गए सागर में रल ।
सामें पूर जो चढ़या होसी, सो केहेसी तिखाई मोह जल ॥१३॥

दे साख धनिऐं जगाइया, दई बिध बिध की सुध ।
भांत भांत दई निसानियां, तो भी ठौर न आवे निज बुध ॥१४॥

महामत कहे जो होवे धाम की, सो पेहेचान के लीजो लाहा ।
ले सको सो लीजियो, फेर ऐसा न आवे समया ॥१५॥

॥प्रकरण॥७७॥चौपाई॥१०५१॥

राग श्री

सखी री जान बूझ क्यों खोइए, ऐसा अलेखे सुख अखण्ड ।
सो जाग देख क्यों भूलिए, बदले सुख ब्रह्मांड ॥१॥

कई कोट राज बैकुंठ के, न आवे इतके खिन समान ।
सो जनम वृथा जात है, कोई चेतो सुबुध सुजान ॥२॥

एक खिन न पाइए सिर साटें[1], कई मोहोरों पदमों लाख करोड़ ।
पल एक जाए इन समें की, कछू न आवे इन की जोड़ ॥३॥

इन समें खिन को मोल नहीं, तो क्यों कहूं दिन मास बरस ।
सो जनम खोया झूठ बदले, पिउसों भई ना रंग रस ॥४॥

काहूं बदले न पाइए, कई दौड़त मुझ देखत ।
पर रास न आया किनको, जो लों धनी नहीं बकसत ॥५॥

सुख अखण्ड अछरातीत को, इन समें पाइयत हैं इत ।
कहा कहूं कुकरम तिनके, जो मांहें रेहे के खोवत ॥६॥

कैयों खोया जनम अपना, रहे धनी के जमाने मांहें ।
हाए हाए कहा कहूं मैं तिनको, जो इनमें से निरफल जाए ॥७॥

१. बदले ।

कैयों जनम सुफल किए, ऐसा पिउ का समया पाए ।
सेवा सनमुख जनम लों, लिया हुकम सिर चढ़ाए ।।८।।

एक साइत वृथा न गई, धनी किए सनकूल ।
चले चित्त पर होए आधीन, परी ना कबहूं भूल ।।९।।

सो इत भी होए चले धंन धंन, धाम धनी कहें धंन धंन ।
साथ में भी धंन धंन हुइयां, याके धंन धंन हुए रात दिन ॥१०॥

कई छिपे रहे मांहें दुस्मन, और मारें राह औरन ।
चाल उलटी चल देखावहीं, तो भी धनी ना तजें तिन ॥११॥

दृष्ट उपली सजन हो रहे, बोल देखावें मीठे बैन ।
जनम सारा धनी संग रहे, कबूं दिल न दिया सुख चैन ॥१२॥

इन बिध कई रंग साथ में, यों बीते कई बीतक ।
सब पर मेहेर मेहेबूब की, पर पावे करनी माफक ॥१३॥

दुख माया धनीपें मांग के, हम आए जिमी इन ।
सो छल सरूप अपनो देखावहीं, तो भी भूलें नहीं सोहागिन ॥१४॥

और भी देखो विचार के, तो हुकमें सब कछू होए ।
बिना हुकम जरा नहीं, हार जीत देखावे दोए ॥१५॥

महामत कहें लिया मांग के, ए धनिएं देखाया छल ।
जो सनमुख रहेसी धनी धामसों, सो केहेसी छल को बल ॥१६॥

।।प्रकरण।।७८।।चौपाई।।१०६७।।

राग श्री मारू

साथजी पेहेचानियो, ए बानी समया फजर ।
हुई तुमारे कारने, खोल देखो निज नजर ।।१।।

त्रिविध दुनी तीन ठौर की, चले तीन विध मांहें ।
कोई छोड़े न अंकूर अपना, होवे करनी तैसी तांहें ।।२।।

सुरता तीनों ठौर की, इत आई देह धर ।
ए तीनों रोसन नासूत में, किया बेवरा इमामें आखिर ।।३।।

इन विध जाहेर कर लिख्या, सास्त्रों के दरम्यान ।
तीन सृष्ट आई जुदी जुदी, पोहोंचे अपने ठौर निदान ।।४।।

त्रिगुन से पैदा हुई, ए जो सकल जहान ।
सो खेले तीनों गुन लिए, नाहीं एक दूजे समान ।।५।।

आतम एक्यासी पख ले, सब दुनियां में खेलत ।
मोह अहं मूल इनको, सब याही बीच फिरत ।।६।।

मोह अहं गुन की इंद्रियां, करे फैल पसु परवान ।
फिरे अवस्था तीन में, ए जीव सृष्ट पेहेचान ।।७।।

सुबुध निकट न आवहीं, चले बेहेर दृष्ट ।
आतम दृष्ट न लेवहीं, तो कही सुपन की सृष्ट ।।८।।

जाग्रत तरफ दुनीय की, सोवत सुपना ले ।
देखत सुपना नींद सें, ए तीनों अवस्था जीव के ।।९।।

और सृष्ट जो ईश्वरी, कही जाग्रत सृष्ट आतम ।
सुबुध अंग करनी सुध, चले फुरमान हुकम ॥१०॥

एही सृष्ट ईश्वरी जाग्रत, आई अछर नूर से जे ।
मेहेर ले मेहेबूब की, रहे तुरी अवस्था ए ॥११॥

ब्रह्मसृष्टी आई अर्स से, जीत इंद्री सुध अंग ।
छोड़ मांहें बाहेर दृष्ट अंतर, परआतम धनी संग ॥१२॥

एक सुख नेहेचल धाम को, और सुख अखंड अछर ।
तीसरो बैकुंठ सुपनों, ए त्रिधा सृष्ट यों कर ॥१३॥

कृपा है कई विध की, ए जो तीनों सृष्ट ऊपर ।
एक एक पर कई विध, इनका बेवरा सुनो दिल धर ॥१४॥

कृपा करनी माफक, कृपा माफक करनी ।
ए दोऊ माफक अंकूर के, कई कृपा जात ना गिनी ॥१५॥

धाम अंकूर एक बिध को, कई विध कृपा केलि ।
ए माफक कृपा करनी भई, करने खुसाली खेलि ॥१६॥

सृष्ट ईश्वरी कही अंकूरी, औरों अंकूर दिए कई ।
तिन जुदा जुदा ठौर नेहेचल, कृपा अंकूर से भई ॥१७॥

भिस्त होसी आठ विध की, और आठ विध का अंकूर ।
हर अंकूर कृपा कई विध, ले उठसी नेहेचल नूर ॥१८॥

करनी देखाई अंकूर की, हुई तीनों की तफावत[1] ।
सो तीनों रोसन भए, चढ़ते तराजू बखत ॥१९॥

करनी छिपी ना रहे, न कछू छिपे अंकूर ।
मेहेर भी माफक अंकूर के, उदे होत सत सूर ॥२०॥

क्या गरीब क्या पातसाह, क्या नजीक क्या दूर ।
निकस आया सबन का, तीन बिध का अंकूर ॥२१॥

हर एक के तीन तीन, तिन तीनों के सत्ताईस ।
यों चढ़ते तराजू चढ़े, नफा नसल न नाते रीस[2] ॥२२॥

दया भी तिन पर होएसी, जिनके असल अंकूर ।
अव्वल मध और आखिर, सनमुख सदा हजूर ॥२३॥

ए छल जिमी करम करावहीं, आपको बुरा न चाहे कोए ।
तो भी मेहेर न छोड़े मेहेबूब, पर करनी छल बस होए ॥२४॥

जाहेर हुई सबन की, आखिर गिरो आकल[3] ।
अंदर की उदे हुई, समें पावने फल ॥२५॥

छिपी किसी की ना रहे, करना धनी अदल[4] ।
सांच झूठ जैसा जिनों, चढ़ आया तराजू दिल ॥२६॥

१. अंतर । २. होड़ । ३. बुद्धिमान । ४. न्याय ।

वतन के अंकूर बिना, इत दुनी करे कई बल ।
मुक्त सुख इत होएसी, पर पावे न धाम नेहेचल ॥२७॥

कई आए अनुभव लेयके, सो पीछे दिए पटकाए ।
धनी दया अंकूर बिना, किन सत सुख लियो न जाए ॥२८॥

कदी सौ बरस रहो साथ में, धनी अनुभव सौ बेर ।
मूल अंकूर दया बिना, ले करमें डाले अंधेर ॥२९॥

दया और अंकूर की, छिपे न करनी नूर ।
मन वाचा करम बांध के, दूजा ऐसा कर ना सके जहूर[1] ॥३०॥

महामत कहे तिन वास्ते, ए तीनों हैं सामिल ।
करनी कृपा अंकूर, वाके छिपे ना अमल[2] ॥३१॥

॥प्रकरण॥७९॥चौपाई॥१०९८॥

राग श्री

मेरे मीठे बोले साथ जी, हुआ तुमारा काम ।
प्रेमै में मगन होइयो, खुल्या दरवाजा धाम ॥
सखी री धाम जईए ॥टेक ॥१॥

दौड़ सको सो दौड़ियो, आए पोहोंच्या अवसर ।
फुरमान में फुरमाइया, आया सो आखिर ॥२॥

बरनन करते जिनको, धनी केहेते सोई धाम ।
सेवा सुरत संभारियो, करना एही काम ॥३॥

बन विसेखे देखिए, मांहें खेलन के कई ठाम ।
पसु पंखी खेलें बोलें सुन्दर, सो मैं केते लेऊं नाम ॥४॥

स्याम स्यामा जी सुन्दर, देखो करके उलास ।
मनके मनोरथ पूरने, तुम रंग भर कीजो विलास ॥५॥

१. प्रकास । २. चाल (आचरण) ।

इस्क आयो पिउ को, प्रेम सनेही सुध ।
विविध विलास जो देखिए, आई जागनी बुध ।।६।।
आनंद वतनी आइयो, लीजो उमंग कर ।
हँसते खेलते चलिए, देखिए अपनों घर ।।७।।
सुख अखंड जो धाम को, सो तो अपनों अलेखें ।
निपट आयो निकट, जो आंखां खोल के देखे ।।८।।
अंग अनुभवी असल के, सुखकारी सनेह ।
अरस परस सबमें भया, कछु प्रेमें पलटी देह ।।९।।
मंगल गाइए दुलहे के, आयो समें स्यामा वर स्याम ।
नैनों भर भर निरखिए, विलसिए रंग रस काम ॥१०॥
धाम के मोहोलों सामग्री, माहें सुखकारी कई बिध ।
अंदर आखें खोलिए, आई है निज निध ॥११॥
विलास विसेखें उपज्या, अंदर कियो विचार ।
अनुभव अंगे आइया, याद आए आधार ॥१२॥
दरदी विरहा के भीगल[1], जानों दूरथें आए विदेसी ।
घर उठ बैठे पल में, रामत देखाई ऐसी ॥१३॥
उठके नहाइए जमुना जी, कीजे सकल सिनगार ।
साथ सनमंधी मिल के, खेलिए संग भरतार ॥१४॥
महामत कहे मलपतियां[2], आओ निज वतन ।
विलास करो विध विध के, जागो अपने तन ॥१५॥

।।प्रकरण।।८०।।चौपाई।।१११३।।

राग मारू

सुन्दर साथजी ए गुन देखो रे, जो मेरे धनिएँ किए अलेखे ।।टेक।।
क्यों ए न छोड़े माया हम को, हम भी छोड़ी न जाए ।
अरस-परस यों भई बज्र[3] में, सो मेरे धनिएँ दई छुटकाए ।।१।।

१. मग्न । २. मुस्कुराती । ३. अमिट ।

कोई ना निकस्या इन माया से, अव्वल सेती आज दिन ।
सो धनिएँ बल ऐसो दियो, हम तारे चौदे भवन ।।२।।

आगे हुई ना होसी कबहूं, हमें धनिएँ ऐसी सोभा दई ।
सब पूजें प्रतिबिंब हमारे, सो भी अखंड में ऐसी भई ।।३।।

धनिएँ भिस्त कराई हमपे, किल्ली हाथ हमारे ।
लोक चौदे हम किए नेहेचल, सेवें नकल हमारी सारे ।।४।।

ऐसी बड़ाई दई हम गिरो को, और किए औरों के अधीन ।
फेर कहे इन पिउ पेहेचाने, याही में आकीन ।।५।।

चौदे भवन को दिया आकीन, सो भी कहे गिरो बल दिया ।
सोभा अलेखें कहूं मैं केती, ऐसा धनिएँ हमसों किया ।।६।।

बिन जाने बिन पेहेचाने कई सुख, ऐसे धनिएँ हमको देखाए ।
अबलों गिरो न जाने धनी गुन, सो जागनी हिरदे चढ़ आए ।।७।।

ऐसे ब्रह्मांड अलेखें अछरथें, पलथें पैदा फना होत ।
ऐसे इंड में चींटी बराबर, हम गिरो हुई उद्दोत[1] ।।८।।

सो चींटी सहूर दे समझाई, धनिएँ आप जैसे कर लिए ।
कर सनमंध अछरातीत सों, ले धनी धाम के किए ।।९।।

अवगुन अलेखें हम किए पिउसों, तापर ऐसे धनी के गुन ।
कई विध सुख ऐसे धनीय के, क्यों कर कहूं जुबां इन ॥१०॥

इन विध सुख दिए अलेखें, ऐसे गुन मेरे पिउ ।
तामें एक गुन जो याद आवे, तो तबहीं निकस जाए जिउ ॥११॥

महामत कहे गुन इन धनी के, सो इन मुख कहे न जाए ।
एक गुन जो याद आवे, तो तबहीं उड़े अरवाए ॥१२॥

।।प्रकरण।।८१।।चौपाई।।११२५।।

१. प्रकट ।

राग श्री

सखीरी मेहेर बड़ी मेहेबूब की, अखंड अलेखे ।
अंतर आंखां खोलसी, ए सुख सोई देखे ।।१।।
न था भरोसा हम को, जो भवजल उतरें पार ।
इन जुबां केती कहूं, इन मेहेर को नाहीं सुमार ।।२।।
मेरे दिल की देखियो, दरद न कछू इस्क ।
ना सेवा ना बंदगी, एह मेरी बीतक ।।३।।
मेहेरें हमको ऐसा किया, करी वतन रोसन ।
मुक्त दे सचराचर[1], हम तारे चौदे भवन ।।४।।
क्यों मेहेर मुझ पर भई, ए थी दिल में सक ।
मैं जानी मौज मेहेबूब की, वह देत आप माफक ।।५।।
बढ़त बढ़त मेहेर बढ़ी, वार न पाइए पार ।
एक ए निरने में ना हुई, वाको वाही जाने सुमार ।।६।।
और मेहेर ए देखियो, कर दियो धाम वतन ।
साख पुराई सब अंगों, यों कई विध कृपा रोसन ।।७।।
अंदर सब मेरे यों कहें, धाम से आए मांहें सुपन ।
है सनमंध धनी धामसों, ए साख मेहेर से उतपन ।।८।।
मेरे सतगुर धनिएँ यों कह्या, और कह्या वेद पुरान ।
सो खोल दिए मोहे माएने, कर दई आतम पेहेचान ।।९।।
सब मिल साख ऐसी दई, जो मेरी आतम को घर धाम ।
सनमंध मेरा सब साथ सों, मेरो धनी सुंदर वर स्याम ॥१०॥
इत अछर आवे नित्याने, मेरे धनी के दीदार ।
ए निसबत भई हम गिरोह की, क्यों कहूं इन सुख को पार ॥११॥

१. चल अचल ।

ए आतम को नेहेचे भयो, संसे दियो सब छोड़ ।
परआतम मेरी धाम में, तो कही सनमंध संग जोड़ ॥१२॥

परआतम के अंतस्करन, जेती बीतत बात ।
तेती इन आतम के, करत अंग साख्यात ॥१३॥

ए भी धनिएँ श्रीमुख कह्या, और दई साख फुरमान ।
ए दोऊ मिल नेहेचे कियो, यों भई दृढ़ परवान ॥१४॥

और मेहेर ए देखियो, ऐसा कर दिया सुगम ।
बिन कसनी बिन भजन, दियो धाम धनी खसम ॥१५॥

ना जप तप ना ध्यान कछू, ना जोगारंभ[1] कष्ट ।
सो देखाई बृज रास में, एही वतन चाल ब्रह्मसृष्ट ॥१६॥

चलत चाल घर अपने, होए न कसाला किन ।
आयस[2] कछू न आवहीं, सब अपनी में मगन ॥१७॥

सोई गुन पख इंद्रियां, धाम वतन की देह ।
सोई मिलना परआतम का, सब सुखै के सनेह ॥१८॥

सोई सेहेज सोई सुभाव, सोई अपना वतन ।
सोई आसा लज्या सोई, सोई करना न कछू अन[3] ॥१९॥

सोई लोभ सोई लालच, सोई अपनों अहंकार ।
सोई काम प्रेम करतब, सोई अपना वेहेवार ॥२०॥

सोई मन बुध चितवन, सोई मिलाप सैयन ।
सोई हाँस विलास सोई, करते रात दिन ॥२१॥

धाम लीला जाहेर करी, विध विध की रोसन ।
दिया सुख अखण्ड दुनी को, और कायम किए त्रिगुन ॥२२॥

जो जागो सो देखियो, ए लीला सब्दातीत ।
मेहेरें इत प्रगट करी, मूल धाम की रीत ॥२३॥

१. योगाभ्यास । २. पश्चाताप । ३. अन्य (और) ।

हुकम सरत इत आए मिली, जो फुरमाई थी फुरमान ।
महामत साथ को ले चले, कर लीला निदान ॥२४॥

॥प्रकरण॥८२॥चौपाई॥११४९॥

राग श्री

धंन धंन ए दिन साथ आनंद आयो॥ टेक॥

अखण्ड में याद देने, ए जो बैन बजायो ।
चित दे साथ को ले, आप में समायो ॥१॥

अखण्ड में याद देने, ए जो खेल बनायो ।
बृज रास जागनी में, ए जो खेल खेलायो ॥२॥

पिउ ने प्रकास्यो पेहेले, आयो सो अवसर ।
बृज ले रास में खेले, खेले निज घर ॥३॥

विध विध विलास हाँस, अंग थें उतपन ।
नए नए सुख सनेह, हुए हैं रोसन ॥४॥

चेहेन चरित्र चातुरी, बृज रास की लई ।
अनुभव असलू अंग में, आए चढ़ी धाम की सही ॥५॥

बढ़त बढ़त प्रीत, जाए लई धाम की रीत ।
इन विध हुई है इत, साथ की जीत ॥६॥

झूठी जिमी में बैठाए के, देखाए सुख अपार ।
कौन देवे सुख दूजा ऐसे, बिना इन भरतार ॥७॥

मैं सुन्यो पिउ जी पे, श्री धाम को बरनन ।
सो भेदयो रोम रोम मांहें, अंग अन्तस्करन ॥८॥

छक्यो साथ प्रेम रस मातो, छूटे अंग विकार ।
परआतम अन्तस्करन उपज्यों, खेले संग आधार ॥९॥

दुलहे ने दिल हाल दे, खैंच लिए दिल सारे ।
कहा कहूं सुख इन विध, जो किए हाल हमारे ॥१०॥

मद[1] चढ़्यो महामत भई, देखो ए मस्ताई ।
धाम स्याम स्यामाजी साथ, नख सिख रहे भराई ॥११॥

अन्तस्करन निसान आए, ले आतम को पोहोंचाए ।
इन चोटें ऐसे चुभाए, नींद दई उड़ाए ॥१२॥

चढ़ते चढ़ते रंग सनेह, बढ़्यो प्रेम रस पूर ।
बन जमुना हिरदे चढ़ आए, इन विध हुए हजूर ॥१३॥

पिए हैं सराब प्रेम, छूटे सब बंधन नेम ।
उठ बैठे मांहें धाम, हँस पूछे कुसल[2] खेम ॥१४॥

महामत महामद चढ़ी, आयो धाम को अहमद[3] ।
साथ छक्यो सब प्रेम में, पोहोंचे पार बेहद ॥१५॥

॥प्रकरण॥८३॥चौपाई॥११६४॥

राग श्री धना श्री

धंन धंन सखी मेरे सोईरे दिन, जिन दिन पियाजी सो हुओ रे मिलन ।
धंन धंन सखी मेरे हुई पेहेचान, धंन धंन पिउ पर मैं भई कुरबान ॥१॥

धंन धंन सखी मेरे नेत्र अनियाले[4], धंन धंन धनी नेत्र मिलाए रसाले ।
धंन धंन मुख धनी को सुन्दर, धंन धंन धनी चित चुभायो अन्दर ॥२॥

धंन धंन धनी के वस्तर भूखन, धंन धंन आतम से न छोडूं एक खिन ।
धंन धंन सखी मैं सजे सिनगार, धंन धंन धनिऐं मोकों करी अंगीकार[5] ॥३॥

धंन धंन सखी मैं सेज बिछाई, धंन धंन धनी मोको कंठ लगाई ।
धंन धंन सखी मेरे सोई सायत, धंन धंन विलसी मैं पिउसों आयत[6] ॥४॥

धंन धंन सखी मेरी सेज रस भरी, धंन धंन विलास मैं कई विध करी ।
धंन धंन सखी मेरे सोई रस रंग, धंन धंन सखी मैं किए स्याम संग ॥५॥

१. मस्ती । २. हाल चाल । ३. गर्व पूर्ण मस्ती । ४. बांके । ५. स्वीकार । ६. अनायास, अचानक ।

धंन धंन सखी मोको कहे दिल के सुकन, धंन धंन पायो मैं तासों आनंद घन ।
धंन धंन मनोरथ किए पूरन, धंन धंन स्यामें सुख दिए वतन ।।६।।

धंन धंन सखी मेरे पिउ कियो विलास, धंन धंन सखी मेरी पूरी आस ।
धंन धंन सखी मैं भई सोहागिन, धंन धंन धनी मुझ पर सनकूल मन ।।७।।

धंन धंन सखी मेरे मन्दिर सोभित, धंन धंन सरूप सुन्दर प्रेम प्रीत ।
धंन धंन चौक चबूतरे सुन्दर, धंन धंन मोहोल झरोखे अन्दर ।।८।।

धंन धंन जवेर नकस चित्रामन, धंन धंन देखत कई रंग उतपन ।
धंन धंन थंभ गलियां दिवाल, धंन धंन सखियां करे लटकती चाल ।।९।।

धंन धंन सखी मेरे भयो उछरंग, धंन धंन सखियों को बाढ़यो रस रंग ।
धंन धंन सखी मैं जोवन मदमाती, धंन धंन धाम धनी सों रंगराती ॥१०॥

धंन धंन साथ मुख नूर रोसन, धंन धंन सुख सदा धाम वतन ।
धंन धंन सखी मेरे भूखन झलकार, कौन विध कहूं न पाइए पार ॥११॥

धंन धंन नूर सबमें रह्यो भराई, देखे आतम सो मुख कह्यो न जाई ।
धंन धंन साथ छक्यो अलमस्त, धंन धंन प्रेम माती महामत ॥१२॥

।।प्रकरण।।८४।।चौपाई।।११७६।।

राग श्री
तीन विध का चलना

ए जो कही जागन, सखी री जाग चलो ।। टेक।।

वचन नीके विचारियो, जो कोई सोहागिन ।
जाग चलो पिउसों मिलो, सुख अखण्ड आनन्द अति घन ।।१।।

जाग्रत सब्द धनीय के, ततखिन करें मकसूद[1] ।
सोई सब्द लिए बिना, होए जात नाबूद[2] ।।२।।

कई किताबें या बानियां, कही मैं साथ कारन ।
इनमें से मैं मेरे सिर, लिया ना एक वचन ।।३।।

१. इच्छा पूर्ती । २. नष्ट ।

ए जो जाग्रत वचन, सुपन रहे ना आगूं जाग ।
पर लिया ना सिर अपने, तो रही सुपन देह लाग ।।४।।

अबहीं जो सिर लीजिए, एक वचन जाग्रत ।
तो तबहीं जाग के बैठिए, उड़ जाए सुपन सुरत ।।५।।

ए वचन ऐसे जाग्रत, जगावत ततखिन ।
जो न लीजे सिर अपने, तो कहा करे वचन ।।६।।

मैं न लिया सिर अपने, तो कहा देऊं दोष औरन ।
जागे सुपना क्यों रहे, पर हुआ हाथ इजन[1] ।।७।।

जाग्रत वचन अनुभवें, अखंड घर वतन ।
अचरज बड़ो होत है, देह उड़त ना झूठ सुपन ।।८।।

साख देवाई सब अंगों, दया और अंकूर ।
अनुभव वतनी होत है, देह होत न झूठी दूर ।।९।।

मैं बिध बिध करके वचनों, मारे ३तरवारों घाए ।
टूक टूक जुदे करहीं, तो भी उड़त नहीं अरवाहे ॥१०॥

सब्द बान सतगुर के, रोम रोम निकसे फूट ।
बड़ा अचंभा होत है, देह जात न झूठी टूट ॥११॥

मैं जान्या अपने तन को, मारों भर भर बान ।
तिनसे झूठी देह को, फना करों निदान ॥१२॥

ए सब्द धनी फुरमान के, भी ले अनुभव आतम ।
तिनसे उड़ाऊं सुपना, पर कोई साइत[2] हाथ हुकम ॥१३॥

अब तो आतम ने ए दृढ़ किया, देह उड़े ना बिना इस्क ।
जोस इस्क दोऊ मिलें, तब उड़े देह बेसक ॥१४॥

दुख ना दीजे देह को, सुखे छोड़िए सरीर ।
ए सिध इन विध होवहीं, जो जोस इस्क करे भीर[3] ॥१५॥

१. हुकम । २. शुभ घड़ी । ३. जोर लगाना ।

अब दौड़े जोस इस्क को, याद कर साथ धनी धाम ।
ए धनी बिना ना आवहीं, जोस इस्क प्रेम काम ॥१६॥
तामस राजस स्वांतस, चलें मांहें गुन तीन ।
वचन अनुभव इस्क, हुआ जाहेर आकीन ॥१७॥
हँसें खेलें बिध तीनमें, छोड़े देह सुपन ।
महामत कहें सुख चैन में, धनी साथ मिलन ॥१८॥

॥प्रकरण॥८५॥चौपाई॥११९४॥

राग श्री

साथ जी जागिए, सुनके सब्द आखिर ।
सकल आउध अंग साज के, दौड़ मिलिए धनी निज घर ॥१॥
धनी के केहेलाए मैं कहे, तुमको चार सब्द ।
किन ज्यादा किन कम लिए, किन कर डारे रद ॥२॥
किन कम किन ज्यादा जीतिया, कोई हाथ पटक चल्या हार ।
साथ जी यों बाजी मिने, कोई जीत्या बेसुमार ॥३॥
अब सो समया आए पोहोंचिया, मेरे तो लेना सिर ।
धनिएँ बानी करता मुझे किया, सो मैं मुख फेरों क्यों कर ॥४॥
कोई सिर ल्यो तो लीजियो, धनिएँ केहेलाए साथ कारन ।
न तो मेरे सिर जरूर है, एही सब्द बल वतन ॥५॥
ए नीके मैं जानत हों, करी है तुम पेहेचान ।
तुममें विरला कोई पीछे पड़े, आखिर ल्योगे सिर निदान[1] ॥६॥
मेरे तो आगूं होवना, धनिएँ दिया सिर भार ।
समझ सको सो समझियो, कर आतम अंतर विचार ॥७॥
अब मैं दिल विचारिया, लिया न सिर सब्द ।
तो झूठी देह लग रही, जो बांधी मांहें हद ॥८॥

१. मानना, शिरोधार्य करना ।

एक सब्द जो जाग्रत, अंतर आतम चुभाए ।
तो ए देह झूठी सुपन की, तबहीं देवे उड़ाए ।।९।।
आगूं जाग्रत वचन के, क्यों रहे देह सुपन ।
मोहे अचरज आगूं सांच के, देह झूठी राखी किन ॥१०॥
ए भी फेर विचारिया, सांच आगे न रहे अनित[1] ।
एह बल हुकम के, देह सुपन रही इत ॥११॥
सोई हुकम आए पोहोंचिया, जो करी थी सरत ।
सब्द भी सिर पर लिए, आया वतन बल जाग्रत ॥१२॥
अब हुकम धनीय के, सब बिध दई पोहोंचाए ।
चेत सको सो चेतियो, लीजो आतम जगाए ॥१३॥
अब भली बुरी इन दुनीय की, ए जिन लेओ चित ल्याए ।
सुरत पकी करो धाम की, परआतम धनी मिलाए ॥१४॥
दुख सुख डारो आग में, ए जो झूठी माया के ।
पिंड ना देखो ब्रह्मांड, राखो धाम धनी सुरत जे ॥१५॥
कोई देत कसाला[2] तुमको, तुम भला चाहियो तिन ।
सरत[3] धाम की न छोड़ियो, सुरत पीछे फिराओ जिन ॥१६॥
जो कोई होवे ब्रह्मसृष्ट का, सो लीजो वचन ए मान ।
अपने पोहोरे[4] जागियो, समया पोहोंच्या आन ॥१७॥
सूता होए सो जागियो, जाग्या सो बैठा होए ।
बैठा ठाढ़ा होइयो, ठाढ़ा[5] पांउ भरे आगे सोए ॥१८॥
यों तैयारी कीजियो, आगूं करनी है दौड़ ।
सब अंग इस्क लेय के, निकसो ब्रह्मांड फोड़ ॥१९॥
महामत कहें मेरे साथ जी, लीजो आखिर के वचन ।
हुकम सरत पोहोंची दया, कछू अंग अपने करो रोसन ॥२०॥

।।प्रकरण।।८६।।चौपाई।।१२१४।।

१. नाशवान । २. कष्ट । ३. संकल्प, निश्चय । ४. अवसर । ५. खड़ा ।

राग श्री

आग परो तिन कायरों, जो धाम की राह न लेत ।
सरफा[1] करे जो सिर का, और सकुचे जीव देत ।।१।।

पाइयत झूठ के बदले, सत सुख अखंड ।
सो देख पीछे क्यों होवहीं, करते कुरबानी पिंड ।।२।।

इन विध कहे संसार में, धनी रंचक[2] दिलासा दे ।
टूक टूक होए जाए फना, सब अंग आसिक के ।।३।।

धनिएँ दई दिलासा मुझको, कई पदमों लाख करोड़ ।
तब आतम ने यों कह्या, परआतम धनी संग जोड़ ।।४।।

देख दिलासा धनीय की, भी साख दई सबन ।
मांहें बाहेर अंतर मिने, सब अंग किए रोसन ।।५।।

तूं पूछ मन चित बुध को, और गुन अंग इंद्री पख ।
देख तत्व सब सास्त्रों का, फेर कर नीके लख ।।६।।

तूं बल कर कछू अपना, चल राह तामसी सूर ।
ब्रह्मसृष्ट निकसी बृज से, देख क्यों कर पोहोंची हजूर[3] ।।७।।

कर कबीला पार का, अंकूर बल सूर धीर ।
एक धनी नजर में लेय के, उड़ाए दे सरीर ।।८।।

पूछ नीके अपने धनी को, भी नीके देख तारतम ।
नीके देख फुरमान को, भी पूछ नीके आतम ।।९।।

भी पूछ संगी तूं अपने, जो हुए पिंडथें दूर ।
कई साखें अजूं ले खड़ी, देख रोसन अपना नूर ॥१०॥

एती साखें लेय के, कहा लगत झूठे अंग ।
अजूं न लगे तोकों धाम को, सांचो सनमंध संग ॥११॥

१. कंजूसी । २. जरासी । ३. निकट (श्री राजजी के निकट) ।

सास्त्र संगी सब यों कहें, विचार देख महामत ।
जैसी होए हिरदे मिने, तैसी पाइए गत ॥१२॥
महामत कहें पीछे न देखिए, नहीं किसी की परवाहे ।
एक धाम हिरदे में लेय के, उड़ाए दे अरवाहे ॥१३॥

॥प्रकरण॥८७॥चौपाई॥१२२७॥

राग श्री

सैयां हम धाम चले ॥टेक॥

जो आओ सो आइयो, पीछे रहे ना एक खिन ।
हम पीठ दई संसार को, जाए सुरत लगी वतन ॥१॥
सुध[1] महूरत[2] ले कूच किया, साइत[2] देखी अति सारी ।
अब दौड़ सको सो दौड़ियो, न रहे दौड़ पकड़ी हमारी ॥२॥
कोई दिन राह देखी साथ की, पीछे नजर फिराए ।
पोहोंचे दिन आए आखिर, अब हम रह्यो न जाए ॥३॥
हम संग चलो सो ढील जिन करो, छोड़ो आस संसार ।
सुरत हमारी कछू ना रही, हम छोड़ी आस आकार ॥४॥
नेक बसे हम बृज में, नेक बसे रास मांहें ।
आगे तो धाम आइया, तब तो आँखें खुल जाए ॥५॥
साथ चले जो ना चलिया, ताए लगसी आग दोजक ।
तलफ तलफ जीव जाएसी, जिन जानो यामें सक ॥६॥
पीछे अटकाव न राखो रंचक, जो आओ संग हम ।
तुम जानोगे वह नेक है, पर जरा होसी जुलम ॥७॥
जो न आवे सो जुदा होइयो, ना तो होसी बड़ी जलन ।
हम तो चले धाम को, तुम रहियो मांहें करन ॥८॥

१. मंगल, शुभ । २. घडी, समय ।

हम छोड़े सुख सुपन के, आए नजरों सुख अखंड ।
विरहा उपज्या धाम का, पीछे हो गई आग ब्रह्मांड ।।९।।

मैं आग देऊं तिन सुख को, जो आड़ी करे जाते धाम ।
मैं पिंड न देखूं ब्रह्मांड, मेरे हिरदे बसे स्यामा स्याम ॥१०॥

कई किताबें करी साथ कारने, सो भी गाई जगावन ।
ए सुन के जो न दौड़िया, जिमी ताबा[1] होसी तिन ॥११॥

कई लोभें लिए लज्या लिए, कई लिए अहंकार ।
यों छलें पीछे कई पटके, जो केहेते हम सिरदार ॥१२॥

विखे स्वाद जिन लग्यो, सो लिए इंद्रियों घेर ।
जो एक साइत साथ आगे चल्या, पीछे पड़े मांहें करन अंधेर ॥१३॥

गुन अवगुन सबके माफ किए, जो रहो या चलो हम संग ।
हम पीछे फेर न देखहीं, पिउसों करें रस रंग ॥१४॥

साथ होवे जो धाम को, सो भूले नहीं अवसर ।
सनमंधी जब उठ चले, तब पीछे रहे क्यों कर ॥१५॥

महामत कहें मेहेबूब का, सांचा स्वाद आया जिन ।
परीछा तिनकी प्रगट, छेद निकसें बान वचन ॥१६॥

।।प्रकरण।।८८।।चौपाई।।१२४३।।

राग वसंत

चलो चलो रे साथ, आपन जईए धाम ।
मूल वतन धनिए बताया, जित ब्रह्मसृष्ट स्यामाजी स्याम ।।१।।

मोहोल मंदिर अपने देखिए, देखिए खेलन के सब ठौर ।
जित है लीला स्याम स्यामा जी, साथ जी बिना नहीं कोई और ।।२।।

रेत सेत जमुना जी तलाव, कई ठौर बन करें विलास ।
इस्क के सारे अंग भीगल, रेहेस रंग विनोद कई हाँस ।।३।।

१. गर्म पिगले तांबे की तरह ।

पसु पंखी मांहें सुंदर सोभित, करत कलोल मुख मीठी बान ।
अनेक बिध के खेल जो खेलत, सो केते कहूं मुख इन जुबान ।।४।।
ऐही सुरत अब लीजो साथ जी, भुलाए देओ सब पिंड ब्रह्मांड ।
जागे पीछे दुख काहे को देखें, लीजे अपना सुख अखंड ।।५।।
साथ मिल तुम आए धाम से, भूल गए सो मूल मिलाप ।
भूलियां धाम धनी के वचन, न कछू सुध रही जो आप ।।६।।
धनी भेज्या फुरमान बुलावने, कह्या आइयो सरत इन दिन ।
खेल में लाहा लेय के आपन, चलिए इत होए धंन धंन ।।७।।
चौदे लोक में झूठ विस्तरयो, तामें एक सांचे किए तुम ।
हँसते खेलते नाचते चलिए, आनंद में बुलाइयां खसम ।।८।।
अब छल में कैसे कर रहिए, छोड़ देओ सब झूठ हराम ।
सुरत धनी सों बांध के चलिए, ले विरहा रस प्रेम काम ।।९।।
जो जो खिन इत होत है, लीजो लाभ साथ धनी पेहेचान ।
ए समया तुमें बहुरि[1] न आवे, केहेती हों नेहेचे बात निदान ।।१०।।
अब जो घड़ी रहो साथ चरने, होए रहियो तुम रेनु[2] समान ।
इत जागे को फल एही है, चेत लीजो कोई चतुर सुजान ।।११।।
ज्यों ज्यों गरीबी लीजे साथ में, त्यों त्यों धनी को पाइए मान ।
इत दोए दिन का लाभ जो लेना, एही वचन जानो परवान ।।१२।।
अब जो साइत इत होत है, सो पिउ बिना लगत अगिन ।
ए हम सह्यो न जावहीं, जो साथ में कहे कोई कटुक वचन ।।१३।।
ज्यों ज्यों साथ में होत है प्रीत, त्यों त्यों मोही को होत है सुख ।
ज्यों ज्यों ब्रोध करत हैं साथ में, अंत वाही को है जो दुख ।।१४।।
इत खिन का है जो लटका, जीत चलो भांवें हार ।
महामत हेत कर कहें साथ को, बिध बिध की करत पुकार ।।१५।।

।।प्रकरण।।८९।।चौपाई।।१२५८।।

१. फिर से, दुबारा । २. रजकण, धूल ।

राग मारू

साथ जी सोभा देखिए, करे कुरबानी आतम ।
वार डारों नख सिख लों, ऊपर धाम धनी खसम ।।१।।

लिख्या है फुरमान में, करसी कुरबानी मोमिन ।
अग्यारे सै साल का, सो आए पोहोंच्या दिन ।।२।।

देख्या मैं विचार के, हम सिर किया फरज ।
बड़ी बुजरकी मोमिनों, देखो कौन क्यों देत करज ।।३।।

करी कुरबानी तिन कारने, परीछा सबकी होए ।
करे कुरबानी जुदे जुदे, सांच झूठ ए दोए ।।४।।

कस[1] न पाइए कसौटी बिना, रंग देखावे कसौटी ।
कच्ची पक्की सब पाइए, मत छोटी या मोटी ।।५।।

कसौटी कस देखावहीं, कसनी के बखत ।
अबहीं प्रगट होएसी, जुदे झूठ से निकस के सत ।।६।।

करत कुरबानी सकुचें, मोमिन करे न कोए ।
तीन गिरो की परीछा[2], अब सो जाहेर होए ।।७।।

कहा कहुं वतन सैयां, जो मगज लगे अर्थ ।
कुरबानी समे देख्या चाहिए, सांचे सूर समर्थ ।।८।।

कुरबानी को नाम सुन, मोमिन उलसत अंग ।
पीछे हुते जो मोमिन, दौड़ लिया तिन संग ।।९।।

मोमिन एही परीछा, जोस न अंग समाए ।
बाहेर सीतलता होए गई, मांहें मिलाप धनी को चाहे ॥१०॥

सुनत कुरबानी मोमिन, होए गए आगे से निरमल ।
इत एक एक आगे दूसरा, जाने कब जासी हम चल ॥११॥

१. जाँच । २. परीक्षा ।

मोमिन बड़ा मरातबा[१], सो अब होसी जाहेर ।
छिपे हुते दुनियां मिने, सो निकस आए बाहेर ॥१२॥

सांचे छिपे ना रहें, अपने समें पर ।
दोस्त कहे धनी के, सो छिपे रहें क्यों कर ॥१३॥

जो होए आतम धाम की, सो अपने समें पर ।
अपना सांच देखावहीं, भूले नहीं अवसर ॥१४॥

जो भूले अब को अवसर, सो फेर न आवे ठौर ।
नेहेचे सांचे न भूलहीं, इत भूलेंगे कोई और ॥१५॥

आया दरवाजा धाम का, सांचों बाढ़या बल ।
आए गए छाया मिने, धनी छाया निरमल ॥१६॥

साफ सेहेजे हो गए, करने पड़या न जोर ।
रात मिटी कुफर अंधेरी, भयो रोसन वतनी भोर ॥१७॥

कुरबानी सुन सखियां, उलसत सारे अंग ।
सुरत पोहोंची जाए धाम में, मिलाप धनी के संग ॥१८॥

मोमिन बल धनीय का, दुनी तरफ से नाहें ।
तो कहे धनी बराबर, जो मूल सरूप धाम मांहें ॥१९॥

लड़कपनें सुध न हुती, तो भी मोमिन मूल अंकूर ।
कोई कोई बात की रोसनी, लिए खड़े थे जहूर ॥२०॥

अब तो किए धनिएँ जाग्रत, दई भांत भांत पेहेचान ।
तोड़ दई आसा छल की, क्यों सकुचें करत कुरबान ॥२१॥

अब तो धनी बल जाहेर, आयो अलेखे अंग ।
ए जिन दिया सो जानहीं, या जिन लिया रस रंग ॥२२॥

ए दुनी न जाने सुपन की, न जाने मलकूती फरिस्तन ।
ए अछर को भी सुध नहीं, जाने स्याम स्यामा मोमिन ॥२३॥

१. पद ।

मैं मेरे धनीय की, चरन की रेनु[1] पर ।
कोट बेर वारों अपना, टूक टूक जुदा कर ॥२४॥

अंग अंग सब उलसत, कुरबानी कारन ।
जरे जरे पर वार हूं, ए जो बीच जरे राह इन ॥२५॥

जिन दिस मेरा पिउ बसे, तिन दिस पर होऊं कुरबान ।
रोम रोम नख सिख लों, वार डारों जीव सों प्रान ॥२६॥

सूरातन[2] सखियन का, मुख थें कह्यो न जाए ।
महामत कहें सो समया, निपट निकट पोहोंच्या आए ॥२७॥

॥प्रकरण॥९०॥चौपाई॥१२८५॥

राग श्री

आगूं आसिक ऐसे कहे, जो माया थें उतपन ।
कोट बेर मासूक पर, उड़ाए देवें अपना तन ॥१॥

जीव माया के ऐसी करें, कैयों देखे दृष्ट ।
ओ भी उन पर यों करें, तो हम तो हैं ब्रह्मसृष्ट ॥२॥

धिक धिक पड़ो तिन समझ को, जो पीछे देवें पाए ।
कुरबानी को नाम सुन, क्यों न उड़े अरवाहें ॥३॥

जो नकल हमारे की नकल, तिनका होत ए हाल ।
तो पीछे पांउं हम क्यों देवें, हम सिर नूरजमाल ॥४॥

जो आसिक असल अर्स की, सो क्यों सकुचे देते जिउ ।
करे कुरबानी कोट बेर, ऊपर अपने पिउ ॥५॥

सो भी पिउ अछरातीत, इत कायर न होवे कोए ।
सुनत कुरबानी के आगे हीं, तन रोम रोम जुदे होए ॥६॥

इन खसम के नाम पर, कई कोट बेर वारों तन ।
टूक टूक कर डार हूँ, कर मन वाचा करमन ॥७॥

१. रजकण । २. शूरवीरता, शौर्य ।

जो आसिक अर्स अजीम के, तिन सिर नूरजमाल ।
परीछा तिनकी जाहेर, सब्द लगें ज्यों भाल ।।८।।
जो सोहागिन वतनी, ताकी प्रगट पेहेचान ।
रोम रोम सब अंगों, जुदी जुदी दे कुरबान ।।९।।
कुरबानी को सब अंग, हँस हँस दिल हरखत ।
पिउ पर फना होवने, सब अंगों नाचत ॥१०॥
आसिक कबूं ना अटके, करत अंग कुरबान ।
ना जीव अंग आसिक के, जीव पिउ अंग में जान ॥११॥
अंग आसिक आगूंहीं फना, जीवत मासूक के मांहें ।
डोरी हाथ मेहेबूब के, या राखे या फनाए[1] ॥१२॥
तो अंग आधा अरधांग, मासूक का आसिक ।
तो दोऊ तन एक भए, जो इस्क लाग्या हक ॥१३॥
सोई कहावत आसिक, जिन अंग जोस फुरत[2] ।
अहनिस पिउ के अंग में, रेहेत आसिक की सुरत ॥१४॥
मासूक की नजर तले, आठों जाम आसिक ।
पिए अमीरस[3] सनकूल, हुकम तले बेसक ॥१५॥
न्यारा निमख न होवहीं, करने पड़े न याद ।
आसिक को मासूक का, कोई इन बिध लाग्या स्वाद ॥१६॥
रोम रोम बीच रमि रह्या, पिउ आसिक के अंग ।
इस्कें ले ऐसा किया, कोई हो गया एकै रंग ॥१७॥
इन जुबां इन आसिक का, क्यों कर कहूं सो बल ।
धाम धनी आसिक सों, जुदा होए न सकें एक पल ॥१८॥
महामत कहें मेहेबूब के, रोम रोम लगे घाए ।
इन अंग को अचरज होत है, अजूं ले खड़ा अरवाए ॥१९॥

॥प्रकरण॥९१॥चौपाई॥१३०४॥

१. नष्ट । २. तरंगित । ३. अमृत ।

राग श्री

अब हम धाम चलत हैं, तुम हूजो सबे हुसियार ।
एक खिन की बिलम न कीजिए, जाए घरों करें करार ।।१।।

साथ देखो ए अवसर, वासना करो पेहेचान ।
आए पोहोंचे बृज में, याद करो निसान ।।२।।

धनिएँ देखाया नजरों, सुरतां दैयां फिराए ।
अब पैठे हम रास में, उछरंग हिरदे चढ़ आए ।।३।।

जाग्रत बुध हिरदे आई, अब रहे ना सकें एक खिन ।
सुरत टूटी नासूत से, पोहोंची सुरत वतन ।।४।।

चिन्हार भई सब साथ में, आई धाम की खुसबोए ।
प्रेम उपज्या मूल का, सुपन रेहेना क्यों होए ।।५।।

अब नींद हमारी क्यों रहे, इन बखत दिए जगाए ।
जागे पीछे झूठी भोम में, क्यों कर रह्यो जाए ।।६।।

देख तैयारी साथ की, ओ समया रह्या न हाथ ।
अवसर नया उदे हुआ, उमंगियो सब साथ ।।७।।

क्यों रहे सुरतें पकड़ी, एक दूजे के आगे होए ।
दौड़ा दौड़ ऐसी हुई, पीछे रहे न कोए ।।८।।

कई हुती देस परदेस में, ए बातें सुनियां तिन ।
तिनकी सुरतें इत बांधियां, तित रहे न सकें एक खिन ।।९।।

परदेसें साथ पसर्‌यो हुतो, तित सबे पड़्यो सोर ।
यों ठौर ठौर रंग फैलिया, हुआ महंमदी दौर ॥१०॥

पीछला साथ आए मिलसी, पर अगले करें उतावल ।
केताक साथ विचार नीका, सो जानें चलें सब मिल ॥११॥

इन बिध सोर हुआ साथ में, ठौर ठौर पड़ी पुकार ।
एक आए एक आवत हैं, एक होत हैं तैयार ॥१२॥

ऐसा समया इत हुआ, आए पोहोंचे इन मजल ।
कोई कोई लाभ जो लेवहीं, जिन जाग देखाया चल ॥१३॥

सुध बुध आई साथ में, सुरता फिरी सबन ।
कोई आगे पीछे अव्वल, सबे हुए चेतन ॥१४॥

कोई कोई पीछे रेहे गई, तिनकी सुरत रही हम मांहें ।
ढील करी ज्यों स्वांतसियों, आए अंग पोहोंचे नाहें ॥१५॥

कहे महामत परीछा तिनकी, जो पेहेलें हुए निरमल ।
छूटे विकार सब अंग के, आए पोहोंचे इस्क अव्वल ॥१६॥

॥प्रकरण॥९२॥चौपाई॥१३२०॥

राग श्री

अब हम चले धाम को, साथ अपना ले ।
लिख्या कौल फुरमान में, आए पोहोंच्या ए ॥१॥

सखी हम तो हमारे घर चले, तुम हूजो हुसियार ।
सुरता आगे चल गई, हम पीठ दई संसार ॥२॥

हममें पीछे कोई ना रहे, और रहो सो रहो ।
गुन अवगुन सबके माफ किए, जिन जो भावे सो कहो ॥३॥

अब हम रह्यो न जावहीं, मूल मिलावे बिन ।
हिरदे चढ़ चढ़ आवहीं, संसार लगत अगिन ॥४॥

सोई बस्तर सोई भूखन, सोई सेज्या सिनगार ।
सोई मेवा मिठाइयां, अलेखें अपार ॥५॥

सोई धनी सोई वतन, सोई मेरो सुंदरसाथ ।
सोई विलास अब देखिए, दोरी खैंची उनके हाथ ॥६॥

सोई चौक गलियां मंदिर, सोई थंभ दिवालें द्वार ।
सोई कमाड़[1] सोई सीढ़ियां, झलकारों झलकार ।।७।।

सोई मोहोल सोई मालिए[2], सोई छज्जे रोसन ।
सोई मिलावे साथ के, सोई बोलें मीठे वचन ।।८।।

सोई झरोखे धाम के, जित झांकत[3] हम तुम ।
सो क्यों ना देखो नजरों, बुलाइयां खसम ।।९।।

सोई खेलना सोई हँसना, सोई रस रंग के मिलाप ।
जो होवे इन साथ का, सो याद करो अपना आप ॥१०॥

सोई चाल गत अपनी, जो करते मांहें धाम ।
हँसना खेलना बोलना, संग स्यामाजी स्याम ॥११॥

सोई बातें प्रेम की, सोई सुख सनेह ।
सुख अखंड को भूल के, क्यों रहे झूठी देह ॥१२॥

सोई सेज्या सोई मंदिर, सोई पिउजी को विलास ।
सोई मुख के मरकलड़े[4], छूटी अंग की आस ॥१३॥

सोई रसीले रंग भरे, निरखें नेत्र चढ़ाए ।
सुन्दर मुख सनकूल की, भर भर अमृत पिलाए ॥१४॥

सोई कटाछे[5] स्याम की, सींचत सुरत चलाए ।
बंके नैन मरोर के, दृष्टें दृष्ट मिलाए ॥१५॥

कहा कहूं सुख साथ को, देखें भृकुटी भौंह चढ़ाए ।
सुखकारी सीतल सदा, सुख कहा केहेसी जुबांए ॥१६॥

सुच्छम सरूप ने सुंदरता, उनमद[6] सारे अंग ।
बराबर एकै भांत के, और कई विध के रस रंग ॥१७॥

एक दूजे के चित्त पर, चाल चले मांहों मांहें ।
पात्र प्रेम प्रीत के, हाँस विनोद बिना कछू नाहें ॥१८॥

१. द्वार । २. मंजिल । ३. छिपकर देखना । ४. मुस्कुराना । ५. तिरछी चितवन । ६. मस्ती भरे ।

बोए नेक आवे इन घर की, तो अंग निकसे आहे ।
सो तबहीं ततखिन में, पिउजी पे पोहोंचाए ॥१९॥
याद करो जो मांगिया, धनिएँ खेल देखाया कर हेत ।
महामत कहें मेहेबूब के, सुख में हो सावचेत ॥२०॥

॥प्रकरण॥९३॥चौपाई॥१३४०॥

राग श्री गौड़ी

सुनों साथजी सिरदारो, ए कीजो वचन विचार ।
देखो बाहेर मांहें अन्तर, लीजो सार को सार जों सार ॥१॥
सुन्दरबाई कहे धाम से, मैं साथ बुलावन आई ।
धाम से ल्याई तारतम, करी ब्रह्मांड में रोसनाई ॥२॥
सो सुन्दरबाई धाम चलते, जाहेर कहे वचन ।
आडी खड़ी इंद्रावती, कहे मैं रेहे ना सकों तुम बिन ॥३॥
दई दिलासा बुलाए के, मैं लई सिखापन ।
रूहअल्ला के फुरमान में, लिखे जामें दोए तन ॥४॥
मूल सरूप बीच धाम के, खेल में जामें दोए ।
हरा हुल्ला सुपेत गुदरी, कहे रूहअल्ला के सोए ॥५॥
हदीसों भी यों कह्या, आखिर ईसा बुजरक ।
इमाम ज्यादा तिनसे, जिन सबों पोहोंचाए हक ॥६॥
खासी गिरो के बीच में, आखिर इमाम खावंद होए ।
ए जो लिख्या फुरमान में, रूहअल्ला के जामें दोए ॥७॥
भी कह्या बानीय में, पांच सरूप एक ठौर ।
फुरमान में भी यों कह्या, कोई नाहीं या बिन और ॥८॥
कहें सुन्दरबाई अछरातीत से, खेल में आया साथ ।
दोए सुपन ए तीसरा, देखाया प्राणनाथ ॥९॥

कहे फुरमान नूर बिलंद से, खेल में उतरे मोमिन ।
खेल तीन देखे तीन रात में, चले फजर इनका इजन[1] ॥१०॥

यों विध विध दृढ़ कर दिया, दे साख धनी फुरमान ।
अपनी अकल माफक, केहे केहे मुख की बान ॥११॥

धनी फुरमान साख लेय के, देखाए दई असल ।
सो फुरमाया छोड़ के, करें चाह्या अपने दिल ॥१२॥

तोड़त सरूप सिंघासन, अपनी दौड़ाए अकल ।
इन बातों मारे जात हैं, देखो उनकी असल ॥१३॥

बिना दरद दौड़ावे दानाई[2], सो पड़े खाली मकान ।
इस्क नाहीं सरूप बिना, तो ए क्यों कहिए ईमान ॥१४॥

दरदी जाने दिल की, जाहेरी जाने भेख ।
अन्तर मुस्किल पोहोंचना, रंग लाग्या उपला देख ॥१५॥

इन विध सेवें स्याम को, कहे जो मुनाफक[3] ।
कहावें बराबर बुजरक, पर गई न आखिर लों सक ॥१६॥

मूल ना लेवें माएना, लेत उपली देखा देख ।
असल सरूप को दूर कर, पूजत उनका भेख ॥१७॥

इत बात बड़ी है समझ की, और ईमान का काम ।
साथजी समझ ऐसी चाहिए, जैसा कह्या अल्ला कलाम ॥१८॥

जेती बातें कहूं साथजी, तिनके देऊं निसान ।
और मुख थें न बोलहूं, बिना धनी फुरमान ॥१९॥

इन फुरमान में ऐसा लिख्या, करे पातसाही दीन ।
बड़ी बड़ाई होएसी, पर उमराओं के आधीन ॥२०॥

कहे कुरान बंद करसी, इनके जो उमराह[4] ।
एक तो करसी बन्दगी, और जो कहे गुमराह[5] ॥२१॥

१. हुकम । २. स्यानापन । ३. बेईमान । ४. अमीर लोग । ५. गलत रास्ते पर चलने वाले ।

मैं करूं खुसामद उनकी, मैं डरता हों उनसे ।
जो कहावें मेरे उमराह, और मेरे हुकम में ॥२२॥

ऐसा ना कोई उमराह, जो भाने दिल का दुख ।
जब करसी तब होएसी, दिया साहेब का सुख ॥२३॥

एही बड़ा अचरज, कहावत हैं बंदे ।
जानों पेहेचान कबूं ना हुती, ऐसे हो गए दिल के अंधे ॥२४॥

मैं बुरा न चाहूं तिनका, पर वे समझत नाहीं सोए ।
यार सजा दे सकत हैं, पर सो मुझसे न होए ॥२५॥

मेरे दिल के दरद की, एक साहेब जाने बात ।
ऐसा कोई ना मिल्या, जासों करों विख्यात ॥२६॥

जो कोई साथ में सिरदार, लई धाम धनी रोसन ।
खैंच छोड़ सको सो छोड़ियो, ना तो आपे छूटे हुए दिन ॥२७॥

मेरे तो गुजरान[1] होएसी, जो पड़या हों बंध ।
जो कदी न छूट्या रात में, तो फजर छूटसी फंद ॥२८॥

धाम धनी दई रोसनी, जो बड़े जमात दार ।
सोभा दई अति बड़ी, जिनके सिर मुद्दार ॥२९॥

मैं इन सुख दुख थें ना डरूं, मेरे धनी चाहिए सनमुख ।
मोहे एही कसाला होत है, जब कोई देत साथ को दुख ॥३०॥

मेरी एक दृष्ट धनीय में, दूजी साथ के मांहें ।
तो दुख आवे मोहे साथ को, ना तो दुख मोहे कहूं नाहें ॥३१॥

कोई कोई अपनी चातुरी, ले खैंच करें मूढ़ मत ।
अकल ना दौड़ी अंतर लों, खैंचें ले डारे गफलत ॥३२॥

ए तो गत संसार की, जो खैंचा खैंच करत ।
आपन तो साथी धाम के, है हम में तो नूर मत ॥३३॥

१. निर्वाह ।

मोमिन बड़े आकल[1], कहे आखिर जमाने के ।
इनकी समझ लेसी सबे, आसमान जिमी के जे ॥३४॥

जो कोई निज धाम की, सो निकसो रोग पेहेचान ।
जो सुरत पीछी खैंचहीं, सो जानो दुस्मन छल सैतान ॥३५॥

अब बोहोत कहूं मैं केता, करी है इसारत ।
दिल आवे तो लीजो सलूक[2], सुख पाए कहे महामत ॥३६॥

॥प्रकरण॥९४॥चौपाई॥१३७६॥

राग श्री

सोई सोहागिन धाम में, जो करसी इत रोसन ।
तौल मोल दिल माफक, देसी सुख सबन ॥१॥

साथ मांहें सैयां धाम की, ईमान वाली सिरदार ।
सो धन धाम को तौलसी, करसी दृढ़ निरधार ॥२॥

पेहेले तौलें बुध जागृत, पीछे तौलें धनी आवेस ।
और तौलें इस्क तारतम, तब पलटे उपलो भेस ॥३॥

तब तौलासी वासना, और तौलासी हुकम ।
सब बल तौलें बलवंतियां, और तौलें सरूप खसम ॥४॥

रोसन करसी आपे अपना, जो सैयां जमातदार ।
ए कौल[3] अव्वल जोस का, जो किया है करार ॥५॥

जो सैयां हम धाम की, सो जानें सब को तौल ।
स्याम स्यामाजी साथ को, सब सैयों पे मोल ॥६॥

नूर रोसन बल धाम को, सो कोई न जाने हम बिन ।
अंदर रोसनी सो जानहीं, जिन सिर धाम वतन ॥७॥

इस्क ईमान धनी धाम को, और जोस जाग्रत पेहेचान ।
तौलें धनी धन धाम का, यों कहे कुरान निसान ॥८॥

१. बुद्धिमान । २. नेक चलन । ३. वचन ।

साथ अंग सिरदार को, सिरदार धनी को अंग ।
बीच सिरदार दोऊ अंग के, करे न रंग को भंग ॥९॥

साथ धाम के सिरदार को, मोमिन मन नरम ।
मिलावे और धनीय की, दोऊ इनके बीच सरम ॥१०॥

इत परीछा प्रगट, उठावें अपना भार ।
बोझ निबाहें साथ को, और बोझ मसनंद[1] भरतार ॥११॥

ए तो पातसाही दीन की, सो गरीबी से होए ।
और स्वांत सबूरी बिना, कबहूं न पावे कोए ॥१२॥

ए लसकर सारा दिल का, सो दिलबरी सब चाहे ।
दिल अपना दे उनका लीजिए, इन विध चरनों पोहोंचाए ॥१३॥

जो कोई उलटी करे, साथी साहेब की तरफ ।
तो क्यों कहिए तिन को, सिरदार जो असरफ[2] ॥१४॥

कह्या कुराने बंद करसी, इन के जो उमराह ।
आधीन होसी तिनके, जो होवेगा पातसाह ॥१५॥

लटी[3] तिन से न होवहीं, जो कहे सिरदार ।
सबों सिरदार एक होवहीं, मिने बारे हजार ॥१६॥

लिख्या है कुरान में, छिपी गिरो बातन ।
सो छिपी बातून जानहीं, ए धाम सैयां लछन ॥१७॥

भी लिख्या कुरान में गिरो की, सोहोबत करसी जोए ।
निज बुध जाग्रत लेय के, साहेब पेहेचाने सोए ॥१८॥

फुरमान कहे गिरो साहेदी, देसी कारन पैगंमर ।
सब केहेसी महंमद का देखिया, तब कुफर तोड़सी मुनकर ॥१९॥

करे पाक जिमी आसमान को, ऐसी बुजरक गिरो सोए ।
होसी रूजू[4] माएने सब[5] इनसे, इन जैसी दूजी न कोए ॥२०॥

१. गादी । २. कुलीन, प्रतिष्ठित, बहुत ही शरीफ । ३. झूठी बात । ४. प्रसारित होना । ५. समस्त धर्म ग्रन्थों के ।

गिरो माफक सिरदार चाहिए, जैसा कह्या रसूल ।
खैंच लेवें दिल साथ को, सब पर होए सनकूल ॥२१॥

ए मैं कही तुम समझने, ए है बड़ो विस्तार ।
बोहोत कह्या मेरे धनी ने, तुम करोगे केता विचार ॥२२॥

ले साख धनी फुरमान की, महामत कहें पुकार ।
समझ सको सो समझियो, या यार या सिरदार ॥२३॥

॥प्रकरण॥९५॥चौपाई॥१३९९॥

राग श्री

तो भी घाव न लग्या रे कलेजे ।

ना लग्या रे कलेजे, जो एते देखे धनी गुन ।
कोट ब्रह्मांड जाकी पलथें पैदा, सो चाहे हमारा दरसन ॥१॥

अचरज एक साथ जी, सुनो कहूं अपनी बीतक ।
धनिएँ मोको मेहेर कर, ले पोहोंचाई हक ॥२॥

ईमान ल्याओ सो ल्याइयो, कहूं अनुभव की बात ।
मोको मिले इन बिधसों, श्री धाम धनी साख्यात ॥३॥

पीछे ईमान सब ल्यावसी, ए जो चौदे तबक ।
अव्वल आकीन ब्रह्मसृष्ट का, जिनमें ईमान इस्क ॥४॥

ए बात नीके विचारियों, ज्यों तुमें साख देवे आतम ।
पीछे साख दुनी सब देयसी, ऐसा किया खसम ॥५॥

मैं तो कछू न जानती, श्री स्यामाजी दई खबर ।
अपन[1] आए खेल देखने, धाम अपना घर ॥६॥

मोहे भेजी धनीने, तुम को बुलावन ।
साथ जी मिलके चलिए, जाइए अपने वतन ॥७॥

१. आपन ।

हम ब्रह्मसृष्टि आई धाम से, अछर खेल देखन ।
खेल देख के जागिए, घर असलू अपने तन ।।८।।

साहेब तो पूरा मिल्या, तब थी मैं लड़कपन ।
पेहेचान करावने अपनी, बोहोतक कहे वचन ।।९।।

सो मैं कछू ना दिल धरे, भूल गई अवसर ।
कई विध करी जगावने, पर मैं जागी नहीं क्योंए कर ॥१०॥

मोहे चलते बखत बुलाए के, जाहेर करी रोसन ।
धाम दरवाजे इंद्रावती, ठाड़ी करे रूदन ॥११॥

कहे मोहे अकेली छोड़ के, तुम धाम चलो क्यों कर ।
पीछे मैं दुनियाँ मिने, क्यों रहूंगी तुम बिगर ॥१२॥

एह वचन स्यामाजीएँ, सब साथ को कहे सुनाए ।
इंद्रावती आए बिना, हम धाम चल्यो न जाए ॥१३॥

एक रस आतम करके, आप हुए अन्तराए[1] ।
अनुभव कराए जुदे हुए, पर लग्या न कलेजे घाए ॥१४॥

अन्तरगत में रेहे गए, धनी के दो एक सुकन ।
ए दरद न काहूं बाँटिया, सो मैं कह्या न आगे किन ॥१५॥

मोहे बोहोत कही समझाए के, पर पेहेचान न हुई पूरन ।
तब आप अन्दर आए के, बहु बिध करी रोसन ॥१६॥

अन्दर मेरे बैठ के, कई विध कियो विस्तार ।
सो रोसनी जुबां क्यों कहे, वाको वाही जाने सुमार ॥१७॥

तब कछुक मोको सुध भई, कछुक भई पेहेचान ।
ए दरद कहूं मैं किन को, धनी हो गए अन्तरध्यान ॥१८॥

मोहे दिल में ऐसा आइया, ए जो खेल देख्या ब्रह्मांड ।
तो क्या देखी हम दुनियां, जो इनको न करें अखंड ॥१९॥

१. अन्तर्ध्यान ।

बड़ी बड़ाई अपनी, सुनी हमारी हम ।
हम दें मुक्त सबन को, जाए मिलें खसम ॥२०॥

वचन हमारे धाम के, फैले हैं भरथ खंड ।
अब पसरसी त्रैलोक में, जित होसी मुक्त ब्रह्मांड ॥२१॥

धनी भेजी किताब हाथ रसूल, जाए कहियो होए अमीन[1] ।
आखिर धनी आवसी, तब ल्याइयो सब आकीन ॥२२॥

ए बंध धनिएँ पेहेले बांधे, सो लिखे मांहें फुरमान ।
इन जिमी साहेब आवसी, दीदार होसी सब जहान ॥२३॥

ले हिसाब सबन पे, करसी कजा अदल ।
भिस्त देसी सचराचर, कर साफ सबन के दिल ॥२४॥

जो साहेब किन देख्या नहीं, न कछू सुनिया कान ।
सो साहेब इत आवसी, करसी कायम सब जहान ॥२५॥

फुरमान महंमद ल्याइया, किया अति घना सोर ।
कह्या रब आलम का आवसी, रात मेट करसी भोर ॥२६॥

रूह अल्ला की आवहीं, जो ईश्वरों का ईस ।
सो इन जिमी में पातसाही, करसी साल चालीस ॥२७॥

मारेगा कलजुग को, ए जो चौदे तबक अंधेर ।
तिनको काट काढ़सी, टालसी उलटो फेर ॥२८॥

दज्जाल सरूप अंधेर को, आखिर ईसा मारसी ताए ।
पेहेले निरमल करके, लेसी कदमों सुरत लगाए ॥२९॥

पीछे प्रले करके, लेसी तुरत उठाए ।
चौदे तबक सचराचर, देसी भिस्त बनाए ॥३०॥

खासी उमत जो अहमदी[2], आई अर्स से उतर ।
ताए अपना इलम देयके, ले चलसी अपने घर ॥३१॥

१. अमानतदार । २. जिसे महम्मदने "खास उम्मत" और ईसा ने "चुने हुए लोग" (Chosen People of God) कहा है ।

यों लिख्या फुरमान में, आखिर बीच हिंदुअन ।
मुलक होसी नबियन का, धनी दई बड़ाई इन ॥३२॥
फुरमान जाहेर पुकारहीं, बीच हिंदुओं भेख फकर[1] ।
पातसाही करसी महंमद, आखिरी पैगंमर ॥३३॥
सो महंमद आगूं भेजिया, केहेने वचन आगम ।
सो खास उमत आई इत, ए जो लेने आए हम ॥३४॥
ए सब्द सारे महंमदें, आए पेहेले किया पुकार ।
महंमद मेंहेदी रूहअल्ला, आखिर वाही सिर मुद्दार ॥३५॥
खोल हकीकत मारफत, बताए कयामत के दिन ।
कई विध बंध धनिएँ बांधे, अपनी उमत के कारन ॥३६॥
विजिया अभिनंद बुधजी, और नेहेकलंक इत आए ।
मुक्त देसी सबन को, मेट सबे असुराए ॥३७॥
दिन भी लिखे जाहेर, बीच किताब हिंदुआन ।
जो साख लिखी इनमें, सोई साख फुरमान ॥३८॥
कई बिध धनिएँ ऐसा लिख्या, देने चौदे तबकों ईमान ।
सो धाम धनी इत आए के, कराई सबों पेहेचान ॥३९॥
यों साख आतम देवहीं, वचन आगम के देख ।
देने ईमान सबन को, यों बिध बिध लिखे विसेख ॥४०॥
महामत कहें धनी धाम के, मुझसों कियो मिलाप ।
आखिर सुख इन साथ में, मोहे कर थापी आप ॥४१॥

॥प्रकरण॥९६॥चौपाई॥१४४०॥

राग श्री

इन धनी के बान मोको ना लगे ।
मोको ना लगे, कहा कियो करम अधम ।
तो भी इस्क न आया मोको, ए कैसा हुआ जुलम ॥१॥

१. साधु ।

रंचक इसारत धनी की, जो पावे आसिक जिउ ।
सो जीव खिन एक लों, रहे ना सके बिना पिउ ।।२।।

सो भी पिउ जीउ इन जिमी के, ए जो फना ब्रह्मांड ।
मेरो तो जीउ पिउ धाम को, ए जो अछरातीत अखण्ड ।।३।।

ऐसी प्रीत जीव सृष्ट की, जाके पिउ विष्णु सेखसांई ।
वाको रटत जात अहनिस, ब्रह्म अछर सुध न पाई ।।४।।

कोट ब्रह्मांड नूर के पल थें, यों कहे सास्त्र त्रिगुन ।
सो अछर किने न दृढ़ किया, न दृढ़ किया इनों वतन ।।५।।

सो अछर अछरातीत के, आवे दरसन नित ।
तले झरोखे आए के, कर मुजरा[1] घरों फिरत ।।६।।

सो ए धनी अछरातीत, इत आए मुझ कारन ।
अंग दियो मोहे जान अंगना, दिल सनमंध आन वतन ।।७।।

मोहे दई सिखापन, धोखे दिए सब भान ।
अन्तर पट उड़ाए के, कर दई सब पेहेचान ।।८।।

अछर पार द्वार जो हुते, सो ए दिए सब खोल ।
ऐसी कुन्जी दई कृपा की, जो किनहूं न पाया मोल ।।९।।

सब ब्रह्मसृष्टी आई धाम से, अछरातीत इन धनी ।
मोको सबे बिध समझाई, आप जान अपनी ॥१०॥

धनिएँ हेत करके मुझको, कई विध दई समझाए ।
साख सास्त्र सब सब्द, मोहे बिध बिध दई जगाए ॥११॥

बोहोत धनिएँ मोको चाह्या, जाने प्रेम उपजे इन ।
सो प्रेम क्योंए न आइया, ऐसा हिरदे निपट कठिन ॥१२॥

तो भी प्रेम न उपज्या, धनी कर कर थके सनेह ।
ढीठ निपट निठुर भई, धनी क्योंए न सके ले ॥१३॥

१. दर्शन, अभिवादन ।

फुरमान भेज्या जुदे होए, देने को साख दोए ।
सो मेहेर धनी की मैं ही जानों, और न समझे कोए ॥१४॥

सो ए सुकन दिए लदुन्नी[1], फुरमान याही से खुले ।
और न कोई खोल सके, जो चौदे तबक मिले ॥१५॥

सो मैं समझाऊं साथ को, ले फुरमान वचन ।
फैले हैं भरथ खण्ड में, अब पोहोंचे चौदे भवन ॥१६॥

ऐसी जगाए खड़ी करी मुझे, और सब पर मेरी बुध ।
खबर न अछर ब्रह्म को, सो ए भई मुझे सुध ॥१७॥

आप जैसी कर बैठाई, तो भी प्रेम न उपज्या इत ।
सो रोवत हों अन्दर, फेर फेर जीव बिलखत ॥१८॥

मेहेबूब ऐसी मैं क्यों भई, ले प्रेम न खड़ी हुई ।
महामत दुष्टाई क्यों करी, ले विरहा मांहें ना मुई ॥१९॥

॥प्रकरण॥९७॥चौपाई॥१४५९॥

राग श्री

तो भी चोट न लगी रे आतम को, जो एती साख धनिएँ दई ।
कठिन कठोर निपट ऐसी आतमा, एती साखें ले गल न गई ॥१॥

कई साखें धनिएँ दई मुझे, श्री स्यामा जी आए इत ।
सो तारतम कह्या मैं तुमें, देखो साख देत है चित ॥२॥

कह्या साहेब इत आवसी, सो झूठ न होए फुरमान ।
सब का हिसाब लेय के, कायम करसी जहान ॥३॥

पूछो अपनी आतम को, कोई दूजा है इप्तदाए ।
रूह-अल्ला इलम ल्याए के, केहेलावें इत खुदाए ॥४॥

सो बिना हिसाबें हदीसें, भी अनुभव इत बोलत ।
साथजी दिल दे देखियो, जो हम तुममें बीतत ॥५॥

१. तारतम वाणी ।

वसीयत नामे आए दरगाह[1] से, तिन साख दई बनाए ।
अग्यारै सदी जाहेर लिखी, सो कौल पोहोंच्या आए ।।६।।
कई किताबें हिंदुअन की, साखें लिखी मांहें इन ।
आए धनी झूठ उड़ावने, करसी सत रोसन ।।७।।
देखो कई साखें धनीय की, भी देखो अनुभव आतम ।
कई साखें देखो फुरमान में, जो मेहेर कर भेज्या खसम ।।८।।
और हदीसों में कई साखें, कई वसीयत नामे साख ।
कई किताबें हिंदुअन की, देत भाख भाख कई लाख ।।९।।
कई साखें साधो संतो, बोले बानी आगम ।
कहे ना सकूं तुमको साथ जी, दोष देख अपना हम ॥१०॥
एक साखें आवे ईमान, कई साखें देनें बांधे बंध ।
तो भी ईमान न आया हमको, कोई हिरदे भया ऐसा अंध ॥११॥
देखो विचार के साथ जी, साख दई आतम महामत ।
सो आतम साख सबों की देयसी, पोहोंच्या इलम हमारा जित ॥१२॥

।।प्रकरण।।९८।।चौपाई।।१४७१।।

राग श्री

धिक धिक पड़ो मेरी बुध को ।
मेरी सुध को, मेरे तन को, मेरे मन को, याद न किया धनी धाम ।
जेहेर जिमी को लग रही, भूली आठों जाम ।।१।।
मूल वतन धनिएँ बताइया, जित साथ स्यामा जी स्याम ।
पीठ दई इन घर को, खोया अखंड आराम ।।२।।
सनमंध मेरा तासों किया, जाको निज नेहेचल नाम ।
अखंड सुख ऐसा दिया, सो मैं छोड़या विसराम ।।३।।
खिताब दिया ऐसा खसमें, इत आए इमाम ।
कुंजी दई हाथ भिस्त की, साखी अल्ला कलाम[2] ।।४।।

१. मक्का से । २. ब्रह्मज्ञान ।

अखंड सुख छोड़या अपना, जो मेरा मूल मुकाम ।
इस्क न आया धनीय का, जाए लगी हराम ।।५।।

खोल खजाना धनिएँ सब दिया, अंग मेरे पूरा न ईमान ।
सो ए खोया मैं नींद में, करके संग सैतान ।।६।।

उमर खोई अमोलक, मोह मद क्रोध ने काम ।
विखया[1] विखे रस भेदिया, गल गया लोहू मांस चाम ।।७।।

अब अंग मेरे अपंग[2] भए, बल बुध फिरी तमाम ।
गए अवसर कहा रोइए, छूट गई वह ताम[3] ।।८।।

पार द्वार सब खोल के, कर दई मूल पेहेचान ।
संसे मेरे कोई न रह्या, ऐसे धनी मेहेरबान ।।९।।

बोहोत कह्या घर चलते, वचन न लागे अंग ।
इंद्रावती हिरदे कठिन भई, चली ना पिउजी के संग ॥१०॥

तब हार के धनिएँ विचारिया, क्यों छोडूं अपनी अरधंग ।
फेर बैठे मांहें आसन कर, महामति हिरदे अपंग ॥११॥

।।प्रकरण।।९९।।चौपाई।।१४८२।।

धनी एते गुन तेरे देखके, क्यों भई हिरदे की अंध ।
कई साखें साहेदियां ले ले, याही में रही फंद ।।१।।

कई साखें लई धनी की, कई साखें लई फुरमान ।
कई साखें लई सास्त्रन की, अंतस्करन में आन ।।२।।

कई साखें साधुन की, कई साखें सब्द ब्रह्मांड ।
आतम मेरी अनुभव से, लगाए देखी अखंड ।।३।।

जो कोई कबीला पार का, सो सारों ने दई साख ।
धनी गुन आए आतम नजरों, सो कहे न जाए मुख भाख ।।४।।

१. विषय रस । २. अंग हीन । ३. खुराक, वाणी वचन ।

कई साखें गुन विचार विचार, बिध बिध करी पुकार ।
तो भी घाव कलेजे न लग्या, यों गया जनम अकार[1] ।।५।।

कई साखें गुन मुख केहे केहे, उमर खोई मैं सब ।
अजूं आतम खड़ी ना हुई, क्यों पुकारूं मैं अब ।।६।।

अब दिन बाकी कछू ना रहे, सो भी देखाए दई तुम सरत ।
क्यों मुख उठाऊं आगूं तुम, चरनों लागूं जिन बखत ।।७।।

ज्यों ज्यों तुम कृपा करी, मैं त्यों त्यों किए अवगुन ।
तिन पर फेर तुम गुन किए, मैं फेर फेर किए विघन ।।८।।

गुन धनी के गाते गाते, गई सारी आरबल[2] ।
अवगुन अपने भाखते, उमर खोई ना सकी चल ।।९।।

अब हुकम होए धनी सो करूं, मेरा बल ना चले कछू इत ।
सुरखरू[3] तुम करोगे, पुकार कहे महामत ।।१०।।

।।प्रकरण।।१००।।चौपाई।।१४९२।।

राग श्री

साथ जी सुनो सिरदारो, मुझ जैसी ना कोई दुष्ट ।
धाम छोड़ झूठी जिमी लगी, चोर चंडाल चरमिष्ट[4] ।।१।।

प्रेम खोया मैं बानी कर कर, हो गया जीव कोई भिष्ट[5] ।
साथ के चरन धोए पीजिए, ताको दिए मैं कष्ट ।।२।।

मुख बानी केहेलाई बड़ी कर, मांहें ब्रह्म सृष्ट ।
पंथ पैंडे संसार के ज्यों, होए चलाया इष्ट ।।३।।

ले पंडिताई पड़ी प्रवाह में, कर कर ग्यान गोष्ट[6] ।
न्यारा हुआ न नेहेकाम होए के, मैं लिया न निरगुन पुष्ट ।।४।।

अनेक अवगुन किए मैं साथ सों, सो ए प्रकासूं सब ।
छोड़ अहंकार रहूं चरनों तले, तोबा खैंचत हों अब ।।५।।

१. व्यर्थ । २. आयुर्बल । ३. सम्मानित । ४. बाहर दृष्टि । ५. पतित । ६. चर्चा ।

एते दिन धनी धाम छोड़ के, दई साथ को सिखापन ।
अब साथें मोको समझाई, तिन थें हुई चेतन ।।६।।

कृपा करी साथ सिरदारों, मुझ पर हुए मेहेरबान ।
निरगुन होए न्यारी रहूं, छोड़ बड़ाई गुमान ।।७।।

दिन कयामत के आए पोहोंचे, अब कैसी ठकुराई[1] ।
धिक धिक पड़ो तिन बुध को, जो अब चाहे बड़ाई ।।८।।

अब हुकम चढ़ाऊं सिर साथ को, बकसो मेरी भूल ।
भी दीजो सिखापन मुझको, ज्यों होऊं सनकूल ।।९।।

इन जिमी में साथ में, जिनों करी सिरदारी ।
पुकार पुकार पछताए चले, जीत के बाजी हारी ॥१०॥

सो देख के ना हुई चेतन, मूढ़मती अभागी ।
अब लई सिखापन साथ की, महामत कहे पांउं लागी ॥११॥

।।प्रकरण।।१०१।।चौपाई।।१५०३।।

राग श्री

बुजरकी[2] मारे रे साथजी, बुजरकी मारे ।
जिन बुजरकी लई दिल पर, तिनको कोई ना उबारे[3] ।।१।।

आगूं कई मारे बुजरकिएँ, जिन दृढ़ कर लई विश्वास ।
सो देखे मैं अपनी नजरों, निकस चले निरास ।।२।।

कई मारे कई मारत है, ऐसी बुजरकी एह ।
न देत देखाई इन माया में, बिना बुजरकी जेह ।।३।।

जेती बुजरकी बीच दुनी के, सो सब कुफर हथियार ।
कुफरों में कुफर बुजरकी, काम क्रोध अहंकार ।।४।।

इन माया में कोई बुजरकी, छूट खुदा जो लेवे ।
सो तेहेकीक आपे अपना, पाया फल सो भी खोवे ।।५।।

१. सरदारी । २. नाम, बड़ाई । ३. बचावे, निकाले ।

खोवे जोस बंदगी खोवे, और साहेब की दोस्ती ।
बिना इस्क जो बुजरकी, सो सब आग जानो तेती ।।६।।

दुनियां में दोऊ लड़त हैं, एक कुफर दूजा ईमान ।
जीती कुफरें त्रैलोकी, ईमान दिया सबों भान ।।७।।

कुफर की हुई पातसाही, चौदे तबक चौफेर ।
सब दुनियां को बेमुख करके, बैठा बुजरकी ले अंधेर ।।८।।

मोको मार छुड़ाई बंदगी, सो भी बुजरकी इन ।
ऐसी दुस्मन ए बुजरकी, मैं देखी न एते दिन ।।९।।

पूरन मेहेर भई धनी की, दोऊ हादिऐं करी चेतन ।
सो भी बुजरकी देखी दुस्मन, जो भिस्त दई सबन ।।१०।।

जो कोई मारे इन दुस्मन को, करे सब दुनियां को आसान[१] ।
पोहोंचावे सबों चरन धनी के, तो भी लेना ना तिन गुमान ।।११।।

महामत कहे ईमान इस्क की, सुक्र[२] गरीबी[३] सबर[४] ।
इन बिध रूहें दोस्ती धनी की, प्यार कर सके त्यों कर ।।१२।।

।।प्रकरण।।१०२।।चौपाई।।१५१५।।

राग श्री गौड़ी

जो तूं चाहे प्रतिष्ठा[५], धराए वैरागी नाम ।
साध जाने तोको दुनियां, वह तो साधों करी हराम ।।१।।

मार प्रतिष्ठा पैजारों[६], जो आए दगा देत बीच ध्यान ।
एही सरूप दज्जाल को, उड़ाए दे इनें पेहेचान ।।२।।

इस दुनियां के बीच में, कोई भला बुरा केहेवत ।
तूं जिन देखे तिन को, ले अपनी अर्स खिलवत ।।३।।

दिल दलगीरी छोड़ दे, होत तेरा नुकसान ।
जानत है गोविंद भेड़ा[७], याको पीठ दिए आसान ।।४।।

१. एहसान । २. धन्यवाद । ३. नम्रता । ४. संतोष । ५. मान मर्यादा । ६. जूतों । ७. भूतलमंडल, मायावी संसार ।

ए भोम देखे जिन फेर के, एही जान महामत ।
ढील होत तरफ धाम की, जहां तेरी है निसबत ।।५।।

।।प्रकरण।।१०३।।१५२०।।

राग श्री

कयामत आई रे साथजी, कयामत आई ।
वेद कतेब पुकारत आगम, सो क्यों न देखो मेरे भाई ।।१।।

आए स्यामाजीएँ मोहे यों कह्या, ए खेल किया तुम कारन ।
तुम आए खेल देखने, मैं आई तुमें बुलावन ।।२।।

कागद आया वतन का, कासद[1] होए ल्याए फुरमान ।
आया खातिर अपने, देने को ईमान ।।३।।

अग्यारे सै साल का, आए साखें लिखी आगम ।
मांहें अनुभव लिख्या अपना, सो पोहोंचाया खसम ।।४।।

जो साहेब किने न देखिया, ना कछू सुनिया कान ।
सो साहेब काजी होए के, जाहेर करसी कुरान ।।५।।

जेते वचन कुरान में, सो सब स्यामाजी दई साख ।
सो सारे इन लीला के, कहूं केते हजारों लाख ।।६।।

सो कुंजी स्यामाजी दई, हकीकत वतन ।
माएने खुले सब तिन से, जो छिपे हुते बातन ।।७।।

और भी फुरमान में लिख्या, कोई खोल ना सके किताब ।
सोई साहेब खोलसी, जिन पर धनी खिताब ।।८।।

वसीयत नामे आए दरगाह सें, जाहेर करी कयामत ।
ए हकीकत तुम पर लिखी, देखाए दिन सरत ।।९।।

या वेद या कतेब, सब आए तुम खातिर ।
सब साख तुमारी देवहीं, जो देखो नीके कर ।।१०।।

१. संदेशवाहक ।

साख देवे सब दुनियां, वैराट चौदे भवन ।
समझे सारे देखहीं, जिनका दिल हुआ रोसन ॥११॥

ए साखें सब पुकारहीं, निपट निकट कयामत ।
आए गई सिर ऊपर, तुम क्यों न अजूं चेतत ॥१२॥

साथजी साफ हुए बिना, अखंड में क्यों पोहोंचत ।
चेत सको सो चेतियो, पुकार कहें महामत ॥१३॥

॥प्रकरण॥१०४॥चौपाई॥१५३३॥

राग श्री

मैं पूछत हों ब्रह्मसृष्ट को, दिल की दीजो बताए ॥टेक॥

जो कोई ब्रह्म सृष्ट का, सो देखियो दिल विचार ।
कहियो तेहेकीक करके, जिनों जो किया करार ॥१॥

सब कोई बात विचारियो, देख अपनी अपनी अकल ।
सृष्ट तीनों करम करत हैं, एक दूजे सों मिल ॥२॥

सो तीनों अब जुदे होएसी, है हाल तुमारा क्यों कर ।
दिन एते जान्या त्यों किया, अब आए पोहोंची आखिर ॥३॥

पूजे परमेश्वर करके, दिल में राखें दोए ।
तिन कारन पूछत हों, कौन विध याकी होए ॥४॥

कहे परमेश्वर मुख थें, दिल चोरावें जे ।
दगा[1] देवें मांहें दुस्मन, क्या नहीं देखत हो ए ॥५॥

कहावत हैं ब्रह्म सृष्ट में, धनीसों छिपावें बात ।
दिल की करें औरन सों, ए कौन सृष्ट की जात ॥६॥

ए जो दोए दिल राखत हैं, ए तो दुनियां की रीत ।
मांहें मैले बाहेर उजले, ए जीव सृष्ट की प्रीत ॥७॥

१. धोखा देना ।

एकै बात ब्रह्म सृष्ट की, दोए दिल में नाहें ।
सोई करें धनीसों जाहेर, जैसी होए दिल मांहें ।।८।।

मिनों मिनें गुझ करें, निस दिन एही चितवन ।
बुरा चाहें तिनका, जिन देखाया मूल वतन ।।९।।

पीठ चोरावें धनी सों, करें मिनो मिने खोल ।
ए देखो अंदर की जाहेर, देखावें अपना मोल ॥१०॥

करें धनी सों चोरियां, चोरों सों तेहेदिल[1] ।
यों जनम खोवें फितुए[2] मिने, रात दिन हिल मिल ॥११॥

करें लड़ाइयां आपमें, कहें हम हैं धाम के ।
क्यों ना विचारों चितमें, कैसा जुलम है ए ॥१२॥

चरचा सुनें वतन की, जित साथ स्यामाजी स्याम ।
सो फल चरचा को छोड़ के, जाए लेवत हैं हराम ॥१३॥

बाहेर देखावें बंदगी, मांहें करें कुकरम काम ।
महामत पूछे ब्रह्मसृष्ट को, ए बैकुंठ जासी के धाम ॥१४॥

।।प्रकरण।।१०५।।चौपाई।।१५४७।।

राग श्री

ए सुच[3] कैसे होवहीं, तुम देखो याकी विध ।
अनेक आचार कर कर थके, पर हुआ न कोई सुध ।।१।।

निस दिन ग्रहिए प्रेम सो, जुगल सरूप के चरन ।
निरमल होना याही सों, और धाम बरनन ।।२।।

इन विध नरक जो छोड़िए, और उपाय कोई नाहें ।
भजन बिना सब नरक है, पच पच मरिए मांहें ।।३।।

धनी बिना अंग निरमल चाहे, सो देखो चित ल्याए ।
क्यों निरमल अंग होवहीं, जो इन विध रच्यो बनाए ।।४।।

१. दिल मिलाना, मिल जुलकर । २. फिसाद । ३. पवित्र ।

दोऊ मैले जब मिले, बांध गोली मांस रचाए ।
नरक उदर दस मास लों, पूरो कियो पचाए ।।५।।
जठरा अगिन तले करी, ऊपर ऊंधे मुख लटकाए ।
बोल न सके ठौर सकड़ी, काढयो मुरदे ज्यों छुटकाए ।।६।।
हाड़ मांस लोहू रगां, ऊपर चाम मढ़ाए ।
नव द्वार रचे नरक के, निस दिन बहे बलाए ।।७।।
ऊपर बंध बालन के, जलस गुदा अंतर छाल ।
चले नदी मल मूत्र की, कहूं केतो नरक को हाल ।।८।।
पंचामृत पाक बनाए, भोजन भयो रूचाए ।
अंग संग ले निकस्यो, कौन हाल भयो ताए ।।९।।
अंत आहार सूकर[1] कूकर[2] को, या कौआ कीरा खाए ।
या तो अगिन जलाए के, करके खाक उड़ाए ॥१०॥
ए नरक निरमल क्यों होवहीं, जो ऊपर से अंग धोए ।
अंग धोए मन निरमल, कबहूं न हुआ कोए ॥११॥
धिक धिक नीची चातुरी, विचार न अंतस्करन ।
त्रैलोकी इन अंग संग, गई खोए अखंड वतन ॥१२॥
ए सुच[3] क्योंए न होवहीं, जो सौ बेर अन्हाए ।
ए तो पिंड नरकै भर्यो, देखो अन्तर नजर फिराए ॥१३॥
विवेक विचार न पाइए, ऊपर टेढ़ी पाग लटकाए ।
आप देखे मांहें आरसी, सिर आसमान लों ले जाए ॥१४॥
नहीं भरोसो खिन को, बरस मास और दिन ।
ए तो दम पर बांधिया, तो भी भूल जात भजन ॥१५॥
आतम धनी पेहेचानिए, निरमल एही उपाए ।
महामत कहे समझ धनी के, ग्रहिए सो प्रेमें पाए ॥१६॥

।।प्रकरण।।१०६।।चौपाई।।१५६३।।

१. सूअर । २. कुत्ता । ३. पवित्र ।

राग श्री

झूठ सब्द ब्रह्मांड में, कहावत याही में सांच।
ए दोऊ झूठे होत हैं, वास्ते पिंड जो कांच ।।१।।

ए लगे दोऊ सुन्य को, निराकार सामिल।
निरंजन या निरगुन, सो भी रहे इन भिल ।।२।।

एकै साइत पैदा हुए, और फना होसी एक बेर।
ए क्यों पावें अद्वैत को, जो ढूंढे मांहें अन्धेर ।।३।।

ए न्यारे को क्यों पावहीं, पैदास सारी इन।
सत सब्द ब्रह्मांड में आया, पर ए ना छोड़े कोई सुंन ।।४।।

जीव विष्णु महाविष्णु लों, याके कई विध नाम धरत।
अग्यान ग्यान ले विग्यान, यों कई विध खेल खेलत ।।५।।

एक अनेक सब इनमें, इत सांच झूठ विस्तार।
अछर ब्रह्म क्यों पावहीं, भई आड़ी निराकार ।।६।।

अछर अछरातीत कहावहीं, सो भी कहियत इत सब्द।
सब्दातीत क्यों पावहीं, ए जो दुनियां हद ।।७।।

पांच तत्व गुन तीनों ही, ए गोलक चौदे भवन।
निरगुन सुन्य या निरंजन, ज्यों पैदा त्योंही पतन ।।८।।

ए सुपना नींद सुरत का, खेले अछर आतम।
हम भी आए देखने, खसम के हुकम ।।९।।

ब्रह्मसृष्ट के कारने, खेल जो रचिया ए।
खेल देखाए सत वतन, महामत आए ले ॥१०॥

।।प्रकरण।।१०७।।चौपाई।।१५७३।।

राग श्री

फुरमान मेरे मेहेबूब का, ले आया अर्स से रसूल ।
भेज्या अपनी अरवाहों पर, साहेब होए सनकूल[1] ।।१।।

सोई खोले अपनी इसारते, जो अर्स की अरवाहें ।
एही परीछा जाहेर, और काहूं न खोल्या जाए ।।२।।

बरकत इन रूहन की, भिस्त देसी सबन ।
ले दे हिसाब फजर को, ले चलसी रूहें वतन ।।३।।

मुझे भेज्या कासिद[2] कर, मैं ल्याया फुरमान ।
एही जानो तुम तेहेकीक, दिलसों आकीन आन ।।४।।

मैं देत हों खुसखबरी, जो रबानी[3] अरवाहें ।
वे उतरे अर्स अजीम से, जो हैं हमेसगी इफ्तदाए[4] ।।५।।

रसूल कहे मैं आखिरी, मेरे पीछे न आवे कोए ।
कह्या रूह अल्ला की आवसी, और मेंहेंदी इमाम सोए ।।६।।

रूह अल्ला दो जामे पेहेरसी, दूसरे ऊपर मुद्दार ।
सोई इमाम मेंहेंदी, याकी बुजरकी बेसुमार ।।७।।

मैं आया हों अव्वल, आखिर आवेगा खुदाए ।
काजी होए के बैठसी, करसी सबों कजाए[5] ।।८।।

साल नव सै नब्बे मास नव, हुए रसूल को जब ।
रूह अल्ला मिसल गाजियों[6], मोमिन उतरे तब ।।९।।

गिरो बनी असराईल, सो मिसल गाजियों जान ।
होए कबूल बंदगी उनसे, इन विध कहे फुरमान ॥१०॥

एक निमाज की हजार, एही करसी कबूल ।
कई कही महंमद आखिर सिफत, सो भी इन बीच होसी रसूल ॥११॥

१. प्रसन्न । २. संदेशा लानेवाला । ३. ब्रह्म की । ४. मूल से । ५. न्याय । ६. धर्म योद्धा (ब्रह्म सृष्ट)

एही गिरो रबानी, रूहें बीच दरगाह ।
कई हजारों सिफतें इन की, मांहें बुजरक रूहअल्लाह ॥१२॥

जाहेर महंमद पुकारहीं, फुरमान ल्याया मैं ।
कई हजारों बातें करी, साहेब की सूरत सें ॥१३॥

कई रद बदलें करी साहेब सों, अपनी उमत के वास्ते ।
या विध कलाम कई लिखें, सो पढ़े न मानें ए ॥१४॥

यों लिख्या है कई विध, पर समझे ना बेसहूर ।
दुनी पढ़ पढ़ अपनी अकलें, कई करें मजकूर ॥१५॥

बिना आकीने पढ़हीं, अपनी अकलें करें बयान ।
सो सुनाए सुनाए दुनी को, कई किए बेईमान ॥१६॥

एक अचरज ए देख्या बड़ा, कहे बेचून बेचगून ।
कुरान देखें पढ़ें यों कहें, बेसबी बेनिमून ॥१७॥

फुरमान जाहेर सूरत देखावहीं, सो माएने न ले दिल अंध ।
पढ़ें अपनी अकलें, पाड़ी दुनियां दोजख फंद ॥१८॥

सिपारे सयकूल में, यों लिख्या जाहेर कर ।
देखाऊं माएने मुसाफ, चीन्हो दिल की खोल नजर ॥१९॥

ए जानें हरम[1] के मेहेरम[2], जिनों तेहेकीक करी सूरत ।
मुख ना फेरें सूरत सों, सोई बंदगी हकीकत ॥२०॥

एक खूबी चाहें साहेब की, और न कछुए चाहें ।
उनकी एही बंदगी, जो सांचे आरिफ[3] अरवाहें ॥२१॥

जिनों अर्थ लिया अंदर का, माएने पेहेचाने तिन ।
खासों की एही बंदगी, जाने दिल रूह वतन ॥२२॥

आसिक अर्स अजीम की, चाहे मिलना हमेसगी ।
चाहे साहेब और उमत, उनकी एही बंदगी ॥२३॥

१. अन्तः पुर (मूल मिलावा) । २. रहस्य का जानकार । ३. ज्ञानी ।

एही रूहों की बंदगी, जो कही खास उमत ।
एही अहेल[1] किताब हैं, लिख्या दूसरे सिपारे जित ॥२४॥

और देखो दुनी की बंदगी, ए भी सयकूल में लिखे ।
सो भी देखाऊं बेवरा, जो कर बैठे किबले[2] ॥२५॥

पातसाहों एही जानिया, मोती जवेर सिर ताज ।
इनका एही किबला, चाहें ज्यादा अपना राज ॥२६॥

सोना रूपा दुनी का, अरथ[3] चाहें भरे भंडार ।
इनका एही किबला, कई विध करें विस्तार ॥२७॥

जिनकी बद-खसलतें[4], अपना भला मन ल्याए ।
इनका एही किबला, औरों का भला न चाहें ॥२८॥

जो जाहेर परस्त[5] हैं, चाहें मिट्टी पानी पत्थर ।
इनका एही किबला, जिनकी बाहेर पड़ी नजर ॥२९॥

मिट्टी पत्थर बनाए के, कहें खुदाए का घर ।
मेहेराव को किबला किया, करें निमाज तिन पर ॥३०॥

जो यार हैं अपने तन के, भला खावें सोवें पलंग ।
तिनका एही किबला, और न चाहें रंग ॥३१॥

आगूं अपनी दानाई[6] के, और न काहूं देखत ।
इनका एही किबला, अपनी तरफ खैंचत ॥३२॥

जिन जैसा किबला सेविया[7], आगूं आया तैसा तिन ।
दुनी कारन खोवे दीन को, तो आखिर कही जलन ॥३३॥

इन विध फुरमान फुरमावहीं, जाहेर देत बताए ।
अन्दर बैठा जो दुस्मन, सो देत माएने उलटाए ॥३४॥

आरिफ कहावें आपको, होए बुजरक मांहें दीन ।
कह्या हादी का रद करें, यों खोवत हैं आकीन ॥३५॥

१. वारिस । २. पूज्य स्थान । ३. धन सम्पत्ति । ४. बुरी आदत । ५. पूजने वाला । ६. चतुराई । ७. स्वीकार करना (सेवन करना) ।

जब जाहेर माएने लीजिए, तब खड़े होत हैं घर ।
अन्दर माएने सब उड़त हैं, सो पढ़े लेवें क्योंकर ॥३६॥

पढ़े सो भी पेट कारने, और पालने कबीले ।
दुनियां को देखावहीं, आगूं चल के ए ॥३७॥

जब लीजे अन्दर के माएने, तब ना कछू साहेब बिन ।
साहेब बिना सब दोजख, चौदे तबक अगिन ॥३८॥

दीन इसलाम से जात हैं, कारन सुख सुपन ।
बुजरक आगे होए के, राह मारें औरन ॥३९॥

कही गरीबी बुजरक, पढ़ कर सो ना ले ।
कई बंध फंद कर मारहीं, लई मुल्लां गरीबी ए ॥४०॥

कोई सीधा सब्द जो केहेवहीं, तो तोरा[1] देखावें ताए ।
जो गरीब सामें बोलहीं, तो तिनको सूली चढ़ाए ॥४१॥

कहे मुखथें हम मोमिन, और हमहीं पढ़े सरे-दीन[2] ।
हमहीं अहेल किताब हैं, हमहीं में आकीन ॥४२॥

यों हम हम करते कई गए, अजूं योंहीं जाए रात दिन ।
यों करते आखिर आए गई, बांधी तोबा लगी अगिन ॥४३॥

किया टोना लड़की महंमद पर, दई गांठ अग्यारे तिन ।
सो हर सदी गांठें खुलीं, तब महंमद ले चले मोमिन ॥४४॥

ए आयत देख्या चाहे, ताए देखाऊं बेसक ।
इनमें जो सक ल्यावहीं, सो जलसी आग दोजक ॥४५॥

जब तमाम सदी अग्यारहीं, ए महंमद उमत आकीन ।
जबराईल मुसाफ ले आए, और बरकत दुनियां दीन ॥४६॥

ए तीनों उठाए दुनी से, जबराईल ले आया अपने मकान ।
खड़ा किया झंडा दीन का, ल्याए लाखों खलक ईमान ॥४७॥

१. हकूमत, डर । २. शरीयत धर्म के नियम ।

वसीयत नामे साहेदी, आए लिखे बड़ी दरगाह ।
सो मिलाए दिए कुरान से, महामत हुकम खुदाए ॥४८॥

॥प्रकरण॥१०८॥चौपाई॥१६२१॥

राग श्री

मासूक मेरे रूह चाहे सिफत करूं, सो मैं जाए ना कही ।
जब देख्या बेवरा कर, तब तामें उरझ रही ॥१॥

सब थें बड़ी मुझे करी, ऐसी और न दूजी कोए ।
जो मेहेर करी मुझ ऊपर, सो सिफत जुबां क्यों होए ॥२॥

किन विध मैं तुमको कहूं, क्यों कर दिल धरूं ।
ले एहेसान तुमारे दिल में, मैं गुजरान[1] क्यों करूं ॥३॥

मैं चलते देखे मजहब, और सबके परमेश्वर ।
सो सारे बीच फना मिने, नूर बका न काहू नजर ॥४॥

फना छोड़ इन परमेश्वरों, नूर बका न पाया किन ।
तिन पर नूर बिलंद, सो किया तुम मेरा वतन ॥५॥

खेल किया मेरे कारने, दुनियां चौदे तबक ।
मेरे हाथ तिनकी हैयाती[2], भिस्त पाई मुतलक[3] ॥६॥

खेल कर मोहे बैठाई मांहें, मुझ पर भेज्या फुरमान ।
मांहें लिखी हकीकत मारफत, मुझ बिना न काहूं पेहेचान ॥७॥

कुंजी दई मुझ को, और मेरै सिर खिताब ।
सास्त्र चौदे तबक के, सब मैं ही खोलों किताब ॥८॥

राह देखाऊं सबन को, ऐसो बल दियो खसम ।
सब को फना से बचाए के, लगाए तुमारे कदम ॥९॥

खेल बनाया मेरे वास्ते, मोहे भेज के आए आप ।
पट खोल इलम समझाइया, मोसों नीके कियो मिलाप ॥१०॥

१. निर्वाह । २. कायमी । ३. बेसक ।

बका न चौदे तबक में, न पाया त्रैलोकी त्रैगुन ।
सेहेरग से नजीक देखाइया, ऐसा इत इलमें किया रोसन ॥११॥

ऐसा बेसक चौदे तबक में, कोई न हुआ कबूं कित ।
इन नुकते सब बेसक हुए, ऐसी बेसकी आई इत ॥१२॥

ए भी बड़ाई मुझ को दई, जो सबों देख्या नूर पार ।
सबों सेहेरग से नजीक, कुंजिएँ देखाया निरधार ॥१३॥

ए दिल की बातें कासों कहूं, रूह की जानो सब ।
बोलन की कछू ना रही, जो कहो सो करूं मैं अब ॥१४॥

मोहे करी सबों ऊपर, ऐसी ना करी दूजी कोए ।
अजूं रूह मांग्या चाहे, ए तुम कैसी बनाई सोए ॥१५॥

बैठाई आप जैसी कर, सो खोल देखाई नजर ।
अजूं मांगत मेरे धनी, और ऐसे तुम कादर[१] ॥१६॥

जो तुम बड़े करे खेल में, ताकी दुनी करे सिफत ।
सो बड़े गिरो के पांउं की, खाक भी न पावत ॥१७॥

तिन गिरो में सिरदारी, तें मुझे दई मेरे खसम ।
ऐसी बड़ी करी मोहे खेल में, अब इत उरझ रह्या मेरा दम ॥१८॥

दुनी सिफत पोहोंचे मलकूत लो, सो फरिस्ते खाक भी पावत नाहें ।
तिन गिरो में बुजरक, मोहे ऐसी करी खेल माहें ॥१९॥

मैं भटकी बीच दुनी के, घर घर मांगी भीख ।
लौकिक[२] दई मोहे साहेबी, अंतर में अपनी सरीख ॥२०॥

नर नारी बूढ़ा बालक, जिन इलम लिया मेरा बूझ ।
तिन साहेब कर पूजिया, अर्स का एही गुझ ॥२१॥

जब हकें मोहे इलम दिया, तब मोसों कही निसबत ।
सो निसबत बका हक की, ताकी होए ना इत सिफत ॥२२॥

१. समर्थ । २. लोकदृष्टि ।

जिन बंदगी मेरी करी, लिया निसबत हिस्सा तिन ।
पांउं खाक मांगी बुजरकों, ए सोई फकीर मोमिन ॥२३॥

ए बुध ना चौदे तबक में, सो अपनी दई अकल ।
समझी सब मैं अर्स की, जो सिफत तेरी असल ॥२४॥

मैं बातून[1] तुमारी समझी, तुम अपना दिया इलम ।
अब इत केहेना कछू ना रह्या, होसी अर्स में आगूं खसम ॥२५॥

ऐसी बड़ाई केती कहूं, जो करी अलेखे अपार ।
सो नेक कही मैं गिरो समझने, समझेगी रूह सिरदार ॥२६॥

महामत कहे मेहेबूब जी, मोहे खेल देखाया बुजरक ।
करो मीठी बातें मुझसों, मेरे मीठे खसम हक ॥२७॥

॥प्रकरण॥१०९॥चौपाई॥१६४८॥

राग श्री

कारी कामरी रे, मोको प्यारी लागी तूं ।
सब सिनगार को सोभा देवै, मेरा दिल बांध्या तुझसों ॥१॥

तूं नाम निरगुन[2] कहावहीं, सब सरगुन के सिरे[3] ।
सब नंग मोती तेरे तले, कोई नाहीं तुझ परे ॥२॥

कामरी पेहेरी बृजवधू, और सुन्दरवर स्याम ।
भी पेहेरी महंमद ने, और पेहेरी इमाम ॥३॥

मोल नहीं इन कामरी को, याको ले न सके कोए ।
मोमिन कहे सो लेवहीं, जो रूह अर्स की होए ॥४॥

गोवरधन को ढांपिया, एक बूंद न हुआ दखल ।
आग लोहा पानी प्रले के, सोस लिया सब जल ॥५॥

अहीर किए धंन धंन, और आरब कुर्रेस ।
मारू[4] भी धंन धंन हुए, है सोई हमारा भेस ॥६॥

१. गुझ भेद । २. गुण रहित । ३. गुणा तीत । ४. मारवाड़ ।

रूह अल्ला पेहेरी अंदर, हुई नहीं जाहेर ।
दुनियां हिरदे अंधली, सो देखे नजर बाहेर ।।७।।

पट[१] पेहेर खाए चीकना[२], हेंम जवेर सिनगार ।
हक लज्जत आई मोमिनों, तिन दुनी करी मुरदार ।।८।।

सोहाग दिया साहेब ने, कामरी सोहागिन ।
आगूं बोले बुजरक, सराही[३] साधू जन ।।९।।

हमारे ताले[४] मिने, लिखे अल्ला कलाम ।
महामत कहे सब दुनी को, प्यारी होसी तमाम ।।१०।।

।।प्रकरण।११०।।चौपाई।।१६५८।।

राग श्री

फरेबी[५] लिए जाए, मेरी रूह तूं आँखें खोल ।
बीच बका के बैठके, तें किनसों किया कौल ।।१।।

अर्स की खिलवतमें, हककी वाहेदत[६] ।
बैठ के बातें जो करी, सो कहां गई मारफत ।।२।।

हकें कह्या रूहन को, जिन तुम जाओ भूल ।
इस्क ईमान ल्याइयो, मैं भेजोंगा रसूल ।।३।।

उतरते अरवाहों सों, कह्या अलस्तो-बे-रब-कुंम ।
मैं लिखूंगा रमूजें, सो जिन भूलो तुम ।।४।।

साहेद किए हैं सब को, जेती अर्स अरवाहें ।
आप भी हुए साहेद, अपनी आप जुबांए ।।५।।

मैं भेजी रूह अपनी, सब दिल की बातें ले ।
तुमें अजूं याद न आवही, हाए हाए कैसी फरेबी ए ।।६।।

सब बातें मेरे दिल की, और सब रूहों के दिल ।
सो सब भेजी तुम को, जो करियां आपन मिल ।।७।।

१. सुन्दर वस्त्र । २. स्वादिष्ट भोजन । ३. प्रशंसा । ४. भाग्य । ५. कपट । ६. एकता ।

फुरमान ल्याए महंमद, किन खोली न इसारत ।
तब रूहें आई न थी, तो पीछे फेर करी सरत ।।८।।

कहे महंमद मसी आवसी, ले कुंजी लाहूत से ।
एक दीन सब करसी, सब कायम होसी कुंजिएँ ।।९।।

बका ऊपर बंदगी, करावसी इमाम ।
हक गिरो हम आए के, करें कजा तमाम ॥१०॥

आगूं आए जाहेर किया, आवने को ईमान ।
खासी गिरो के वास्ते, कई कहे निसान ॥११॥

ए बातें सब अर्स की, जब याद आवे तुम ।
तब इस्क तुमें आवसी, उड़जासी तिलसम[1] ॥१२॥

कौन है तेरा मासूक, किनसों है निसबत ।
देख अपना वतन, अब तूं आई कित ॥१३॥

हकें रूहों को दई, अपनी जो न्यामत[2] ।
इन नासूतें भुलाए दई, हक की हकीकत ॥१४॥

मूल मिलावा खिलवत का, अजूं न आवे याद ।
ए झूठी जिमी जो दोजख, इत कहा लग्यो तोहे स्वाद ॥१५॥

मासूकें इत आए के, कैसा दिया इलम ।
सक तोहे कोई ना रही, अजूं याद न आवे खसम ॥१६॥

महामत कहें ए मोमिनों, ऐसी क्यों चाहिए रूहन ।
ए मेहेर देखो मेहेबूब की, अर्स जिनों वतन ॥१७॥

।।प्रकरण।।१११।।चौपाई।।१६७५।।

राग सिंधुड़ा

सरूप सुन्दर सनकूल सकोमल, रूह देख नैना खोल नूर जमाल ।
फेर फेर मेहेबूब आवत हिरदे, किया किनने तेरा कौल फैल ए हाल ।।१।।

१. माया जाल । २. बखशिश (अनमोल प्रेम उपहार) ।

जामा जड़ाव जुड़या अंग जुगतें, चार हारों करी अंबर झलकार ।
जगमगे पाग ए जोत जवेर ज्यों, मीठे मुख नैनों पर जाऊं बलिहार ।।२।।
लाल अधुर हँसत मुख हरवटी, नासिका तिलक निलवट भौंहें केस ।
श्रवन भूखन मुख दंत मीठी रसना, ए देख दरसन आवे जोस आवेस ।।३।।
बांहें चूड़ी बाजू बंध सोहे फुमक, पोहोंची कांड़ों कड़ी हस्त कमल मुंदरी ।
नख का नूर चीर चढ़या आसमान में, ज्यों हक चलवन करें सब अंगुरी ।।४।।
रोसनी पटुके करी अवकास में, चरन भूखन जामें इजार झांई ।
कहें महामती मोमिन रूह दिल को, मासूक खैंचें तोहे अर्स मांहीं ।।५।।

।।प्रकरण।।११२।।चौपाई।।१६८०।।

चतुर चौकस चेतन अति चोपसों, कूवत कर सब अंग कमर कसे ।
सुंदर सेज्या सनकूल तन रूह रची, मासूक दिल मोमिन मोहोल मांहें बसे ।।१।।
मन तन जोबन चढ़ता नौतन, आया अमरद आसिक इस्क गंज ले ।
अधुर अमृत मुख दंत रसना रस, नित नए सुंदर सब देखे चढ़ते ।।२।।
निलवट बंके नैन नासिका श्रवन, कौल फैल हाल नित नवले देखाए ।
रूह भी रंग रस चंचल चपल गत, मोहन मोही मोहनी मह हो जाए ।।३।।
भाखती[1] महामती अर्स रूहें उमती, पूरन कर प्रीत प्रेमें पोहोंचाई ।
अर्स वाहेदत खिलवत खसम की, हुज्जत निसबत लिए इत आई ।।४।।

।।प्रकरण।।११३।।चौपाई।।१६८४।।

नूर को रूप सरूप अनूप है, नूर नैना निलवट नासिका नूर ।
नूर श्रवन गाल लाल नूर झलकत, नूर मुख हरवटी नूर अधूर ।।१।।
नूर मुख चौक मांडनी अति नूर में, नूर वस्तर नूर भूखन जहूर ।
नूर जोवन रोसन नूर नौतन, नूर सब अंगो उद्दोत नूर पूर ।।२।।
नूर चरन कमल नूर हस्तक, नूर सोभा सबे नूर सिनगार ।
नूर सिर पाग नूर कलंगी दुगदुगी, नूर हिये हार नूर गंज अंबार ।।३।।

१. केहेती ।

नूर हक सहूर मजकूर नूर महामत, नूर ऊग्या बका नूर का सूर ।
सब नूर रूहें नूर हादी नूर में, नूर नूर में खैंच लई हकें हजूर ।।४।।
।।प्रकरण।।११४।।चौपाई।।१६८८।।

हुब[1] मेहेबूब की आसिक प्यास ले, चाहे साफ सराब सुराई सका[2] ।
पीवते पीवते पिउ के प्याले सों, हुई हाल में लाल पी मस्त बका ।।१।।
दिल परस सरस भयो अर्स इलाही[3], दोऊ चुभ रहे दिल सों दिल मिल ।
न्यारी ना होए प्यारी आप मारी, चल विचल ना होए वाहेदत असल ।।२।।
लगी सो लगी आतम अंदर लगी, यों अंतर आतम जगी जुदी न होए ।
सरभर भई पर आतम यों कर, यों तेहे दिली मिली छोड़ सके न कोए ।।३।।
महामत दम कदम न छूटे इन खसम के, हुआ मोहोल मासूक का मेरे दिल मांहीं ।
एक अव्वल बीच आई सो एक हुई, आखिर एक का एक मोहोल बीच और नाहीं ।।४।।
।।प्रकरण।।११५।।चौपाई।।१६९२।।

नूर नगन चेतन भूखन रचे, अंग संग देखे सब चढ़ते रोसन ।
यो खैंच खड़ी करी इलम खसम के, लई जोस फरामोस[4] से होस वतन ।।१।।
सब अंग आसिक के इस्क सों रस बसे, बढ़त बढ़त बीच आए बका ।
यों आई उमत इस्क भरी अर्स में, पीवे साफ सुराई सांई हाथ सका ।।२।।
हकें अब लिए फेर अंधेर से इन बेर, रूहें मोमिन पोहोंचियां अर्स मांहें तन ।
बृज रास जागनी तीनों सुख देय के, मोमिन तन किए धंन धंन ।।३।।
भनत महामती हक दिल मारफत की, पोहोंचाई इन न्यामतें उमत खिलवत ।
क्यों कहूं सिफत बरकत वाहेदत की, लज्जत आई इमामत कयामत ।।४।।
।।प्रकरण।।११६।।चौपाई।।१६९६।।

मिली मासूक के मोहोल में माननी, आसिक अंग न मांहें अंग ।
जानूं जामनी बीच जुदी हुती हक जात सें, पेहेचान हुई प्रात हुए पिउ संग ।।१।।
मन सुकन तन भए सब एकै, एकै जात सिफात सब बात ।
एक अंग संग रंग सब एकै, सब एक मता अर्स बका बिसात ।।२।।

१. प्रियप्रियतम (प्रेम-प्यार) । २. पिलानेवाला । ३. प्रियतम परमात्मा । ४. बेसुध ।

नाहीं जुदा कांही जांही अर्स मांहीं, मिले रूह भेले दिल एक हुए ।
तो कलूब[1] किबला[2] भया मकबूल[3] अल्लाह कह्या, अव्वल आखिर मिले एक हुए न जुए ।।३।।
हक अरस परस सरस सब एक रस, वाहेदत खिलवत निसबत न्यामत ।
महामत अलमस्त होए आवें उमत लिए, पीवत आवत हक हाथ सरबत ।।४।।

।।प्रकरण।।११७।।चौपाई।।१७००।।

राग श्री

मोमिन लिखे मोमिन को, कहो तो आवें इत ।
ए अचरज देखो मोमिनों, कैसा समया हुआ सखत ।।१।।
दम दिल तन एकै, बिछुर के भूली वतन ।
जानू के सोहोबत कबूं न हुती, तो यों कहावें सुकन ।।२।।
मोमिन रखे मोमिन सों, जो तन मन अपना माल ।
सो अरवा नहीं अर्स की, ना तिन सिर नूर जमाल ।।३।।
मता मोमिन का काफर, ले न सके क्योंए कर ।
दिल मोमिन का अर्स कह्या, दिल काफर अबलीस घर ।।४।।
जब मेला होसी मोमिनों, तब देखसी सब कोए ।
और न कोई कर सके, जो मोमिनों से होए ।।५।।
जब लग भूली वतन, तब लग नाहीं दोस ।
जब जागी हक इलमें, तब भूली सिर अफसोस ।।६।।
हकें जगाए मोमिन, अपनी जान निसबत ।
अर्स किया दिल मोमिन, बैठाए बीच खिलवत ।।७।।
जाकी तरफ न पाई किनहूं, इन मांहें चौदे तबक ।
ताको ले बैठे दिल में, किया ऐसा अपने हक ।।८।।
और दुनी के दिल पर, किया अबलीस पातसाह ।
सो गुम हुए बीच रात के, क्यों ए न पावें राह ।।९।।

१. दिल, हृदय । २. पूज्य स्थान (मन्दिर) । ३. स्वीकार करना ।

ऐसा हकें जाहेर किया, ऊपर रूहों मेहेर मुतलक ।
कई बिध बताई रसूलें, पर क्या करे हवाई खलक ॥१०॥

मोमिन सुकन सुन जागसी, जाको अर्स वतन ।
जब नूर झण्डा खड़ा हुआ, पीछे रहें न रूहें अर्स तन ॥११॥

एह किताबत पढ़ के, रूहें रेहे न सकें एक खिन ।
झूठी सों लग न रहे, जो रूह होए मोमिन ॥१२॥

सखत बखत ऐसा हुआ, ईमान छोड़्या सबन ।
तब अरवाहें करें कुरबानियां, मह[1] होवें मोमिन ॥१३॥

जीव देते न सकुचें, मोमिन राह हक पर ।
दुनियां जीव ना दे सके, अर्स रूहों बिगर ॥१४॥

अर्स तन रूह मोमिन, लोभ न झूठा ताए ।
मोमिन जुदागी न सहें, ज्यों दूध मिसरी मिल जाए ॥१५॥

लिखी फकीरी ताले मिने, अपने हादी के ।
कदम पर कदम धरें, मोमिन कहिए ए ॥१६॥

एक हक बिना कछू न रखें, दुनी करी मुरदार[2] ।
अर्स किया दिल मोमिन, पोहोंचे नूर के पार ॥१७॥

महामत कहें ए मोमिनों, ए है अपनी गत ।
झूठ वास्ते जुदे ना पडें, मोमिन अर्स वाहेदत ॥१८॥

इन महंमद के दीन में, जो ल्यावेगा ईमान ।
छत्रसाल तिन ऊपर, तन मन धन कुरबान ॥१९॥

॥प्रकरण॥११८॥चौपाई॥१७१९॥

राग श्री परज

वारी रे वारी मेरे प्यारे, वारी रे वारी ।
टूक टूक कर डारों या तन, ऊपर कुंज बिहारी ॥१॥

१. तल्लीन । २. अपवित्र, मृतक समान ।

सुन्दर सरूप स्याम स्यामा जी को, फेर फेर जाऊं बलिहारी ।
इन दोऊ सरूपों दया करी, मुझ पर नजर तुमारी ।।२।।
इन जेहेर जिमी से कोई ना निकस्या, अमल चढ़यो अति भारी ।
मुझ देखते सैयल मेरी, कैयों जीत के बाजी हारी ।।३।।
कारी कुमत कूब[1] कुचल, ऐसी कठिन कठोर हूं नारी ।
आतम मेरी निरमल करके, सेहेजें पार उतारी ।।४।।
सुन्दर सरूप सुभग[2] अति उत्तम, मुझ पर कृपा तुमारी ।
कोट बेर ललिता कुरबानी, मेरे धनी जी कायम सुखकारी ।।५।।

।।प्रकरण।।११९।।चौपाई।।१७२४।।

राग मारू

साथजी ऐसी मैं तुमारी गुन्हेगार।। टेक।।

कर कर बानी सुनाई तुम को, किए खलक खुआर[3] ।
अनेक पख देखाए तुम को, छोड़ाए के प्रवार[4] ।।१।।
कुटम कबीले मांहें अपने, बैठे हते करार ।
साख दे दे भाने सोई, दिए दुख अपार ।।२।।
अनेक अवगुन मैं किए तुमसों, जिनको नाहीं सुमार ।
घर घर के किए मैं तुमको, छुड़ाए फिराए राज द्वार ।।३।।
जुदे पहाड़ों रूलाए रलझलाए[5], दे दे सब्दों का मार ।
कर उपराजन[6] खाते अपनी, होए घर में सिरदार ।।४।।
सुख सीतल सों अपने घर में, कई भांतों करते प्यार ।
सो सारे कर दिए दुस्मन, जासों निस दिन करते विहार ।।५।।
बाल गोपाल मांहें खूबी खुसाली, करते मिल नर नार ।
सो जेहेर समान कर दिए तुमको, छुड़ाए मीठो रोजगार ।।६।।

१. कूबड़ी । २. भाग्यवान । ३. बेइज्जत, खराब । ४. गोत्र । ५. भटकाया । ६. कमाई करके ।

विध विध जीत करत माया में, सो ए देवाई सब डार ।
कई दृष्टांत दे दे काढ़े, कर न सके विचार ।।७।।
मीठी माया वल्लभ जीव की, सो छुड़ायो कुटम परिवार ।
बड़े घराने सब कोई जाने, उठावते तिनका भार ।।८।।
ऐसे सुख कहूं मैं केते, घर बड़े बड़ो विस्तार ।
सो सारे अगिन होए लागे, जब मैं कहे सब्द दोए चार ।।९।।
ले बड़ाई बैठे थे अपनी, सो छुड़ाए दिए हथियार ।
ठीक काहूं न लगने देऊं, जाको कछुक अंकूर सुध सार ।।१०।।
यों कई छल मूल कहूं मैं केते, मेरे टोने[1] ही को आकार ।
ए माया अमल उतारे महामत, ताको रंचक न रहे खुमार ।।११।।

।।प्रकरण।।१२०।।चौपाई।।१७३५।।

सिफत तो सारी सब्द में, चौदे तबक के मांहें ।
कलाम अल्ला न्यारा सबन से, सो क्यों कहूं सिफत जुबांए ।।१।।
तामें सिफत सोफी[2] महंमद की, याकी गरीब गिरो की सिफत ।
सो करसी कायम त्रैलोक को, एही खावंद आखिरत[3] ।।२।।
सो वचन लिखे हैं इसारतों, पाइए खुले हकीकत ।
उपले माएने न पाइए, जो अनेक दौड़ाओ मत ।।३।।
गोस कुतब पैगंमर, ओलिए अंबिए कई नाम ।
ताए कई बिध दई बुजरकियां, साहेब के समान ।।४।।
सो सिफत सब महंमद की, सो महंमद कह्या जो स्याम ।
अव्वल आखिर दोऊ दीन में, एही बुजरक महंमद नाम ।।५।।
याही बिध गिरोह की, नाम लिखे अनेक ।
जुदे जुदे नामों पर सिफत, पर गिरो एक की एक ।।६।।

१. जादू । २. परमात्मा के मित्र । ३. अन्तिम समय ।

तिनकी भी है तफसीर[1], सुनियो गिरो मोमिन ।
मारफत दरवाजा खोलिया, दिल दीजो नजर वतन ।।७।।

गिरो एक बुजरक कही, रूह अल्ला आए तिन पर ।
इत जादे पैगंमर दो भए, एक नसली और नजर ।।८।।

तिनसे राह जुदी हुई, गिरो दोए हुई झगर ।
एक उरझे दीन जहूद[2] के, उतरी किताबें दूजे पर ।।९।।

सो भाई न माने किताब को, रोसनाई ढांपे फेर फेर ।
तब आया दूजे पर महंमद, सब किताबें ले कर ॥१०॥

एही फिरका नाजी कह्या, दे साहेदी फुरमान ।
एक नाजी नारी बहत्तर, एही नाजी की पेहेचान ॥११॥

एही गिरो खासी कही, जिनमें महंमद पैगंमर ।
हकीकत मारफत खोल के, जाहेर करी आखिर ॥१२॥

जब खुली हकीकत मारफत, तब मजहब हुए सब एक ।
तब सबके दिल धोखा मिट्या, हुए रोसन पाए विवेक ॥१३॥

एती बातें कुरान में, बिध बिध करी रोसन ।
कई नाम धर दई बुजरकियां, सो बल महंमद और मोमिन ॥१४॥

कहे महामत मुसाफ उमत की, सिफत न आवे जुबान ।
तीनों अर्स अजीम के, ईसे किए बयान ॥१५॥

।।प्रकरण।।१२१।।चौपाई।।१७५०।।

ब्रह्मसृष्टि बीच धाम के, ए देखें खेल सुपन ।
मोहे स्यामाजीएँ यो कह्या, जो आए धाम से आपन ।।१।।

थे हम दोऊ बंदे स्यामाजीय के, एक नसली[3] और नजरी[4] ।
झगड़ दोऊ जुदे हुए, देने खबर पैगंमरी ।।२।।

१. बेवरा । २. हिन्दू । ३. बिहारीजी । ४. श्री जी (मेहेराज ठाकुर)

तब केतिक गिरो उधर भई, और केतिक मेरे साथ ।
दई जाहेर मसनंद नसलिएँ, दूजी बातून मेरे हाथ ।।३।।

उतरी किताबें हम पे, गिरो नसली न माने सोए ।
तब आया पैगंमर हममें, अब कह्या महंमद का होए ।।४।।

सो हकीकत सब कुरान में, कई ठौरों लिखी साख ।
जो ग्वाही लिखी आप साहेबें, कहूं केती हजारों लाख ।।५।।

हम दोऊ बंदे रूहअल्लाह के, दोऊ गिरो जुदी भई ।
तीसरी सृष्ट जो जाहेरी, सब मजकूर इनकी कही ।।६।।

ठौर ठौर दई बड़ाइयां, मिने सब हमारी बात ।
केती कहूं मेहेरबानगी, मेरे धनी करी साख्यात ।।७।।

महामत कहें कोई दिल दे, ए देखेगा मजकूर ।
तिन रूह पर इमाम का, बरसे वतनी नूर ।।८।।

।।प्रकरण।।१२२।।चौपाई।।१७५८।।

चरचरी छंद

स्यामाजी स्याम के संग, जुवती अति जोर जंग ।
करती पूरन रंग, परआतम परे ।।१।।

अंग अंग उछरंग, सखी सखी मन उमंग ।
अलबेली[1] अति अभंग, भामनी रस भरे ।।२।।

छटके छेल कंठ मेल, हाँस खेल रंग रेल ।
बंध बेल ठमके ठेल, कामनी केलि करे ।।३।।

कंठ हार सजे सिनगार, नैन समार सोभे मुखार ।
संग आधार करे विहार, महामती काज सरे ।।४।।

।।प्रकरण।।१२३।।चौपाई।।१७६२।।

१. मस्त ।

राग श्री कालेरो

हम चडी सखी संग रे, रूड़ा[१] राज सों राखो रंग, सखी रे हमचडी ।। टेक।।
सतगुर मारो श्री वालोजी, तेह तणें पाए लागूं ।
मूल सगाई जांणी मारा वाला, अखंड सुखडा मांगूं ।।१।।
सुक जी ना वचन सुणावी काने, ततखिण कीधो अजवास ।
आटला दिवस कोणे नव जाण्यूं, हवे प्रगट थयो प्रकास ।।२।।
आंकडियो मांहें छे विस्मी[२], झीणी[३] गूंथण जाली ।
जेनो कागल जे पर हुतो, तेणे घूंटी[४] सर्वे टाली ।।३।।
हवे जेणे ए निध प्रगट कीधी, भली ते बुध प्रकासी ।
दीसंतो आकार ज दीसे, पण वेहद पुरनों वासी ।।४।।
तारतम लई श्री राज पधारया, थयूं ते सर्वने जाण ।
सखियो कहे अमें आवी ने मलसूं, मलिया ते मूल एधाण[५] ।।५।।
सखियो सर्वे आवी जुजवी, एक बीजीने खोले[६] ।
आ लीला केम छानी रेहेसे, सखियो मली सहू टोले ।।६।।
रास रच्यो रमसूं रूडी भांते, प्रगटिया परमाण ।
ए सुख सोभा आंणी जिभ्याएँ, केम करी करूं वखाण ।।७।।
पेहेली वृन्दावन मां रामत, वली ते आंही उतपन ।
आ लीलाओने प्रगट करसे, सुकजी तणें वचन ।।८।।
वृज रास आंहीं तेहज लीला, ते वालो ते दिन ।
तेह घड़ी ने तेहज पल, वैराट थासे धंन धंन ।।९।।
अमें मांगी रामत राज कनें, ते तां पेहेली दाण[७] देखाडी ।
कांईक मनोरथ रह्यो मन मांहें, ते रंग भर आहीं रमाडी ॥१०॥
श्री श्री जी ने चरण पसाए[८], जसिया हमची गाए ।
थोडा दिनमां चौदे लोकें, आ निध प्रगट थाए ॥११॥

।।प्रकरण।।१२४।।चौपाई।।१७७३।।

१. भला । २. कठिन । ३. बारिक । ४. घुंड़ी, उलझन । ५. लक्षण । ६. ढूंढ़े । ७. बखत । ८. प्रताप ।

राग मारू

वृथा कां निगमो रे, पामी पदारथ चार ।
उत्तम मानखो खंड भरथनों, सृष्ट कुली सिरदार ॥१॥

सेठें तमने सारी सनंधे, सोंप्यूं छे धन सार ।
अनेक जवेर जतन करी, तमें लाव्या छो आणी वार ॥२॥

सत वोहोरीने[१] सत ग्रहजो, राखजो रूडी प्रकार ।
आणी भोमें रखे भूलतां, पछे सेठ तणो वेहेवार ॥३॥

अनेक वार तरफडी मरीने, दुख देखी आव्या छो पार ।
लाख चोरासी भमीने[२] आव्या, आहीं मध्य देस वेपार ॥४॥

हाट पीठ रलियामणा, चौटा चोरासी बाजार ।
मन चितवी वस्त आंही मले, पण खरा जोइए खरीदार ॥५॥

एणी बाजारे कूड कपट, छल छे भेद अपार ।
चौद भवन नी खरीद आंहीनूं, मांहें कोई कोई छे साहूकार ॥६॥

चौद लोक कमायूं खाय आहींनू[३], नथी बीजो कोई ठाम ।
अधखिण वारो[४] आंहीं पामिंए, ए धन मूल अमान[५] ॥७॥

खरी वस्त आंहीं गोप छे, जो जो चौटा पीठ हाट ।
वोहोरजो पारखूं[६] करी, आवी कुली बेठो छे पाट ॥८॥

आ भोम अंधेरी मांहें आमला[७], आंकडियों कोहेडा अनंत ।
वस्त खरी मांहें अखंड छे, तमें जो जो जवेरी बुधवंत ॥९॥

आ भोम विस्मी[८] सत माटे, वस्त आडी छे पाल ।
अनेक रखोपा[९] करी वस्तना, वीटया[१०] छे जमजाल ॥१०॥

खरो खोजी हसे जाण जवेरी, ते जोसे दृढ़ मन धीर ।
वस्त अखंड ने तेहज लेसे, जे होसे वचिखिण वीर ॥११॥

१. खरीदना । २. फिर कर । ३. यहाँ का । ४. समय । ५. अमानत । ६. परखकर । ७. भंवर । ८. कठिन । ९. रक्षा । १०. घेर लिया ।

ए धन वोहोरसे[१] ते गोप रेहेसे, तेने करसे सहुजन हाँस ।
वस्त लई ज्यारे थासे वेगला[२], त्यारे सहू कोई केहेसे स्यावास ॥१२॥

वेद वैराट बंने कोहेडा, फरे छे अवला फेर ।
प्रगट कहे मुख पाधरूं, पण तोहे न जाय अंधेर ॥१३॥

साध कोहेडो एने तोहज कहे छे, जो सवले अवलुं भासे ।
सत वस्त कोई देखे नहीं, असत ने सहु प्रकासे ॥१४॥

कोई सत वोहोरे कोई असत वोहोरे, कोई बंधाय बंध ।
वेपार एणी पेरे करे वेहेवारिया, ए चौटो एणी सनंध ॥१५॥

एणे अंधेर कोहेडे अनेक बांध्या, वस्त खरी नव जुए ।
बंध बंधावी बाजार मांहें, पछे वारो[३] वछूटे घणू रूए ॥१६॥

कोईक करे हजारगणां, केहेने ते मूलगां जाय ।
कोई बंधाई पड़े फंद मांहें, कोई कोटी धजा केहेवाय ॥१७॥

कोई वोहोरे सत वस्त ने, रास जवेर खरचाय ।
अखंड धन तेने अनंत आव्यूं, ते चौद भवन धणी थाय ॥१८॥

बीजो फेरो ए स्या[४] ने करे, थया ते सेठ सरीख ।
टली वानोतर[५] धणी थयो, ते अखंड सुख लेसे अंत्रीख ॥१९॥

कोण फेरो करे वली, अखंड धंन आवे अपार ।
साहुकारी तमे करोने नेहेचल, तो निध पामो निरधार ॥२०॥

खोटा साटे[६] साचू जड़े[७] छे, एवी मली छे बाजार ।
लाभ अलेखे आ फेरा तणो, जो राखी सको वेहेवार ॥२१॥

आ फेरो छे एणी सनंधनो, जो कोई रूदे विचारो ।
साध साहुकारो कहूं छूं पुकारी, तमें जीती अखंड कां हारो ॥२२॥

आ भोम नी गत सुणो रे साधो, प्रगट कहूं छूं प्रकासी ।
आंखें देखी आप बंधाय, पछे खाय सहु जम फांसी ॥२३॥

१. खरीदेगा । २. जुदा । ३. अनमोल समय । ४. क्यों । ५. वेपारी । ६. बदले । ७. मिले ।

वणजे[१] ते आवे सहु एकला, आणी भोमे आवी करे संग ।
रास खरीद सर्वे वीसरी, पछे लागी रहे तेसूं रंग ॥२४॥

एणे स्वांगे संसार बांध्यो, कोई कपट कारण रूप ।
बीजा तो आमला अनेक छे, पण आंकडी आ अदभूत ॥२५॥

आप तणी सुध वीसरी, कोई ओलखाय नहीं पर ।
तेमां सगा समधी थईने बेठा, कहे आ अमारो घर ॥२६॥

आपोपूं तिहां बांधीने आपे, सर्वा अंगे दृढ़ मन ।
रात दिवस सेवा करे, एम बंधाणां सहु जन ॥२७॥

चीठी आवे चाले ततखिण, जाय ते करता रूदन ।
झाझुं[२] सेवा जेहनी करता, ते दिए छे हाथ अगिन ॥२८॥

मांहें तो कोई नव ओलखे, ओलखाण ने खोरी[३] बाले ।
ए सगाई आ भोम तणी, ते सनमंध एणी पेरे पाले ॥२९॥

आणी भोमे तमने भूलव्या, सुध गई सरीर ।
पड्या ते फंद अंधेर मांहें, तेणे चितडू न आवे धीर ॥३०॥

साथी हता जे माहेला[४], तेणे दीठां[५] आप अचेत ।
जेणी जे जतन करतां, तेणे बांध्या बंध विसेक ॥३१॥

घर मंदिर सहु वीसरया[६], वीसरया सेठ समरथ ।
माल लुसानूं[७] जाय मूरखो, तमें कां निगमो ए ग्रथ[८] ॥३२॥

धन पोतानूं नव साचवो[९], लूसे[१०] छे चोर चंडाल ।
अधखिण माटे आप बंधावो, हमणां[११] वही जासे ततकाल ॥३३॥

बांध्यो संसार एणी पेरे, लागे नहीं कोई लाग ।
जाय बंधाणां सहु जमपुरी, केहेने नथी टलवानो माग[१२] ॥३४॥

लेखूं देसे जम दूत ने, जे कीधूं छे आंहीं वेपार ।
साचूं झूठूं तरत जोसे, ए धरमराज वेहेवार ॥३५॥

१. बेयार । २. अधिक । ३. बाँस से ठोककर । ४. आतम का, अंदर का । ५. देखा । ६. भूलगए । ७. लुटना । ८. धन । ९. संभालो । १०. लूट रहे है । ११. अभी । १२. रास्ता ।

वेपार करतां जे बंध बांध्या, ते लेखूं लेसे सहु तंत[1] ।
एक ना सहस्त्र गणां करतां, मारया अनेक जीव जंत ॥३६॥

लांचे[2] तो तिहां नव छूटिए, सगा न ओलखाण कोय ।
मार भूंडा छे जमदूत ना, दया ते पिंडं ने न होय ॥३७॥

धरम तणां सुख भोगवो, पाप तणां ल्यो दुख ।
अगिन चोरासी लाख भोगवी, अंते आव्या मनुख ॥३८॥

एके वोहोरया भगवान जी, ते जाय नहीं जमपुर ।
संगत कीधी तेणे साध तणी, जई बैकुंठ कीधां घर ॥३९॥

एणी पेरे वेपार थाय, हाट पीठ बाजार ।
आ भोमनी अनेक आंकड़ी, तेनो केटलो कहूं विस्तार ॥४०॥

झाझुं[3] कहे दुख सहुने लागे, सत वचन ना सेहेवाय ।
सत सहुए उथापियूं[4], असत ब्रह्मांड न समाय ॥४१॥

हवे जे हेत वांछे[5] आपणुं, ते सुणजो सत दृढ़ मन ।
वाट लेजो वैकुंठ तणी, रखे जाता पुरी जम ॥४२॥

दुखने साटे अखंड सुख आवे, अधखिण मांहें आज ।
साहुकारो साधो वेहेवारियो, एम सुणो कहे मेहेराज ॥४३॥

॥प्रकरण॥१२५॥चौपाई॥१८१६॥

किरंतन पुराने

तमें जो जो रे मारा साध संघाती, आ विश्व तणी जे वाट ।
हार कतार चाले केडा बेडी[6], भवसागर नों घाट ॥ टेक ॥१॥

स्वाथी[7] मारग चाले संजमपुरी, भार भरी रे अलेखे ।
कुटम परिवार लादा सहु लादे, आगली अजाडी कोई न देखे ॥२॥

दुस्तर दोख[8] न विचारे मद माता, लडसडती चाल चाले ।
उनमद[9] थका अभिमान करे, अने कंठ बांहोंडीयो घाले ॥३॥

१. आखिर तक । २. रिश्वत । ३. अधिक । ४. उठा दिया । ५. चाहे । ६. लगातार । ७. सीधा । ८. दोष । ९. पागलपन ।

उत्तम आगल वाट देखाड़े, मधम अधम सहु वासे ।
भार करम नूं लेखूं रे अलेखे, मनमां विचारी कोई नव त्रासे ॥४॥

बलिया बीक[१] न आणे केहेनी, सांभले न कांई देखे ।
साचा ए सूर धीर कहिए, जे ए दोख[२] ने न लेखे ॥५॥

कायर केम चाले एणी वाटे, जेने लागे ते जम नो त्रास ।
रात दिवस रूए कलकले, सूकाय ते लोही मांस ॥६॥

वैकुंठनी पण विस्मी[३] वाट, ते जेम तेम सेहेवाय ।
संजमपुरी ना दुख घणूं दोहेला, ते जिभ्याएँ न केहेवाय ॥७॥

आ सुपन तणां सुख सहु को वांछे, ओल्या साख्यात दुख कोई न जांणे ।
संजमपुरी नी वाट छे वस्ती, ते माटे सहु कोई ताणे ॥८॥

उज्जड मारग वैकुंठ केरो, ते माटे कोई न चाले ।
बेहेतल[४] नहीं माहें चोर मले, दूथा[५] मां पग कोई न घाले ॥९॥

वस्ती बिना लिए चोर लूसी[६], आडा दोख घणां रे दुकाल[७] ।
लोही मांस न रहे अंग माहीं, आडी खाइयो पर्वत पाल ॥१०॥

ते माटे सहु चाले संजमपुरी, ऊवट कोंणे न अगमाय ।
संजमपुरी ना दोख जाग्या पछी, श्रवणांएँ न संभलाय ॥११॥

वैकुंठ वाट ना दुख जो सहिए, तो आगल सुख अखंड ।
वेद पुराण भागवत कहे छे, भाई जिहां लगे छे ब्रह्मांड ॥१२॥

पण बंध छूटा विना न चलाय, भाई ए छे करम नी काणी[८] ।
मन माहें जाणें अमें सुख भोगवसुं, पण जाय बंधाणां जमपुरी ताणी ॥१३॥

करम तणां बंध छे रे वज्र में, वेद पुराण एम बोले ।
दया नहीं जीव हिंसा करे, ते करम चंडाल नहीं तोले ॥१४॥

वली जो जो रे तमें सास्त्र संभारी, एणी पेरे बोले वाणी ।
कुंजर कथुआ मेरू माणस माहीं, सर्वे एकज प्राणी ॥१५॥

१. डर । २. दोष । ३. कठिन । ४. वस्ती । ५. उबड़खाबड़ । ६. लूट ले । ७. अकाल का स्थान । ८. फूटे कर्म ।

अंन उदक[१] वाए कीट पतंगमां, सकल कहे छे ब्रह्म ।
देखीतां आंधला थाय, पछे बांधे अनेक पेरे करम ॥१६॥

पांच मलीने काया परठी[२], ते माहें जीव समाणो ।
थावर जंगम सकल व्यापक, एणी पेरे पथराणो[३] ॥१७॥

हवे वरण वेख[४] थया जुजवा, एक उत्तम मधम ।
वस्त खरी थी विमुख थया, पछे चलवे ते अधमा अधम ॥१८॥

हूं रे गेहेलो एवा वचन तोज कहूं छूं, पण न थाय बीजा कोई गेहेला[५] ।
विस्मी वाटे चाली न सके, तेने लागसे वचन घणां दोहेला[६] ॥१९॥

एक जीवने आहार देवरावे, तेमां अनेक जीव संघारे ।
एणी पेरे दान करे रे दयासों, ए धरम ते कां नव तारे ॥२०॥

अनेक संघवी संघज[७] काढे, धन खरचे थाय मोटा ।
बांधी करम करावे जात्रा, जाणे करम सुं करसे ए खोटा ॥२१॥

मन मांहें जाणे अमें धरम भोगवसुं, प्रगट पाप न देखे ।
सुभ असुभ बंने भोगववा, ए धरम राज सर्वे लेखे ॥२२॥

तीरथ ते जे एक चित कीजे, करम न बांधिए कोय ।
अहनिस प्रीते प्रेमसूं रमिए, तीरथ एणी पेरे होय ॥२३॥

दान करे सहु देखा देखी, बांधे ते करम अनेक ।
मन तणी आंकडी न लाधे, तेणें बंधाय बंध विसेक ॥२४॥

जीव संघारता मन न विमासे, जाग करे नामनाय[८] ।
करम बंधातां कोई नव देखे, पण लेखूं लेसे जम राय ॥२५॥

अनेक देरा[९] परबो[१०] ने परवा[११], धन खरचे मोटाई ।
प्रसिद्ध प्रगट थाय पाखंडें, जेम मांहें भांड भवाई[१२] ॥२६॥

दान दया सेवा सर्वा अंगे, कीजे ते सर्वे गोप ।
पात्र ओलखीने कीजे अरचा[१३], सास्त्र अर्थ जोइए जोप[१४] ॥२७॥

१. पानी । २. रची । ३. फैला हुआ । ४. स्वांग । ५. दिवाना । ६. कठिन । ७. संघ, दल । ८. किर्ती, यश । ९. मन्दिर । १०. प्याऊ । ११. धर्मशाला । १२. नौटंकी, सांग । १३. पूजा । १४. भली भांत ।

आगे प्रगट कीधूं रे जनके, दाधो[१] पग अगिन ।
त्यारे घणी खंडनी कीधी नव जोगी, रखे वृथां जाय साधन ॥२८॥

सत व्रत धारणसों पालिए, जिहां लगे ऊभी देह ।
अनेक विघन पड़े जो माथे, तोहे न मूकिए सनेह ॥२९॥

भागवत वचन जो जो रे विचारी, सार अखर[२] जे सत ।
जीवने जगावो वचन प्रकासी, रदे उघाडो मत ॥३०॥

ए माथे लेसे तेने कहूं छूं, बीजा मां करजो दुख ।
तमें तमारी माया मांहें, सेहेजे भोगवजो सुख ॥३१॥

कोई एम मां केहेजो जे निंदया करे छे, वचने कहूं छूं देखाडी ।
साध पुरूख नी निद्रा भाजे, आंखडी देऊं रे उघाडी ॥३२॥

वचन केहेतां कोई दुख मां करसो, सांभलजो सहु कोय ।
सत केहेतां कोई वांकू विचारसे, तो सरज्यूं[३] हसे ते होय ॥३३॥

विप्र[४] तणों वेपार भाजे छे, भाई भागवत हाट न चाले ।
तोज फरी फरी ने मूलगां, सब वचन जई झाले ॥३४॥

विप्र कुलीमां थया रे जोरावर, सत वचन उबेखे[५] ।
पाखंडे खाय सर्वे पृथ्वी, लोभ विना नव देखे ॥३५॥

ए रे लोभ घणों दोहेलो लागसे, पण लाग्या स्वादे चित न आवे ।
नीला बंध बांधता सुख उपजे छे, पण सूकया पछी रोवरावे ॥३६॥

उनमद उत्तम असार जाग्या रे मांहें थी, साध आपने कहावे ।
कुकरम मांहें कहिए जे कुकरम, बंध वज्र में बंधावे ॥३७॥

दोष विप्रों ने कोई मां देजो, ए कलजुग ना एधांण[६] ।
आगम भाख्यूं मले छे सर्वे, वैराट वाणी रे प्रमाण ॥३८॥

असुर थकी सम[७] खाधा भभीखणें, आगल श्री रघुनाथ ।
तमसूं कपट करूं तो कुली मांहें, ब्राह्मण थांउं आप ॥३९॥

१. जल गया । २. सब्द । ३. होनहार । ४. पंडित । ५. उलटा । ६. चिन्ह, निशान । ७. कसम ।

त्यारे वार्‌यो[१] श्री रघुपति राय, एवा कठण सम[२] कां खाधा ।
तमे छो अमारा हूं नेहेचे जाणूं, मन मां म धरजो बाधा[३] ॥४०॥

ए वचन आगम छे प्रगट, ते तां सहु कोई जाणे ।
उत्तम करे असुराई ते माटे, ए कुली व्यापक एधाणे ॥४१॥

श्रोता[४] जाय सांभलवा ने चाल्या, जाणें आंधला नो संग ।
बाहेरनी[५] फूटी कांने[६] बेहेरा, रदे तणां जे अंध ॥४२॥

भटजी कथा करवानें बेसे, केणे आंसू पात न आवे ।
भांड तणी पेरे वचन वांका[७] कही, श्रोताने[८] हँसावे ॥४३॥

हँसी रमी कतोल करीने, श्रोता किवता[९] उठे ।
मनमां जाणें अमे ग्यान कथूं छूं, पण बंध मांहेंना नव छूटे ॥४४॥

दुष्टे दुष्ट मले मद माता, ए कलजुगना रंग ।
सत पंडित कहावे साध मंडली, ए करमोंना बंध ॥४५॥

तेम तेम कामस[१०] चढती जाय, जेम जेम जराबल[११] आवे ।
एम करतां जम किंकर[१२] आवे, पछे जीत्यूं रतन हरावे ॥४६॥

चरचा कथा तेहेने कहिए, जे आप रूए रोवरावे ।
दिन दिन त्रास वधतो जाय, ते बंध रदेना छोडावे ॥४७॥

वस्त थई अगोचर माहीं, जीव चाले आणे आचार ।
एणी चाले जो फल लाधे, तो पामसे सहु संसार ॥४८॥

साध रह्या पंथ जोई जोई, पण केणे न लाध्यो सेर ।
अनेक उपाय करी करी थाक्या, पण न टले ते भोमनों फेर ॥४९॥

ए अमल तणो फेर जिंहा नव जाय, तिंहा फरे छे विकलना[१३] जेम ।
ए अटकलें वन वन जई वलगे, ते फल पांमे केम ॥५०॥

बिरिख तणी ओलखांण न उपजे, जे ए फलनूं छे आ वन ।
केम फल लाधे सोध विना, जेनूं विकल थयूं छे मन ॥५१॥

१. रोका । २. कसम । ३. संशय । ४. श्रोता (सुननेवाला) । ५. बाहरी आंख । ६. बहरे कान । ७. लुभाने वाले । ८. श्रोताओ को । ९. वक्ता । १०. मैल । ११. बुढ़ापा । १२. जमदूत । १३. व्याकुल ।

उनमाने फल जोवा जाय, सामां वीटे[१] करमना जाल ।
मनमां जाणें हूं बंध छोडूं छूं, पण बंधाई पड़े तत्काल ॥५२॥

जई ने जुए फल जुआ थईने, अनेक कीधी उनमान ।
एक मांहेंथी चोरासी बुधे बोल्या, पण पांम्या नहीं पराधान[२] ॥५३॥

इहां अनेक बुधे बल कीधां, अने अनेक फराया मन ।
फल थयूं अगाध अगोचर, साथ रह्या जोई जोई अनू दिन ॥५४॥

वली जे साध पुरूख कोई कहावे, ते कामस टालवा जाय ।
सो[३] मन साबू घसी पछाडे, निरमल तोहे नव थाय ॥५५॥

सो रे वरसनी जटा बंधांणी, ते केम छोडी जाए ।
अंतकाल सुरझावा बेठा, लेई कांकसी[४] हाथ मांहें ॥५६॥

ए करमना बंध जोरावर, छूटे नहीं केणी पर ।
बलिया बल करी करी थाक्या, निगमिया[५] अवसर ॥५७॥

बंध छोडे जई आकार ना, मोटी मत धणी जे कहावे ।
पण बंध बंधाणां जे अरूपी[६], ते तां दृष्टें केहेनी न आवे ॥५८॥

गुरगम[७] टाली बंध न छूटे, जो कीजे अनेक उपाय ।
जेणी भोमें रे आप बंधाणां, ते भोम न ओलखी जाय ॥५९॥

आप न ओलखे बंध न सूझे, करम तणी जे जाली ।
खोलतां खोलतां[८] जे गुरगम पांम्यो, तो ते नाखे बंध बाली[९] ॥६०॥

केम ओधरिया[१०] आगे जीव, जेणे हता करमना जाल ।
गुरगम ज्यारे जेहेने आवी, ते छूट्या तत्काल ॥६१॥

आणे वचने खरे बपोरे, बोध तमारे पास ।
भरथ खंड मांहें जनम मानखे, कां न करो प्रकास ॥६२॥

आ जोगवाई सघली सनंधे, कां न करो वस्त हाथ ।
आ वेला वली वली नहीं आवे, जीती कां जाओ रे निरास ॥६३॥

१. घेरे । २. परम तत्व । ३. सौ । ४. कंघी । ५. गँवाया । ६. अदृष्ट । ७. गुरु कृपा । ८. खोजते खोजते । ९. जलादे । १०. उद्धार, मुक्त ।

तमें जैन महेश्वरी सहुए सुणजो, आदे धरम छे एक ।
रिखभ देव चाल्या पछी मारग, वेहेचाणां[1] विवेक ॥६४॥

मुझवण विध करो छो धर्मनी, माहों मांहें अगाध ।
वस्त खोल्या विना विमुख थाओ छो, लई जाय गुण कहावो साध ॥६५॥

जीव चंडाल कठण एवो कोरडू, कां रे करो छो हत्यारो ।
वृथा जनम करो कां साधो, आवो रे आकार कां मारो ॥६६॥

लाख चोरासी हत्या बेससे, एवो आ जनम तमारो ।
बीजी हत्यानों पार नथी, जो ते तमें नहीं संभारो ॥६७॥

आगल तिमर घोर अंधारूं, बूडसे जीव जल मांहें ।
लेहेरा मारे अवला पछाडे, मछ गलागल तांहें ॥६८॥

बुध विना जीव बेसुध थासे, माथे पडसे मार ।
बांधेल बंध तांणसे बलिया, विसमसे[2] नहीं खिण वार ॥६९॥

ए दुस्तरनों क्यांहें छेह नहीं आवे, कलकलसो करसो पुकार ।
त्रास पांमीने जीव कां न जगवो, आ विसमूं[3] घणु संसार ॥७०॥

दिस एके नहीं सूझे सागर मांहें, भवसागर जम जाल ।
अनेक वार तडफडसो मरसो, तोहे नहीं मूके काल ॥७१॥

त्यारे तेवा मांहें सूं सोध[4] थासे, आज आव्यो अवसर ।
साध पुरूख तमें जोजो संभारी, बीजी नथी छूटवा पर ॥७२॥

गुरगम[5] टाली ए गांठ न छूटे, केमे न थाय रे नरम ।
मांहेंली कामस केमें न जाय, जो कीजे अनेक श्रम[6] ॥७३॥

बाहेर थकी गांठ एक छोडिए, तिहां बीजी बंधाय अपार ।
ए विसमा बंध नों नथी रे उपाय, बीजो आणें संसार ॥७४॥

आ आकार मांहें जीव बंधाणों, ते पण नव ओलखाय ।
तो पारब्रह्म जे पार थयो, ते केणी पेरे खोलाय[7] ॥७५॥

१. बांटा गया । २. शान्ती । ३. कठिन । ४. खोज । ५. गुरुकृपा । ६. महेनत । ७. खोजा जाय ।

जीव थयो मांहें निराकार, ते केणी पेरे बांध्यो बंध ।
रूप रंग वाए तेज नहीं, तमें साधो जुओ रे सनंध ॥७६॥

जीव बंधाणों अगनाने, ते अगनान निद्रा जोर ।
जेहेर चढ्यूं घेंन भोम तणुं, ते पड्यो तिमर मांहें घोर ॥७७॥

आणे आकारे जो नव छूटो, तो छूटसो केही पर ।
साधो साध नी संगत करजो, खिण खिण जाय अवसर ॥७८॥

साध संगते आ जेहेर उतरसे, रूदे ते करसे प्रकास ।
घेंन निद्रा सर्व उडीने जासे, अंधकार नों नास ॥७९॥

त्यारे जीव जई आप ओलखसे, ओलखसे आ ठाम ।
घर पोताना दृष्टे आवसे, त्यारे पामसे विश्राम ॥८०॥

ज्यारे जीवनी मोरछा भागी, त्यारे उडी गयूं अगनान ।
करम नी कामस केम रहे, ज्यारे भलयो श्री भगवान ॥८१॥

भ्रांत भरम सर्वे भाजी[1] जासे, उडी जासे आसंक ।
अगम अगोचर सहु सोध थासे, रमसे मांहें वसंत ॥८२॥

दोष मा दीजे रे वैराट वाणी ने, मुखथी बोले सहु सत ।
बोल्या ऊपर चाली न सके, त्यारे फरी जाय छे मत ॥८३॥

मोटो अवतार श्री परसराम जी, तेना हजी लगे बंध न छूटे ।
कष्ट करे छे आज दिन लगे, पण तोहे ते ताणां न त्रूटे ॥८४॥

अनेक देह दमे पंच अगनी, तोहे न बले करम ।
अनाद काल ना जे बंध बांध्या, ते थाय नहीं जीव नरम ॥८५॥

प्रगट बेठा बंध छोडवा, ते आपण माटे थाय ।
अवतार ते पण करमें बंधाणां, रखे कोई देखी बंधाय ॥८६॥

आ ब्रह्मांड विखे कोई एम मा केहेसो, जे अमने सूं करे बंध ।
ब्रह्मांड धणी पोते आप बंधावी, देखाडे छे सनंध ॥८७॥

१. मिटे ।

तेज आकास वाए जल पृथ्वी, रवि ससि चौदे भवन ।
ए फरे सर्व करम ना बांध्या, तो बीजी तो एहेनी उतपन ॥८८॥

प्रगट वैराट थयो जे दाडे[१], एणा बंध पेहेला ना बंधाणां ।
बाल्या बले नहीं ते माटे, सहुए ते जाय तणाणां ॥८९॥

मानखो जनम पांम्यो बंध छोड़वा, वली रे वसेखे भरथ खंड ।
कुली मांहें उत्तम आकार पामी, सामा[२] बांधे छे अधका बंध ॥९०॥

मांहें अंधारू मांहें अजवालूं, रूदे ते कोई न संभारे ।
पर वस बांध्यो करम करे, अवतार अमोलक हारे ॥९१॥

कोई वेद विचार न करे, भाई सहु को स्वादे लाग्युं ।
अनल[३] एणी पेरे चाले ते माटे, साचूं ते सर्वे भाग्युं ॥९२॥

साचूं बोल्यूं गमे[४] नहीं केहने, सहुने ते लागसे दुख ।
वेद तणां वचन विचारो, जे कहे छे पोते मुख ॥९३॥

वेद कहे मारा मूल आकासें, साखा छे पाताल ।
तोहे न समझे मूढ़मती[५], अने फरी फरी पडे मांहें जाल ॥९४॥

वेद तणुं तां बिरिख नथी, भाई ए छे प्रगट वाणी ।
अवली के सबली विचारो, ए आंकड़ी न कलाणी[६] ॥९५॥

सत वाणी छे वेद तणी, जो ते कोई जुए विचारी ।
ए कोहेडो रचियो रामतनो, सघला ते मांहें अंधारी ॥९६॥

कोई दोष मां देजो रे वेदने, ए तो बोले छे सत ।
विश्व पडी भोम अगनान मांहें, ए भोम फेरवे छे मत ॥९७॥

अर्थ जुए सहू उपली वाटनो, मांहेंलो ते मांहें नव संभारे ।
वैराट पूर वहे वेहेवटे[७], दुख सुख कोई न विचारे ॥९८॥

वेद विचार करी करी वलया, पारब्रह्म नव लाध्या ।
वली वलिया उलटा त्यारे पाछा, बंध विश्वना बांध्या ॥९९॥

१. दिन । २. सामने । ३. अगिन । ४. भावे । ५. मूर्ख । ६. पेहेचानी । ७. जोरदार बहाव ।

आ तां व्यासजी नो कह्यूं कहूं छूं, तमे मानजो साधो संत ।
न मानो ते जई सुकजी ने पूछो, आ बेठा छे मांहें भागवत ॥१००॥

वेद पुराण भारथ सहू बांध्या, त्यारे दाझ रूदे मा समाणी ।
ततखिण आव्या गुर जी पासे, बोल्या नारदजी वाणी ॥१०१॥

घणी खंडनी कीधी व्यासजी नी, पूरी वचनोने श्रवणा न दीधी ।
वाणी सर्वे नाखी उडाडी, अवतारनी लाज न कीधी ॥१०२॥

सवला रोस भराणां रिखीजी, जोई व्यास वचन ।
सास्त्र सर्वे बांधीने, ते वोल्या बूडता जन ॥१०३॥

वैराट धणी ज्यारे नव लाध्यो, त्यारे कां ना रह्यो तूं गोप ।
विश्व विगोई[१] स्या माटे, तें उलटा वचन कही फोक ॥१०४॥

विसमां वचन देखी व्यासजीना, पूरी ते दृष्ट चढावी ।
श्री कृष्ण जी विना बीजूं सर्वे मिथ्या, एम कह्यूं समझावी ॥१०५॥

वचन तणों अहंमेव व्यासजीनों, नाख्यो[२] ते सर्व उडाडी ।
दया करीने खंडनी कीधी, दीधी आंख उघाडी[३] ॥१०६॥

तेणे समें कह्यूं नारदजीएँ, न वले जिभ्या मारी एम ।
कठण वचन कह्या व्यासजीने, में केम केहेवाय तेम ॥१०७॥

आटलूं पण हूं तोज[४] कहूं छूं, रखे केणे अजाण्यूं जाय ।
आ दुनियां भेला साध तणाय, त्यारे सूं करूं में न रेहेवाय ॥१०८॥

हाकली गुरगम दीधी नारदजीएं, ते लई व्यास घर आव्या ।
सार वचन लई ग्रन्थ सघलाना[५], रदे ते मांहें समाव्या ॥१०९॥

सार तणो विचार करीने, बांध्या द्वादस स्कंध ।
त्यारे ठरयो रदे एणे वचने, मन पाम्यो आनंद ॥११०॥

उदर सुकजी उपना[६], अने आंहीं उपनूं भागवत ।
व्यासे वचन कही प्रीछव्या[७], ग्रही परसव्या[८] संत ॥१११॥

१. डूबाई । २. तोड़ दिया । ३. खोल दी । ४. तब । ५. सब । ६. पैदा हुए । ७. समझाया । ८. परोसना ।

सारनूं सार थयूं भागवत, वचन थया विवेक ।
वली अमृत सीच्यूं सुकदेवे, तेणे थयूं रे विसेक ॥११२॥

सकल सार नूं सार निपनूं[१], सहु को ते मुखथी भाखे ।
पण वचन भारी विचार न थाय, त्यारे विप्र वाणी पेहेला नी दाखे[२] ॥११३॥

सुकजी केरा वचन समझी, जो कोई रदे विचारो ।
सात दिवस मांहें परीछित वैकुंठ, वचनें पार उतारयो ॥११४॥

तेज वचन वांचता सांभलता, जाय जम वारो बांध्यो ।
अर्थ तणी ओलखाण न आवे, प्रेम वचन नव लाध्यो ॥११५॥

अहनिस अर्थ करे समझावे, केहनो रंग न पलटो थाय ।
बेहेराने कालो[३] संभलावे, बांध्या ते माटे जाय ॥११६॥

आंकडी कोई न जुए रे उकेली[४], वचन तणां जे विवेक ।
गुरगम टाली खबर न पड़े, ए अर्थ भारे छे विसेक ॥११७॥

ए रे अर्थ मांहें छे अजवालूं, जे कोई जोसे रे विचारी ।
रूदया मांहें थासे प्रकास, ज्यारे जागसे जीव संभारी ॥११८॥

जीव जाग्यो त्यारे नथी वस्त वेगली[५], आतम परआतम जोड़ ।
त्यारे वांसो दईने विश्वने, सनमुख रेहेसे कर जोड़ ॥११९॥

विध सघली समझी वैराटनी, माया करसे सत ।
स्वामी सेवक थासे संजोग, त्यारे उडी जासे असत ॥१२०॥

थासे संजोग त्यारे बंध छूटा, करम नहीं लवलेस ।
निहकर्म तणां निसान ज वागा[६], अखंड सुख पांमसे वसेक ॥१२१॥

बीजा केहेने दोष न दीजे रे भाई जी, ए माया विकराल[७] ।
करोलिया[८] जेम गूंथी गूंथे, मुझाई मरे मांहें जाल ॥१२२॥

जे जीव होय जल तणों, ते न रहे विना जल ।
अनेक विध ना सुख देखाडो, पण मूके नहीं पाणी-वल ॥१२३॥

१. उपज्या । २. दिखलावे । ३. गूंगा । ४. सुलझा कर । ५. दूर, अलग । ६. बजेगा । ७. भीषण ।
८. मकड़ी ।

तेम जीव होय सागर तणो, ते मूके नहीं भवसागर ।
अखंड सुख जो अनेक देखाडो, पण मूके नहीं पोते घर ॥१२४॥

खरो हसे जे खरी भोम तणों, आ वचन विचारसे जेह ।
अगिन झाला देखीने छाडसे, अखंड सुख लेसे तेह ॥१२५॥

मन करम ने ठेलसे, जेथी प्रगट थाय सर्वा अंग ।
साथी बोध संघाती बोले, जीव मन एकै रंग ॥१२६॥

हवे गोप वचन केहेवासे गुरगम, ते केम प्रगट होय ।
विष्णु-संग्राम[1] करीने लेसे, साध हसे जे कोय ॥१२७॥

आतां अनुमाने बाण नाख्या उडाडी, बीजा भारी उडाडया न जाय ।
सनमुख मले नहीं जिहां सूरो, ते हथू का विना न चोडाय ॥१२८॥

साध ओलखासे वचने, अने करसे समागम ।
साध वाणी साध एम ओचरे, संगत छे साध रतन ॥१२९॥

॥प्रकरण॥१२६॥चौपाई॥१९४५॥

पर न आवे तोले एकने, मुख श्री कृष्ण कहंत ।
प्रसिद्ध प्रगट पाधरी, किवता किव करंत ॥१॥

कोट करो नरमेध, अश्वमेध अनंत ।
अनेक धरम धरा विखे, तीरथ वास वसंत[2] ॥२॥

सिद्ध करो साधन, विप्र मुख वेद वदंत ।
सकल क्रियासूं धरम पालतां, दया करो जीव जंत ॥३॥

व्रत करो विध विधना, सती थाओ सीलवंत ।
वेख धरो साध संतना, गनानी[3] गनान कथंत ॥४॥

तपसी बहु बिध देह दमो, सर्वा अंग दुख सहंत ।
पर तोले न आवे एकने, मुख श्री कृष्ण कहंत ॥५॥

१. धर्मयुद्ध । २. रहना । ३. ज्ञानी ।

मेहेराज कहे मुख ए धंन, जो वली रूदे रमंत ।
चौदे भवन ते जीतियो, धंन धंन ए कुलवंत ।।६।।

।।प्रकरण।।१२७।।चौपाई।।१९५१।।

हांरे मारा साध कुलीना सांभलो

माया कोहेडो अंधेर केहेवाय, मांहें साध बंधाणां जाय ।
तमने हजी लगे सोध[१] न थाय, काल ताकी ऊभो माथे खाय ।।१।।

साध वाणी तमें सांभली रे, कां न विचारो मन ।
आणे अजवाले मानखे, तमें कां रे भूलो साधू जन ।।२।।

खिण मांहें अर्थज लीजे रे, जे वचन कह्या वेद व्यासे ।
दीपक वा मा खमे[२] नहीं, हमणां[३] धवक[४] अंधारूं थासे ।।३।।

कथता सांभलता ए गिनान रे, जम वारो आवसे रे ।
अध वचे सर्व मुकावी[५], तरत बांधीने जासे रे ।।४।।

सांचु कहे दुख लागसे, सांचु ते केहेने न सुहाय ।
प्रगट कहिए मोंहों ऊपर, त्यारे दोहेला[६] ते सहुने थाय ।।५।।

अवलूं देखी हूं न सकूं, त्यारे सूं करूं में न रेहेवाय ।
वेख धरी लजवो साधने, एम ते माटे केहेवाय ।।६।।

दुष्ट थई अवगुण करे, ते जई जमपुरी रोय ।
पण साध थई कुकरम करे, तेणूं ठाम न देखूं कोय ।।७।।

क्रोध अहंमेव समें[७] नहीं, अने वेख धरो छो साध ।
लोभ लज्या नमे नहीं, माहें मोटी ते ए ब्राध ।।८।।

उत्तम कहावो आपने, अने नाम धरावो साध ।
साध मल्यो नव ओलखो, मांहें अवगुण ए अगाध[८] ।।९।।

न करो संगत साधनी, मन न धरो विश्वास ।
संजमपुरी ना दुख सांभलो, पण तोहे ना उपजे त्रास[९] ।।१०।।

१. खबर । २. ठहरे, रुके । ३. अभी । ४. तुरन्त । ५. छुड़ा कर । ६. कठिन । ७. सहन करना । ८. बेशुमार । ९. भय ।

छेतरवां हींडो[१] जगदीस ने, ते छेतरया केम करो जाय ।
पास[२] बीजा ने मांडिए, जई आपोपूं बंधाय ॥११॥

अस्नान करी छापा तिलक देओ, कंठ आरोपो तुलसी माल ।
गिनानी कहावो साध मंडली, पण चालो छो केही चाल ॥१२॥

वेख उत्तम तमें धरो, पण माहेलो ते मैल नव धुओ ।
पंथ करो छो केही भोमनों, रिदे आंख उघाडी जुओ ॥१३॥

मन मैला धुओ नहीं, अने उजला करो आकार ।
आकार तिहां चाले नहीं, चाले निरमल निराकार ॥१४॥

वैकुण्ठ ऊंचूं सिखर पर, ऊवट चढतां उचांण ।
मोहजल लेहेरां मारे सामियो, इहां वाए ते वा उधांण[३] ॥१५॥

चढवूं ऊंचूं चीरक थई, वाटे दुख दिए घणां दुष्ट ।
परवाह उतरता सोहेलूं, पण दोहेलूं ते चढतां पुष्ट ॥१६॥

सोहेलूं देखी कां उतरो रे, आगल दोख अनेक ।
चढतां घणुंए दोहेलूं[४], पण वैकुण्ठ सुख वसेक ॥१७॥

सपन तणां सुख कारणें, केम खोइए अखण्ड सुख ।
सुख सुपने देखी करी, केम लीजे साख्यात दुख ॥१८॥

चीरक[५] थई तमें ना सको रे, मायामां थया मोटा ।
वाणी विचारी नव जुओ, पछे सास्त्र करो कां खोटा ॥१९॥

दुखडा खमी तमे ना सको, माया सुखे रह्या माणो रे ।
चढाए नहीं एणी उवटे[६], पाछां चढताने कां ताणो रे ॥२०॥

ताण्यूं तमारूं सुं करे, जेने लाग्यो छे चोलनो[७] रंग ।
साध कहावी असाध थाओ छो, करो छो भजनमां भंग ॥२१॥

पगला पोताना[८] जुओ नहीं, अने बीजाने देओ छो दोस ।
सास्त्र अर्थ समझ्या नथी, तां जातो नथी रिदे रोस ॥२२॥

१. चलो । २. फंदा । ३. उलटा । ४. कठिन । ५. त्यागी । ६. ऊबड़-खाबड़ । ७. पक्का लाल । ८. अपना ।

सास्त्रें मारग बे कह्या, त्रीजो न कह्यो कोय ।
एक वाट वैकुण्ठ तणी, बीजी स्वर्ग जमपुरी जोय ॥२३॥

वली एक वाट कही करी, ते ततखिण कीधी लोप ।
तिहांना हता ते चालया, पण रह्या ते मायामां गोप ॥२४॥

तमे रे जुओ पोते आप संभारी, केही रे लीधी छे वाट ।
केही रे भोमना बंध बांधो छो, उतरसो कीहे रे घाट ॥२५॥

गुण पचवीसे बांधया रे, बांधया ते नवे अंग ।
इंद्री पखे गुणे बांधया, कांई दृढ करी माया संग ॥२६॥

बंध प्रभुसों न बांधया रे, त्यारे केणी पेरे आवे तेह ।
रदे विचारी जोइए जो, बांध्यो छे केसुं नेह ॥२७॥

जेरे गामनी वाटज लीजे, आवे तेहज गाम ।
जाणी ने जमपुरी जाओ छो, त्यारे न आवे अखंड विसराम ॥२८॥

सूथी[१] वाट जाणी संजमपुरी, कां सहुए उजाणां जाओ ।
वेद पुराण तमें सांभली, एम रूदे फूटा कां थाओ ॥२९॥

देखा देखी पंथ करो छो, रदे नथी विचार ।
सास्त्र वाणी जो सत करो, तो भूलो केम आवार ॥३०॥

ढोलतां[२] ढोलाने सोहेलूं[३], पण आगल ऊंडी खाड ।
लोही मांस सर्वे सूकसे, पछे घरट[४] दलासे[५] हाड ॥३१॥

केस त्वचा जासे चरमाई, नसों त्रूटसे[६] निरवाण ।
विध विधना दुख देखसो, पण तोहे नहीं छोडे प्राण ॥३२॥

जमपुरीना दुख दारूण[७], तेसूं नथी तमें माण्या ।
पुराण ते माटे कहे पुकारी, केणे जाय रखे अजाण्या ॥३३॥

कुंड अठावीस कह्या सुकदेवे, एक बीजा थी चढता जाय ।
त्यारे पडयो परीछित दुख सुणी, स्वामी बीजा तो न संभलाय ॥३४॥

१. सीधा । २. गिराना । ३. सरल । ४. चक्की । ५. पीसे जाना । ६. टूट जाना । ७. दुखदाई ।

छप्पन रह्या विन सांभल्या, तेतां सुणी न सक्यो राय ।
कलकली कंपमान थया, ते तां कह्या न सुण्या जाय ॥३५॥

दैव ते दोस लिए नहीं, ते माटे कीधा पुराण ।
देखी पडो कां खाडमां[१], आ तां सहुने करे छे जाण ॥३६॥

स्वादे लाग्या सुख भोगवो, पण पछे थासे पछताप ।
व्यास वचन जोता नथी, पछे घससो घणूं बंने हाथ ॥३७॥

भट जी चोखूं तमने केम कहे, जेणे माड्युं ए ऊपर हाट ।
सूथी[२] देखाडे संजमपुरी, तमे अपगरो[३] एणी वाट ॥३८॥

बुध तमारी किहां गई, पछे आवसे ते कीहे काम ।
वचन जुओ सुकदेवना, तेमां प्रगट पराधाण[४] ॥३९॥

अर्थ लई सास्त्र तणो, तमे ओलखजो आ ठाम ।
बीहो[५] छो छाया थकी, जुओ करे छे कोण संग्राम ॥४०॥

कोण तमसूं जुध करे, बीजो ऊभो सामो कीहो चोर ।
आप बंधाणां आप सूं, माहेली गमा[६] तिमर घोर ॥४१॥

संसार सूतो घारण[७] करी, ते तां केणी पेरे जागे रे ।
पण साध कहावो निद्रा करो, मूने दुख ते तेनुं लागे रे ॥४२॥

निद्रा परी नाखी देओ, उठीने ऊभा थाओ रे ।
बीजी ते वात मूकी करी, तमे ग्रहो प्रभूना पाओ रे ॥४३॥

पतिव्रता पणे सेविए, न थाय वेस्या जेम ।
एक मेलीने अनेक कीजे, तेणी थाय धणीवट[८] केम ॥४४॥

गेहेन[९] घारण तमे परहरो[१०], टालो ते तिमर घोर ।
उठीने अजवाले जुओ, त्यारे देखसो माहेला चोर ॥४५॥

ज्यारे अर्थ लेसो वाणी तणो, त्यारे अर्थमा छे अजवास ।
अजवाले जीव जागसे, त्यारे थासे टली चोर दास ॥४६॥

१. गड्ढा । २. सीधा चलना । ३. ग्रहण करना । ४. परमतत्व । ५. डरो । ६. तरफ । ७. नींद । ८. धनीपना । ९. गहरी । १०. त्यागना ।

वैरी टली वोलावा थासे, जो ए करसो जतन ।
एणी पेरे ए पामसो, अमोलक[1] ए रतन ॥४७॥

जनम मानखो खंड भरथनो, सृष्ट कुली सिरदार ।
ए वृथा कां निगमो, तमे पामी उत्तम आकार ॥४८॥

चार पदारथ पामिया रे, ए थी लीजिए धन अखंड ।
अवसर आ केम भूलिए, जे थी धणी थाय ब्रह्मांड ॥४९॥

चौद भवन जेने इछे, कोई विरला ने प्राप्त होय ।
ए पांमी केम खोइए, तूं तां रतन अमोलक जोय ॥५०॥

रतन ते आने केम कहिए, पण आ भोम उपमा एह रे ।
कई कोट रतन जो मेलिए, आणे तोले न आवे तेह रे ॥५१॥

हवे सुधर सो संगत थकी, जो मलसे एहवो साध ।
सास्त्र अर्थ समझावसे, त्यारे टलसे सघली[2] ब्राध[3] ॥५२॥

संगत करसो साधनी, ए रूदे करसे प्रकास ।
त्यारे ते सर्वे सूझसे, थासे अंधकारनो नास ॥५३॥

ज्यारे अंध अगनान उडी गयुं, त्यारे प्रगट थया पारब्रह्म ।
रंग लाग्यो ए रस तनो, ते छूटे वलतो केम ॥५४॥

वस्त खरीनो जे रंग लाग्यो, ते थाय नहीं केमे भंग ।
भलयो जे भगवानसों, तेनो दीसे एकज रंग ॥५५॥

सुख अखंड एणी पेरे, तमें लेजो संगत साध ।
अधखिण विलम न कीजिए, आ आकार खोटो साज ॥५६॥

खोटा थी खरो लीजिए, अवसर एवो आज ।
आ वेला अमृत घडी, प्रबोध[4] कहे मेहेराज ॥५७॥

साध जो जो तमें सांभलो, वचन म करजो लोप ।
प्रगट कह्यूं आ पाधरूं, बीजी गुरगम थासे गोप ॥५८॥

१. अमूल्य । २. सब । ३. रोग । ४. यथार्थ ज्ञान ।

बीजा वचन भारी केम कहिए, ते तां अर्थी[१] विना न अपाय ।
केसरी दूध कनक[२] ना रे, पात्र विना न समाय ॥५९॥
मारा साध कुली ना सांभलो ।

॥प्रकरण॥१२८॥चौपाई॥२०१०॥

हांरे मारा साध कुली ना जो जो ॥ टेक॥

कोहेडा अंधेर मोह मांहें, मलवो छे साधो संत ।
जेने रदे मा वस्या वालो जी, मारा जनम संघाती ते मित्र ॥१॥

आ कोहेडा मां साध सुं करे, जेणे बांध्यो चरण सुं चित ।
रात दिवस रमे[३] रिदे मां, तेने सुं करे प्रपंच ॥२॥

गोप रेहेसे साध एणे समें, ते प्रगट केणी पेरे थाय ।
वेख वधारया बहु विध तणां, ते खोल्या[४] केम करी जाय ॥३॥

सरखा सरखी सर्वे पृथ्वी, मांहें विध विध ना वहे नारायण ।
नहीं आकार फरे साध तणो, प्रगट नहीं एधाण[५] ॥४॥

आ भोम अंधेर मांहें आमला, जीव वेध्यो[६] सघली ब्राध ।
जेने ते जई ने पूछिए, ते मुख थी कहे अमें साध ॥५॥

खोजो खरा थई ते माटे[७], आ रचियो मायानो फंद ।
दुनी मुझाणी फेरा दिए, मांहें पडया रदे ना अंध ॥६॥

आप न ओलखे दुनियां पोते[८], सूझे नहीं भोम गत ।
ए फेर भोम अंधेर तणो, तेणे रदे न आवे मत ॥७॥

देखा देखी पंथ करे, अने चालता सहु कोई जाय ।
जाणी साधन करे संजमपुरी ना, मनमां चिंता न थाय ॥८॥

सूने रिदे[९] दीसे सहु कोई, सुध बुध नहीं विचार ।
देखी कही रे दोख जमदूत ना, ए कोहेडा तणां अंधार ॥९॥

१. ग्राहक । २. सोना । ३. खेले । ४. खोजना । ५. निशान । ६. विंध जाना, ग्रस्त होना । ७. वास्ते । ८. अपने । ९. हृदय ।

कोई कोने पूछे नहीं, छे कोई बीजो सेर[1] ।
साध पुकारे पाधरा, पण आ अजाणो अंधेर ॥१०॥

कोट उपाय करे जो कोई, तो सूझे नहीं सनंध ।
कोहेडा तणी आंकडी न लाधे[2], तो छूटे नहीं बंध ॥११॥

एणे समें आप झलावी, अने साध थया मांहें सन्त ।
संगत कीजे तेह तणी, जेणे चोकस कीधुं छे चित ॥१२॥

सत जोऊं सन्तो तणो, अने साध तणी सिधाई[3] ।
बाहेर चेन करे कई साधना, मांहें ते भांड भवाई ॥१३॥

चोकस चित केणी पेरे लाधे, बाहेर देखाडे अनंत ।
ते माटे आ कोहेडो अंधेर, मारे जाई ने संगत संत ॥१४॥

साध सनंध केम जाणिए, जेणे जीती छे जोगवाई ।
प्रगट चेहेन करे नहीं पाधरा, ते मांहें रहे समाई ॥१५॥

मुख थी बोलावी ज्यारे जोइए, तो गलित चित विश्वास ।
फेर नहीं अंधेर तणो, तेना रदे मांहें प्रकास ॥१६॥

साध तणी गत दीसे निरमल, रात दिवस ए रंग ।
मोहजल लेहेरां मांहें मारे पछाडे, पण केमे न थाय भंग ॥१७॥

साध तणी सनंध प्रगट, लेहेरा लागे आकार ।
भेदे नहीं ते भीतर रंग ने, ए साध तणी प्रकार ॥१८॥

आ तिमर घोर अंधेर मांहें, वेख धरे बहु जन ।
एणे सहु ने सत भास्यो, ए साध ने थयो सुपन ॥१९॥

तो वैकुंठ नथी कांई वेगलूं[4], जो दृढाविए मन ।
सत चरण भास्यो रदे मांहें, त्यारे असत थयुं सुपन ॥२०॥

अखंड सुख कोई रखे मूकतां, जेणे दृढ कीधुं छे घर ।
अधखिण ना सुपनातर माटे, रखे निगमता[5] ए अवसर ॥२१॥

१. रास्ता । २. पावे । ३. सिद्धियां । ४. दूर । ५. गमावे ।

सास्त्रे संसार कह्यूं सुपना, तो ते करी बेठा सहु सत ।
साध वाणी रे जोता नथी, तो लई जाय छे असत ॥२२॥
एणे कोहेडे ते अवला फेरा, सहु फरे छे एणी भांत ।
सुध बुध सर्वे विसरी, ए रच्यो माया दृष्टांत ॥२३॥
आ रे वेला एवी नहीं आवे, साध ना सके पुकारी ।
वचन ते अवला विचारसे, केहेसे निंदया करे छे अमारी ॥२४॥
साध हसे ते विचारसे, सवला रूदे वचन ।
ए वाणी प्रकासूं ते माटे, म्हारे मलवा[1] ते साधू जन ॥२५॥
प्रगट प्रकास न कीजे, आपण देखी बाज ।
गोप रही न सकुं ते माटे, सनमंधी मलवा साध ॥२६॥
जेणे दरसने नेत्र ठरे, अने वचन कहे ठरे अंग ।
अनेक विघन जो उपजे, पण मूकिए[2] नहीं साध संग ॥२७॥
साध संतो मली सांभलो, वली विलम न करो लगार ।
अधखिण मेलो संत तणो, जेथी जीतिए अखंड अपार ॥२८॥
अखंड पार सुख अति घणूं, जेने सब्द न लागे कोय ।
ए जाणी सुख केम मूकिए, ए साध संगते सुख होय ॥२९॥
ए सुख केम प्रकासूं प्रगट, वेहद सुख केहेवाए ।
ए ब्रह्मांड सर्वे रामत, उपनी[3] छे एनी इछाय ॥३०॥
ए रे वल्लभसूं वालपणे, कर दिए साध संग ।
ए रे संगत केम मूकिए, मारा मूल तणो सनमंध ॥३१॥
सारनों सार ते संगत, जो ते साध मेलो थाय ।
वेहद तणी निध लईने आपे, मूकिए ते केम पाय ॥३२॥
सनमंधी ज्यारे साचो मल्यो, त्यारे जीवने थयो करार ।
मेहेराज कहे धंन धंन ए घडी, धंन धंन कोहेडो अंधार ॥३३॥

॥प्रकरण॥१२९॥चौपाई॥२०४३॥

१. मिलना । २. छोडना । ३. उत्पन्न ।

राग धना श्री

धोरीडा[१] मा मूके तारी धूसरी

वाटडी[२] विस्मी[३] गाडी भार भरी, धोरीडा मा मूके तारी धूसरी[४] ।।टेक।।

धोरीडा आरे मारे रे, हांरे तूंने गोधे[५] घणे रे ।
तूं तां नाके नथाणों रे, तूं तां बंध बंधाणो गुण आपणे रे ।।१।।

धोरीडा अवाचक थयो रे, मुख थी न बोलाय रे ।
कल ने वेलूं[६] रे धोरी, उवट ऊंचाणे स्वास मा खाय रे ।।२।।

धोरीडा घणूं दोहेलूं छे रे, कीधां भोगवे रे ।
तारे कांधे चांदी[७] रे, दुखड़ा सहे रे ।।३।।

धोरीडा जाय रे उजाणी, द्रोडा द्रोड तूं आवे ।
दया रे विना रे, बेठा मारडी पडावे ।।४।।

धोरीडा वही[८] ने छूटे रे, करम आपणां रे ।
मेहेराज कहे एम, कीधा छे घणा रे ।।५।।

।।प्रकरण।।१३०।।चौपाई।।२०४८।।

राग श्री बेराडी

आवो अवसर केम भूलिए, कारण एक कोलिया अंन ।
एटला माटे आप मुझाई, केटला करो छो कई कोट विघन ।।१।।

प्रगट वचन सुणो उत्तम मानखो, तमें वोहोरवा आव्या छो सुख ।
पण आंणी भोमे मुझवण घणूं विसमी, सुखने आडे अनेक छे दुख ।।२।।

सुखने रखोपे[९] दुख वीट्या[१०] छे, लेवाए नहीं केणे काचे जन ।
सूरधीर हसे खरो खोजी, ते लेसे दृढ़ करी मन ।।३।।

एकी गमां सुख वैकुंठ गरजे, बीजीए दुख गरजे जमपुर ।
ए बंने मांहें थी एक लई वलसो[११], रखे भूलता तमे आ अवसर ।।४।।

१. बैल । २. रास्ता । ३. कठिन । ४. जुआ । ५. चुभाए । ६. रेती । ७. घाव । ८. पहुँचकर । ९. रक्षा करना । १०. घेरे हुए । ११. लौटना ।

चौद लोक इछे आ वेला, जोगवाई तमे पाम्या[१] छो जेह ।
अहनिस कष्ट करे कई देवता, तोहे न आवे अवसर एह ।।५।।

घणूं रे दोहेली छे जम जाचना[२], तमें मूको रे परा छल छद्रम ।
वार वार वारूं छूं तमने, विस्मी रे जमपुरी विखम ।।६।।

आंणे रे आकारे कां नथी देखता, जेवडो लाभ तेवडो जोखम ।
आंणें रे समें अखंड सुख भूल्या, बलसो[३] रे लाख चोरासी अगिन ।।७।।

अखंड सुख लीधानी आ वेला, कां न करो सवला साधन ।
परमेश्वर ने परा करी रे, मा करो रे एवा करम अधम ।।८।।

मंदिर मालिया अनेक निपाओ[४], पण भरवूं एक तेहज दो भरी ।
अनेक उपाय करो कई बीजा, ए साधन सर्वे जमपुरी ।।९।।

कुटम सगा कीधा कई समधी, अने घोलीका[५] ने करी बेठा घर ।
आपोपूं तिहां बांधीने आपे, वृथा निगम्या आ अवसर ॥१०॥

ए घर जाणो छो अखंड अमारू, ऊपर ऊभो न देखो रे काल ।
तमारी दृष्टे कई रे जाय छे, तो तमें रेहेसो केटलीक ताल ॥११॥

ऊंचा वस्तर पेहेरी आकासे, अंत्रीख राखे छे आकार ।
भोम ऊपर पग भरता नथी, एणी पेरे बांध्यो ए संसार ॥१२॥

आप पछाडी ल्याओ छो धन, ऊंचा थावा रब्दे करो छो दान ।
नहीं रे आवे ते अरथ[६] जीवने, लई जाय छे वचे अभिमान ॥१३॥

असुभ करम जेम लिए निंद्या, सुभ करम नामना लई जाय ।
गोप साधन कीजे ते माटे, जेम सुख जीवने पोहोंतू थाय ॥१४॥

एके बंध एणी पेरे बांध्या, बीजा नी ते केटली कहूं रे सनंध ।
साध वाणी सांभलीने सहु कोय, देखीने बंधाणा रे अंध ॥१५॥

बंध चोवीस बीजा एनी जोडे, वली पंच इंद्रीने नव अंग ।
त्रणे पख त्रणे गुण करी रे, ए बंध बांधी दुख लीधा रे अभंग ॥१६॥

१. पाई । २. यातना, मार । ३. जलना । ४. बनवाओ । ५. छोटा सा घर (घरौंदा) । ६. सम्पति ।

एणी पेरे बंध बांध्या रे वज्र में, चसकावी[१] न सके पाय ।
होंस करे सुख वैकुंठ केरी, एणी सिखरे एम केम चढाय ॥१७॥

जे बंध बांध्या जोइए रे चरणसुं, ते बंध बांध्या लई पंपाल[२] ।
अखंड सुख आवे केम तेने, जे रे पडे जई जमनी जाल ॥१८॥

जाणीने पडिया जम जाले, आ देखो छो मायानो फंद ।
जे कारण तमे आप बंधावो, तेसुं नथी रे तमारो सनमंध ॥१९॥

उत्तम जनम एवो पामी रे मानखो, कां रे पडो पसुना जेम पास[३] ।
बीजा पसु सहुए बंधावे, पण केसरी केम बंधावे रे आप ॥२०॥

सुं रे बल केसरी नूं तम आगल, तम समान नथी बलवंत ।
छल करी छेतरे छे तमने, रखे रे लेवाओ आंणे प्रपंच ॥२१॥

आ देखीती बाजी मायानी, प्रगट पोकार करे छे साध ।
मांहें रही आप अलगा थाजो, जेमने छूटो ए बंध अगाध ॥२२॥

वली[४] वली आ वेला नहीं आवे, वली वली न सांभलो पुकार ।
बोध संघाते जागी परियाणी[५], तमे लेजो रे सघलानो सार ॥२३॥

सारना सारसूं बंध बांधजो, करजो रे नित नवलो रंग ।
नहाजो माया मांहें कोरा रेहेजो, छूटता आयस[६] जेम न आवे रे अंग ॥२४॥

दुख दावानल दुरगत मेलो, रदे मांहें चरण करो प्रकास ।
अखंड सुख एणी पेरे आवे, मेहेराज कहे जीव जाणो विश्वास ॥२५॥

भाई रे आवो अवसर केम भूलिए ।

॥प्रकरण॥१३१॥चौपाई॥२०७३॥

अंदर नाहीं निरमल, फेर फेर नहावे बाहेर ।
कर देखाई कोट बेर, तोहे ना मिलो करतार ॥१॥

कोट करो बंदगी, बाहेर हो निरमल ।
तोलों ना पिउ पाइए, जोलों ना साधे दिल ॥२॥

१. हटाना । २. माया । ३. फंदा । ४. बार बार । ५. सलाह । ६. आलस ।

अहनिस तूं भेली रहे, अपने पिउ के संग।
पीठ दे तिन पिउ को, करे ऊपर के रंग ।।३।।

जैसा बाहेर होत है, जो होए ऐसा दिल।
तो अधखिन पिउ न्यारा नहीं, मांहें रहे हिल मिल ।।४।।

तूं आपे न्यारी होत है, पिउ नहीं तुझ से दूर।
परदा तू ही करत है, अंतर न आड़े नूर ।।५।।

।।प्रकरण।।१३२।।चौपाई।।२०७८।।

किरंतन हुकाको[१] सिंधी भाखा में

विसराई[२] गिंन्यो[३] वंजे[४], सूंजी[५] संघारयो वंजे।
रिणायर रेल्यो[६] वंजे, मालम[७] कर मोहाड, छाला[८] पुजे बंदर पार ।।१।।

हुको नी तोहिजे हथ में, तूं नीचा उनूडे[९] निहार।
चुके म चमक ध्रुय जी, से तूं पाण संभार ।।२।।

हे सफर जे सई[१०] थेई, से बेडी न चढ्या बी आर[११]।
हिन जोखे में लाभ अलेखे, तूं अंखडी मंझ उघार ।।३।।

जा[१२] तूं रिणायर[१३] विच में, अंख ढंकिए की।
हिन रिणायर ज्यों रामायणूं, किन कंने[१४] न सुण्यो कडी[१५] ।।४।।

जिंनी जाणी वंजे सायरें, से कीं निद्र कन।
हिन सूंजी घणां संघारिया, तूं मालम धिरिए[१६] न मन ।।५।।

बेडी[१७] पुराणी बखर[१८] भारी, लगे वा डुबां।
सार सुखाणी[१९] गोस[२०] के, तूं उथिए न निद्र मंझां ।।६।।

वा लगी जा विचमें, सभ थेई उंधाई।
मालम डिस मोहाडियो[२१], रह्यो मुझाई ।।७।।

पिंजर[२२] मथे पिंजरी, रिणे कारी रात।
हिन पवने घणां पछाडिया, तूं तरसी करिए न तात ।।८।।

१. होका यंत्र । २. भूलना । ३. लेकर । ४. जाना । ५. नींद । ६. बहाव । ७. जीव, मल्लाह । ८. प्रभु कृपा । ९. झुक कर । १०. सफल । ११. बखत । १२. जहां तक । १३. समुद्र । १४. कानों से । १५. कदी । १६. विश्वास । १७. नाव । १८. भार । १९. नाविक । २०. बुद्धि । २१. सामने । २२. सूचक ।

हाजानी[1] करिए हेठडा, सिड[2] पुराणी पांध[3] ।
हिन आंधिए घणां उंधा विधां, तूं मालम भाए[4] म रांद[5] ।।९।।

मथां अंबर हेठ जर[6], नखत्र न डिसे कोए ।
रिणे रूप घटाइयूं, मालम सुध न पोए ॥१०॥

बडर[7] वंजे वीटियो, डिस न डिसे कांए ।
मालम मतू[8] मुझियूं, झूडे[9] मींह मथांए ॥११॥

लेहेरूं डूंगर जेडियूं, हियडे डिन धका ।
हांणे हथे नीहणण[10] नाखवा, वंजे गाल हथां ॥१२॥

बेडी बंध ढीरा थेया, त्रूटन संधो संध ।
अजां अंख न उपटिए[11], पाणीनी[12] पूरो मंझ ॥१३॥

हिलोडे नीर लेखूं कियां, अने कुओ[13] पछाडू खाए ।
पोए तूं कडे[14] उथीने पापी, पाणी फिरंदे मथांए ॥१४॥

विसराई वंजी ओतड[15] ओलवे, चुआं पुकारे सच ।
कपर[16] कंदिए कुटका, गच[17] न मिडंदे गच ॥१५॥

विसराईनी कपर ओडडी[18], तूं सूम[19] म सुखाणी ।
ही ककी[20] कंधीयजी[21], तूं पसे न पाणी ॥१६॥

करे कडाका कपरी, गजे गोकाणी[22] ।
तीखोनी ताणिए तेहडा, तूं सारिए न सुखाणी ॥१७॥

कंधी[23] पस्सी[24] म कोडजा[25], सेहेर बजारी हट ।
नेई[26] घर कां वंजे, विकण दमड़ी वट ॥१८॥

साहे[27] डींनी चाईन[28] पाणके, बोलीन मोंह मिठां ।
जीरे[29] मुआं[30] न छुटो मंझां, जे इनी डिठां[31] ॥१९॥

जे तूं सजण भाइए, से डुझण[32] संजो[33] डेह[34] ।
मिठडो गालाए मारीन, हथडा विंजन कलेजे ॥२०॥

१. रस्सी । २. बादवान । ३. कपड़ा । ४. समझो । ५. खेल । ६. जल । ७. बादल । ८. बुद्धि । ९. बरसात । १०.लंगर । ११. खोलिए । १२. मृत्यु । १३. पतवार । १४. कब । १५. ओघट । १६. किनारा । १७.तख्ता । १८. नजदीक । १९. नींद । २०.मैलाई । २१.किनारा । २२.समुद्र । २३.किनारा । २४.देखकर । २५.प्रसन्न । २६.लेकर । २७.साहूकार । २८.कहलाना । २९.जिंदा । ३०.मरने पर । ३१.देखा । ३२. दुश्मन । ३३. समझो । ३४. देश ।

हे कूडी[१] कंधी उचक सिंधी, तूं हेडा हंड[२] म न्हार ।
रात डींह जागी जफा[३] से, तूं पांहिजो पाण संभार ॥२१॥

ही तागा पाणी पसे तरे, तूं मुडदम[४] हथां छड ।
हित घणो खेडा जागी जफा से, तांही कोईक निग्यो[५] मंड ॥२२॥

पिरी पुकारे पंजसे, मिडंदा लख हजार ।
डुख मंझाए न चोंदा[६] मूंहजी, ईं कडई कोए पुकार ॥२३॥

काया बेडी समझ समर, सायर लख संसार ।
मालम जीव जगाए साथी, मेहेराज पुनों[७] पार ॥२४॥

॥प्रकरण॥१३३॥चौपाई॥२१०२॥

प्रकरण तथा चौपाइयों का संपूर्ण संकलन

प्रकरण ३४७, चौपाई ८४६२

॥ किरंतन सम्पूर्ण ॥

१. झूठ । २. ठिकाना । ३. मेहनत से । ४. यंत्र । ५. पार करना । ६. कहेगा । ७. पहुंचे ।